THE FREE INDOLOGICAL COLLECTION

WWW.SANSKRITDOCUMENTS.ORG/TFIC

FAIR USE DECLARATION

This book is sourced from another online repository and provided to you at this site under the TFIC collection. It is provided under commonly held Fair Use guidelines for individual educational or research use. We believe that the book is in the public domain and public dissemination was the intent of the original repository. We applaud and support their work wholeheartedly and only provide this version of this book at this site to make it available to even more readers. We believe that cataloging plays a big part in finding valuable books and try to facilitate that, through our TFIC group efforts. In some cases, the original sources are no longer online or are very hard to access, or marked up in or provided in Indian languages, rather than the more widely used English language. TFIC tries to address these needs too. Our intent is to aid all these repositories and digitization projects and is in no way to undercut them. For more information about our mission and our fair use guidelines, please visit our website.

Note that we provide this book and others because, to the best of our knowledge, they are in the public domain, in our jurisdiction. However, before downloading and using it, you must verify that it is legal for you, in your jurisdiction, to access and use this copy of the book. Please do not download this book in error. We may not be held responsible for any copyright or other legal violations. Placing this notice in the front of every book, serves to both alert you, and to relieve us of any responsibility.

If you are the intellectual property owner of this or any other book in our collection, please email us, if you have any objections to how we present or provide this book here, or to our providing this book at all. We shall work with you immediately.

-The TFIC Team.

ॐ नमः सिद्धेभ्यः।

अथवर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनपूजालिख्यते।

(बखतावरसिंह कृत)

मंगलाचरणम्।

दोहा—वंदूं मैं शिर नाय के, चौबीसों जिनचंद। पाप तिमिर नाशक सुरवि, पूरण परमानंद॥ १॥
पांचों पद हृदये धरूं, शारद मात मनाय। देह बुद्धि मोको अबै, रचूं पाठ सुखदाय॥ २॥

छन्द पायता।

तुम हो जग के हितकारी, तुम जैन यती व्रतधारी। तुम पूजें सुरगण सारे, गणधर गुण वरनत हारे॥३॥
तुमनंत चतुष्टय स्वामी, जानत जग अंतर्यामी। तुम शुद्ध बुद्ध दातारा, सब तत्व प्रकाशन हारा॥ ४॥
तुम प्रातहार्य वसु धारे, भवि पूजत चरण तिहारे। सिंहासन अति छवि छाजे, सुर दुंदुभि नभ में बाजे॥५
शिर छत्र तीन सुख कारे, त्रिभुवनपत सूचन हारे। जब चौसठ चमर ढुराई, गंगा मनु सेवन आई॥६॥
वपुतनी प्रभा अति सोहै, भवसात भवांतर जोहै। अशोक वृक्ष अति राजे, तिस देखत शोक जु भाजे॥७॥

सुन मागधि भाष तिहारी,सब वैर त्याग हितधारी। आत पुष्प वृष्टि सुरकीनी,यश गावैं सुरतिय झीनी।८।
चतुराननकी छवि छाजे, रवि कोटकचंद सु लाजे । तुम जानत है जग सारा,भवतारक त्रिरध संभारा ॥९॥
वसु सहस नाम के धारी, तातैं नित धोक हमारी । जो दोष अठारह नामी, तुम नाशे अंतर्यामी ॥१०॥
भव मांहिं फेर नहिं आना,तुम कीना अविचल थाना। जह लोकालोक निहारी,उत्पादक व्यय ध्रुव सारी॥११॥
इक समय माहिं तुम जाणी, संसार माहिं जे प्राणी । सबके तुम हीं रखवाला,सब जानत दीन दयाला॥१२॥
जे पढ़ैं सुधी गुणमाला, तिनको है भाग रिसाला । तातैं क्या अरज सुकीजे, निज वास भृत्य को दीजे॥१३
दोहा–चौबीसों जिनराज की,वरनी शुभगुणमाल । वखतावर सिंह जा नियै, कहते रतनालाल ॥१४॥

अथ चतुर्विंशति समुच्चय पूजा लिखते ।

अडिल-चौवीसों जिनराज नमूं सिर नायके, मघवा बंदित जाय शीस भू लाय के ।
हम पूजें मन लाय जान हित आपना, कृपासिंधु इत तिष्ठ करूं मैं थापना ॥
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि महावीर पर्यंत चतुर्विंशति जिनेंद्रा अत्रावतरतावतरत संवौषट् आह्वाननं ।
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि महावीर पर्यंत चतुर्विंशति जिनेंद्रा अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम् ।
ॐह्रींश्रीवृषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतिजिनेंद्राअत्रममसन्निहिताभवतभवतवषट् सन्नि धीकरणम्॥

अथ अष्टक-(छन्द त्रिभंगी)

जल-मुनि मन सम नीरं घन रस सीरं अमल गहीरं ले आया, भरि कंचन झारी तुम ढिग धारी तृषा निवारी मैं ध्याया । चौबीस जिनंदा आनंदकंदा हरि नित बंदा सुखकारी, भवि जन नित ध्यावें मंगल गावें तूर बजावें भव हारी ॥ ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि महावीरपर्यन्त चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाणपंचकल्याणप्राप्तेभ्योजन्ममृत्युजरारोगविनाशनायजलंनिर्वपामीतिस्वाहा

चन्दन-गोसीर घसाया,केसर लाया षट् पद आया कर सोरी, भर रतन कटोरी चरनन बोरी हरो वेदना तुम मोरी । चौवीस जिनंदा आनंदकंदा हरि नित बंदा सुखकारी, भविजन नित ध्यावें मंगल गावें तूर बजावें भवहारी ॥ ॐह्रीं श्रीवृषभादि महवीर पर्यंत चतुर्विंशति जिनेंद्रेभ्यो गर्भ जन्म तप ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्तेभ्योसंसारातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीतिस्वाहा॥२॥

अक्षत–सित अक्षत लायो चंद लजायो मुक्ता सम सो अनियारे, तिन पूज रचाये मन हरषाये चरण तुम्हारे ढिग प्यारे। चौबीस जिनंदा आनंदकंदा हरि नित वंदा सुखकारी, भविजन नितध्यावैं मंगल गावैं तूर बजावैं भवहारी॥ ॐ ह्रीं श्री वृषभादि महावीर पर्यंत चतुर्विंशति जिनेंद्रेभ्यो गर्भ जन्म तप ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्तेभ्यो ऽक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

पुष्प–मंदारसुवृक्ष आदि विटप के सुमन सुमनसम चुन लीने, मनमथ के नासी शिवपुर वासी पद तुम्हरे मैं अरचीने। चौबीस जिनंदा आनंदकंदा हरि नित वंदा सुखकारी, भविजन नित ध्यावें मंगल गावें तूर बजावें भव हारी ॥ ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि महावीर पर्यंत चतुर्विंशति जिनेंद्रेभ्यो गर्भ जन्म तप ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्तेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

नैवेद्य–अति ही कठिनाई सुधा लजाई लाडू पूवा ले पेरी, तुम क्षुधा भगाई फेर न आई मेटो मेरी भव फेरी। चौबीस जिनंदा आनंद कंदा हरि नित वंदा सुखकारी, भविजन नित ध्यावें मंगल गावें तूर बजावें भव हारी॥ ॐ ह्रीं श्री वृषभादि महावीर पर्यंत चतुर्विंशति जिनेंद्रेभ्यो गर्भ जन्म तप ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्तेभ्यःक्षुधा रोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥५॥

दीप–शुभ दीप प्रजारा घृत वर डारा कर उजियारा तम हारी, तुम ज्ञानप्रकाशी अ... रचूं थारी। चौबीस जिनंदा आनंद कंदा हरि नित वंदा... गावें तूर बजावें भवहारी ॥ ॐ ह्रीं

तपज्ञान निर्वाण पंच कल्याण प्राप्तेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६॥

धूप–दशगंध सुलायो धूप बनायो अगर वह्नि में खेवत हूं, तिस धूप उडाए अलिगण छाये कर्म नसाये सेवत हूं । चौबीस जिनंदा आनंद कंदा, हरि नित बंदा सुखकारी, भविजन नित ध्यावें मंगल गावें, तूर बजावें भवहारी। ॐ ह्रीं श्री वृषभादि महावीर पर्यन्त चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यो गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्तेभ्योऽष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वामीति स्वाहा॥ ७ ॥

फल–फल पक्क मनोहर प्रासुक लायो दाडिम आदिक भरथारी, रसना को प्यारे नयन निहारे शिवपुर दीजे सुखकारी । चौबीस जिनंदा आनंद कंदा, हरिनित बंदा सुखकारी, भविजन नित ध्यावें मंगल गावें, तूर बजावें भवहारी ॐ ह्रीं श्री वृषभादि महावीर पर्यन्त चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यो गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्तेभ्यो मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।८

अर्घ–श्रीफलादि वसुद्रव्य सवारे अर्घ सुकर में मैं लीना, संसार बिनाशी शिवपुर बासी यातें तुम पद चर चीना । चौवीस जिनंदा आनंद कंदा, हरि नितबंदा सुखकारी, भविजन नित ध्यावें मंगल गावें तूर बजावें भव हारी। ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि महावीर पर्यन्त चतुर्विंशिति जिनेन्द्रेभ्यो गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्तेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

जयमाला । दोहा ।

महाअर्घ–अलख लखावन तुम गिरा,भव भय भंजन धीर। वरनूं शुभ गुण मालिका,हरोभृत्यकी पीर ।१

छंद पद्धडी–जयनाभिनंद कुल चन्द्रनाथ, जय अजितनाथ कीजेसनाथ। जयसंभव वसुअरिखयकरंत जय अभिनंदन ऋषिगण नमंत ॥२॥ जय धीरधुरंधर सुमति देव, जय पद्मचरण हरि करत सेव। जय देव सुपास अनाथनाथ जय नमूं चंद्र प्रभु जोर हाथ ॥ ३ ॥ जय पुष्पदंत वपुसुमन खेत, जय शीतल जिन निज वास देत। जय श्रेय करन तुम श्रेय नाम, जय वासुपूज्य जीत्यो सुकाम ॥४॥ जय विमल कर्म रिपु करत चूर, जय अनंत जिनेश्वर धर्म पूर। जय धर्म धुरंधर धर्मधीश। जय शांतिनाथ शिव नगर ईश ॥५॥ जै कुंथु कुंथु रक्षक दयाल, जय अरजिनवर मित्रा सुवाल। जय हतो मोह श्रीमल्लिवीर, जय मुनि सुव्रत जिन देऊं धीर ॥६॥ जय मघवा वंदित नमि जिनंद, जय सुमति कुमोदन नेमि चंद। जय पार्श्वकमठ को मद नसान। जय वीर धीर किरपा निधान ॥७॥ जय दीनन के रछपालनाथ, जय संकट में तुम होत साथ। तुम ही सब लायल हो दयाल, बखता रतना को कर निहाल ॥ ८ ॥

छंद नंद–चौबीसों स्वामी अन्तर्य्यामी त्रिभुवननामी हितकारी। तुम हो सब लायक शिव सुखदायक पाप पलायक जग त्यारी ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं श्री वृषभादि महावीर पर्यन्त चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यो गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंच कल्याण प्राप्तेभ्यो महाऽर्घंनिर्वपामीति।

अथ आशीर्वादः–कवित्त–चौवीसों जिन चंद तनी जे पूजा करें पढें हितलाय, तिनके पुत्र मित्र बहु संपतवाढे नितप्रति सुख अधिकाय। ईत भीति कवहु न व्यापे, सुने पाठ जे चित्त लगाय, रोग शोक दारिद्रय विनाशे, अनुक्रम शिवपुर राज कराय ॥१२॥ इति श्री वर्त्तमान चतुर्विंशति जिन पूजा संपूर्णा।

१ अथ श्री ऋषभनाथजिन पूजा प्रारभ्यते।

(बख्तावर सिंह कृत) (छन्द कोसमालती)

स्थापना—सर्वारथ सुविमान त्याग कर नगर विनीता जन्मे आय।
पितानाभिराजा अति सुंदर मरु देव्या है जिनकी माय।
लक्षण वृषभ चरण में राजे, धनुष पांच सौ उन्नत काय।
हेम वरण तनु अद्भुत सोहे सो प्रभु तिष्ठ तिष्ठ इत आय।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीऋषभनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री ऋषभनाथ जिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

अथ अष्टक (छन्द गीता)

जल—हिमन गिरि पै पद्मद्रह शुभतास को जल श्वेत है। वर रतन जडित सुहे भ्झारी तासमें भरलेत है।
नृपनाभिराय जुवंश नभ में इंदु ऋषभजिनंद ही। पूजूं सु हितकर चरण अंबुज हरत,जग के फंदही।

ओं ह्रीं श्री ऋषभनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरा रोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन–शुभ श्वेत हर गो सीर लायो घस कटोरी में भरे, तिस गंधते षट् पद समूह जु आन के रव बहु करे।
नृप नाभिराय जुबंश नभमें इंदु ऋषभ जिनंदही, पूजूं सुहित कर चरण अंबुज हरत जग के फंदही।

ओं ह्रीं श्री ऋषभनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा ताप रोग विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा॥

अक्षत–इन राग द्वेषन में सतायो मलिन नित उर ही करें। याते सुशशि सम गोर अक्षत आन तुम आगे धरें।
नृप नाभिराय जुवंश नभ में इंदु ऋषभ जिनंद ही, पूजूं सुहित कर चरण अंबुज हरत जगके फंदही।

ओं ह्रीं श्रीऋषभनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥

पुष्प–बेला चमेली दौन मरुवा सुमन प्रासुक लायके, तिस सुरभते दश हूं दिशाके गुंज है अलि आय के।
नृप नाभिराय जुबंश नभ में इंदु ऋषभ जिनंदही, पूजूं सुहित कर चरण अंबुज हरत जग के फंदजी।

ओं ह्रीं श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय काम वाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥

नैवेद्य–पकवान बहु विध बने ताजे थाल में भरलायहूं, जड क्षुधारोग अनादिही को तास को जु नसाय हूं।

नृप नाभिराय जु वंश नभ में इंदु ऋषभ जिनंदही, पूजूं सुहित कर चरण अंबुज हरत जगके फंद ही ।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

दीप–दीपक प्रजारे तम निवारे थाल में अजि जग मगे, तिस देखते भय भीत ह्वै कर तम अज्ञान सबै भगे।

नृप नाभिराय जु वंश नभ में इंदु ऋषभ जिनंद ही, पूजूं सुहित कर चरण अंबुज हरत जगके फंदही ।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

धूप–दश गंध चूर सुगंध सौरभ दशोंदिश में ह्वै रही, तिस धूमतें अलिवृंद छाये नील घन शोभा लही ।

नृप नाभिराय जु वंश नभ में इंदु ऋषभ जिनंद ही, पूजूं सुहित कर चरण अंबुज हरत जगके फंदही ।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

फल–एला सुकेला आम्र दाडिम कैथ चिरभट लीजिये, भरथाल ल्याए चरन के ढिग मोक्षश्रीफल दीजिये

नृपनाभिराय जुवंश नभ में इंदु ऋषभ जिनंद ही, पूजूं सु हितकर चरण अंबुज हरत जगके फंदही।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अर्घ-शुभ वारि सौरभ श्वेत अक्षत पुष्प चरुवर पावने, वहु दीप धूप फलौघ सुंदर अर्घ करत सुहावने । नृप नाभिराय जुबंश नभमें इंदु ऋषभ ज़िनंदही। पूजूंसुहित कर चरण अंबुज हरत जगके फंद ही। ओं ह्रीं श्री ऋषभनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ पँचकल्याणक । छंद चोटक ।

गर्भ-शुभ बीज असाढ़ सुहात अली, जिन गर्भ त्रिषे तिथ आन रली । पित मात तवै, नुत इंद्र जजे, तिहुं लोक विषे सुर हुंद बजे । ओं ह्रीं श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय आषाढ कृष्ण द्वितीया गर्भ, कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जन्म-कल नवमी मास सुचैत कहा, ऋषभेश्वरने तब जन्म लहा । अमरेश जजैं गिरि मेरु तबै, हम पूजत पातक नाश अबै । ओं ह्रीं श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय चैत्र कृष्ण नवमी जन्म कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

तप-अलि चैत सुनवमी पर्वबरा, प्रयाग अरन्य सुयोग धरा । चिद रूप त्रि[illegible] तवै निजथान गये । ओं ह्रीं श्री ऋषभनाथ जिने[illegible] अर्घं निवपामीति स्वाहा ॥

ज्ञान–कलि फागुण ग्यारस ज्ञान जगा, सब जीव तनो तम सर्व भगा। दिव ध्वनी तबै घन जेम झरै, गण ईंश तबै सु प्रकाश करै। ॐ ह्रीं श्री ऋषभनाथ जिनेंद्राय फालगुण कृष्ण एकादशी ज्ञान कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

निर्वाण–बदिमाघ चतुर्दशि मोक्ष गए, अष्टा पद पै सुर थोक नए। अमरागण की तव नार नची, भवि वृंदन ने तहां पूज रची। ॐ ह्रीं श्रीऋषभनाथ जिनेन्द्राय माघ कृष्ण चतुर्दशी मोक्ष कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

अथ जयमाला।

दोहा–बपुउतंग धनु पांच सै, कनक वर्ण अभिराम। लक्षण वृषभ निहारके, तुम पद करूं प्रणाम॥१॥

छंद पद्धड़ी–तजके सर्वारथ सिद्ध थान, मरु देव्या माता कूष आन। तव देवी छप्पन जे कुमारि, ते आई अति आनंद धारि॥ २॥ ते बहु विध ऊंचा सेवठान, इंद्राणी ध्यावत हर्षमान। तुम जन्म भयो तव इंद्र आय, लख योजन ऐरावत रचाय॥ ३॥ शत बदन सहित सोहत उतंग, दंतन प्रति सरवर श्वेत रंग। तिनमें फूले बहु कंजसार, ता दल पै अप्सर नृत्य धार॥ ४॥ ते हैं सत्ताइस क्रोड जान, बहु हाव भाव युत करत गान। इत्यादि भूति युत इंद्र आय, तुम लेय अंक गिरि मेरु जाय॥५॥ तित पांडुक नामा शिल उदार, है अर्द्ध चन्द्रमा के अकार। तापर तिष्ठाये तुम महेश,

अतिन्हौंन ठाठ कीनो सुरेश ॥ ६ ॥ क्षीरो दधितें सित वार लाय, इक सहस वसु कल से भराय। युग इंद्र तबै कर सहस धार, तुम मस्तक पै ढारी उदार ॥ ७ ॥ पुन शची पूंछ श्रृंगार कीन, फिर पिता सदन लायों प्रवीन। जननी की गोद दिये जिनंद, जिन देखत हरषी कुमद चंद ॥ ८ ॥ तहां तांडव नृत्य सुरेस ठान, पित मात पूज कीनो पयान। शशि दुतिया जिम तुम वृद्धि थाय, पूरब लख बीस गए विहाय ॥९॥ पुन राज भोग कीनो उदार, पूरब लख त्रेसठ सुख अपार। नीलांजन नृत्य कियो सुआय, तह छिन तिसको गय वपु पलाय ॥ १० ॥ इह कारन लख जग तें उदास, भाई अनुप्रेक्षा पुण्यरास। लोकांतिक सुर पूजे नियोग, हरि शिबिका लाये अति मनोग ॥ ११ ॥ तापर चढके कानन प्रयाग, तुम पहुंचे सकल समाज त्याग। तहां शिला स्वच्छ पर योग ठान, पण मुष्टी लौंच कियो महान ॥१२॥ खडगासन ठाडे ध्यान धार, षट् मास प्रतिज्ञा कर उदार। फिर असन हेत कीनों विहार, राजा श्रियास दीनो अहार ॥ १३ ॥ फिर पुरमिताल के बन सु आन, उपजायो केवल ज्ञान भान। तब समवसरन रचना अशेष। धनपति ने कीनी अति सुवेश ॥ १४ ॥ ताको वरनत सुर गुरु थकाय, सो मोपै किम वरनो सुजाय। तहां सप्त तत्त्व परकाश सार, इक लाख पूर्व कीनो विहार ॥ १५ ॥ फिर अष्टापद गिरि शीस धाय, तिन चौदह योग निरोध आय। तब प्रकृति पचासी नाश कीन, इक समय मांहि शिव बासलीन ॥ १६ ॥ तुम गुण अनंत को नाहिपाय, मैं नमन करूं शिर नाय नाय। इक्ष्वाकु वंश मय गुण गरिष्ट, बखता रतना के परम इष्ट ॥१७॥

घत्ता छंद-जय ऋषभ जिनंदा आनंद कंदा, सुर गुरु बंदा जगत पती। तुमको नित ध्यावें भक्ति बढावें ते पावें शिव शर्म अती ॥१८॥ ॐ ह्रीं श्रीऋषभनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ आशीर्वादः-शिखरिणी छंद-नमेहैं जेप्राणी ऋषभजिनके युग्मचरना, करेंपूजा भारी मिटत जग कों ताह फिरना। लहै शोभा सारी सुरनर गहे आन शरना, वरे मोक्ष नारी लहत सुख सो नाहि वरना।

इत्याशीर्वादः॥ इति श्री वृषभनाथ जिन पूजा संपूर्णा ॥ १ ॥

२ अथ श्रीअजितनाथजिन पूजा प्रारभ्यते ।

(बखतावर सिंह कृत)

गीता छंद। स्थापना–शुभ वैजयंतविमान त्याग सुनगर कौशल्यापुरी,
मात जिनकी जान विजिया सेवती नित सुरसुरी ।
आयु पूरब लाख बहत्तर करी चिन्ह पिछानिये,
अजित जिनवर तिष्ठये मुझदास अपनो जानिये ॥

ओं ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक । छन्द योगीरासा ॥

जल–रत्न जडित भृंगार मनोहर प्राशुक अंबु भरायो। कर्म तनी रज नाश करन को धार देत हरषायो।
अजित जिनेश्वर कर्म हनेश्वर पूजत सुरगण सारे, पदपंकज की नषदुतिऊपर कोटिक रविशशिवारे।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरा रोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

चंदन-हरि चंदन घस केसर मिश्रित कनक कटोरी धारूं, तास गंधते षट् पद आवैं अर्चततापनिवारूं।
अजित जिनेश्वर कर्म हनेश्वर पूजत सुरगण सारे, पद पंकज की नख दुति ऊपर कोटिक रवि शशि वारे। ओं ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा तापरोग विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अक्षत-अन बिंधे मुक्ता सम अक्षत निशकर सम उजियारे, अषैसुपद दीजे हम को अब याते पुंज सुधारे।
अजित जिनेश्वर कर्म हनेश्वर पूजत सुरगण सारे, पदपंकजकी नख दुतिऊपर कोटिक रवि शशिवारे।
ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥

पुष्प -बेल चमेली राय बेल गुल तूरी आदि मंगाई, मकर केतके मद नाशन को तुम ढिग पुष्प चढाई।
अजित जिनेश्वर कर्म हनेश्वर पूजत सुरगण सारे, पद पंकज की नख दुति ऊपर कोटिक रवि शशि वारे। ओं ह्रीं श्रीअजितनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राण्ताय काम वाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामाति स्वाहा।

नवेद्य-सरस मनोहर घेवर फेनी गूंजा मोदकं ताजे, पुष्ट करत तन चर्न चढाए रोगक्षुधादिक भाजे।
अजित जिनेश्वर कर्म हनेश्वर पूजत सुरगण सारे, पद पंकजकी नख दुति ऊपर कोटिक रविशशिवारे।
ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधा

रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दीप-रत्न जडित दीपक में घृत भर बाति कपूर प्रजारी, मोह अंधके नाश करन को चरन कंज ढिगधारी।
अजित जिनेश्वर कर्म हनेश्वर पूजतसुरगण सारे, पद पंकजकीनख दुति ऊपर कोटिकरविशशिवारे।
ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांध-
कार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

धूप-रत्न जडित धूपायन में ही दश विध गंध जराई, अष्ट कर्म के नाश करनको यजत चरण लवलाई।
अजित जिनेश्वर कर्म हनेश्वर पूजत सुरगण सारे, पद पंकज की नख दुति ऊपर कोटिक रवि शशि वारे।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

फल-श्रीफल सेव बदाम छुहारा एला केला लावें, कंचन थाल भराय मनोहर सेवत शिवफल पावें।
अजित जिनेश्वर कर्म हनेश्वर पूजत सुर गण सारे, पद पंकज की नख दुति ऊपर कोटिक रवि शशि वारे।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अर्घ ... र बजाई, नाचत गावत अंग नचावत शिवपुरदे जिनराई।
... नख दुति ऊपर कोटिक रवि

शशि वारे। ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति ॥

अथ पंचकल्याणक। छंद द्रुत विलंबित।

गर्भ–जेठ कारी मावस जानियें, गर्भ मंगलतादिन मानियें। मात विजया सेव हि सुर सबै, हम जजें इत अर्घ लिये अबै। ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेंद्राय जेष्ठ कृष्ण अमावस्या गर्भ कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

जन्म–शुकल माघ दसै दिन आइयो, अजित जिनने जन्म सुपाइयो। हरि जजे गिरि मेरु न्हुलायके, हम जजें नित मंगल गायके। ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेंद्राय माघ शुक्ल दशमी जन्म, कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

तप–श्वेत नवमी माघ महान है, विपिन माहि धरो शुभ ध्यान है। निजस्वरूप विषे लव लायके, यजत हैं हम अर्घ चढायके। ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथ जिनेंद्राय माघ शुक्ल नवमी तप कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान–पौष शुकल ग्यारस तिथ के दिना, ज्ञान पंचम उपनो तुम जिना। समवसनंरच्यो धन देव ही, हम जजें नुति करके सेव ही। ॐ ह्रीं श्रीअजिनाथ जिनेंद्राय पौष शुक्ल एकादशी ज्ञान कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

निर्वाण–शुकल पंचमि चैत महानजी, गिर समेद थकी निर्वान जी। सिद्ध सुथानक आप बिराजई,
हम जजें नित मंगल साज ही। ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेंद्राय चैत्र शुक्ल पंचमी मोक्ष
कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला। दोहा।

जिम बालकसर इंदुलखि, करमें पकडत धाय। तिम तुम गुण मालाविविध, हम किम वरने गाय १

महाअर्घ–छंद कामिनी मोहन। जय अजितेश भुवनेश जिनराय हो, विकट संसार में आप सुखदाय
हो। गर्भ अरु जन्म के सार कल्याण में, आय सुरईश कीनों पिता थान में ॥ २ ॥ आयु बहत्तर लक्ष
पूरव महा, शेष इक लक्ष में योग तुमने लहा। सहस इक भूपने संग दीक्षा गही, रहे छद्मस्थ जिन
वर्ष द्वादश सही ॥ ३ ॥ करत तप घोर चारों अरीनाशियो, ज्ञान केवल लहा सर्व परकाशियो। धनद
सम बाद की सरस शोभारची, पूजियो आय हरि संग निर्जरशची ॥ ४ ॥ सिंह सेनादि गणधीश नव्वे
जहां। सर्व मुनिसंघ इक लक्ष राजे तहां। सहस द्वादश शतक चार मुनि जानिये, धरत वादित ऋद्धि
सार उन आनियें ॥ ५ ॥ सहस नव चार से अवधिकर सोहते, करत उपदेश सब भव्य मन मोहते।
केवल सहित सहस जिन वीस हैं, कर्म धरत वैक्रियक रिद्धि
नियेसहस द्वादश भले, ज्ञान तूर्य धरें करम अरि को दले ॥ ६ ॥

चवनाशियो सर्व के ईश हैं ॥ ७॥ सहस इकतीस षट् शतक शिष्यक मुनी, शतक सैंतीस अर अर्द्ध पूरब धनी। तीन हज्जार त्रय लक्ष आर्या कही, धरत व्रत नेम बहु श्वेत साढा गही ॥ ८ ॥ सहस सम्यक्त लख तीन श्रावक बने,देत चत्र संघ को दान आदर ठने।त्याग मिथ्यात्त्र लख पांच सौहै भली। श्रावका धर्म पाले महामन रली ॥ ९॥ देव देवी असंख्यात सिर नावते, वरें सब छांडि तिर्यंच संख्यावते। इन ही आदिक महा संघ सोहे जहां, करत सु बिहारजे देश आरज तहां ॥ १० भव्य गण बोध सम्मेद गिरि आइयो, योग निरोध के सिद्ध पद पाइयो। ज्ञान दृग वीर्य सुख आप धारी भये, सकल सुर आयके शीस तुम को नये ॥ ११ ॥ कहत बखता रतनदास तुमरे सही, छाड सब देव को शर्ण तेरी लही। तोड मम फंद को ठाम निज दीजिये, हे जगन्नाथ यह अर्ज सुन लीजिये ॥ १२ ॥

घत्ता छन्द–जयमाल बखानी,सब सुख दानी,भवि मन आनी पाप हरे। जे पढें पढावें स्वरधर गावें,तिन घर ऋद्धि अपार भरे॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथ जिनेन्द्राय गर्भ जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घपद प्राप्तये महाऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ आशीर्वादः।छंद मालती–जिन अजित जिनंदा सेवत चरनचंदा,सकलभवि अनंदा पूजिहैं त्याग गंधा। तिन घर ऋद्धि भारी पुत्र पौत्रादिसारी, सरब दुख निवारी सो लहैं मोक्ष प्यारी ॥ १४ ॥

इत्याशीर्वादः। इति श्री अजितनाथ जिन पूजा संपूर्णा ॥ २ ॥

३ अथ श्रीसंभवनाथजिन पूजा लिख्यते।

(बखतावर सिंह कृत) छंद मत्त गयंद

स्थापना-ग्रीवक छार लियो अवतार पिता सुजितार के नंद कहाये।
जय सेना मात नमूं धर हाथ जु संभवनाथ जिनंद हसाये।
है वाजी अंक अरी कर दंक सुभव्यन को शिव पंथ लगाये।
श्री जिनदेव करूं नित सेव सुथापत हूं चित हर्ष बढाये॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेंद्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।
ओं ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ओं ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधी करणम्।

अथ अष्टक ॥ छंद सुंदरी।

जल-उदक पदम ह्रद को लीजिये, धर श्री जिन सनमुख दीजिये। जन्म आदि त्रिदोष मिटाइये,
चरन संभव जिनके ध्याइये।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेंद्राय गर्भ जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण कल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरा रोग विनाशनाय जलंनिर्वपामीति स्वाहा।

भव आताप मिटावन चंद हो, परम

संभव तोडन फंद हो। ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप ज्ञान, निर्वाण पंच-कल्याण प्राप्ताय संसारा ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत–सरल अक्षत कुंद समान ही, कनक थार त्रिषे धर आन ही। पद अषै दायक सु दयाल हो, नाथ संभव तुम गुणमाल हो। ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प–सहस पत्र शुकंजादिक भले, भ्रमर गुंजत हैं तिनपै रले। चरण अर्चत काम निवारिये, देव संभव भवदधि तारिये। ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञाम, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय काम वाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य–चरु मनोहर मोदक पावने, सरस उज्वल चश्म सुहावने। घृत सितारस मिश्रित लाइयो, जिन सुसंभव चरण चढाइयो। ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप–होत जग मग ज्योति सुहावनी, दीप माल सुकर धर पावनी। मोह तिमिर विनाशन सेवकी, सरस संभव श्री जिन देव की। ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप-सरस सुंदर गंध रलायके, खेय हूं तुम सन्मुख आय के, धूप के संग करम उडात हैं, भगत वत्सल

संभवनाथ हैं। ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल–आम्र दाडिम चिर्भट सेवही, फल मनोहर उत्तम भेवही। जगतनाथ कृपाकर लीजिये, हमें संभव शिव फल दीजिये। ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ–जल फलादि सब दरव मिलाय हूं, करत अर्घ अनूपम लाय हूं। कर सुखी मुझ देख बिहाल को, हर हु संभव जग जंजाल को। उों ह्रीं श्रीसंभवनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाणपंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंचकल्याणक। दोहा।

गर्भ–फागुण सित अष्टमि भली, तज ग्रीवक अहमिंद। सेना माता उर बसे, सेव सुरतिय वृंद। ॐ ह्रींश्रीसंभवनाथजिनेंद्राय फाल्गुण शुक्ल अष्टमी गर्भ कल्याणप्राप्तायअर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा।

जन्म–पूनम कातिक श्वेत ही, तृतिय ज्ञान युत देव। मेरुशृंग पर हरिजजे, महपूजें कर सेव। ॐह्रीं श्री संभवनाथ जिनेंद्राय कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा जन्म कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तप–मगसिर पूनम शुक्ल ही, तप धारो जिन ईश। सकल परिग्रह त्याग के, हम नावैं निज शीश।

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथ जिनेंद्राय मार्गशिरशुक्ल पूर्णिमा तपकल्याण प्राप्ताय अर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा

ज्ञान–कातिक कारी चौथ दिन, चार कर्म हन ज्ञान। समवसर्न शोभित भयो, द्वादशसभा महान। ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेंद्राय कार्तिक कृष्ण चतुर्थी ज्ञान कल्याण प्राप्ताय अर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा।

निर्वाण–षष्ठी शुकल सुचैत्र की, पायो अविचल थान। सम्मेदा गिरि सीसतें, जजूं तुम्हें धर ध्यान। ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेंद्राय चैत्र शुक्लषष्ठी मोक्ष कल्याण प्राप्तायअर्घंनिर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला। दोहा।

जो किसान खेती करे, कारज अपने मान। भूप तनो नहि हेत लख, पोषत कुटंब सुज्ञान ॥ १ ॥
त्यो तुम गुण माला विविध, बरनूं अपने हेत। रागादिक वर्जित प्रभु, भावन को फलदेत ॥ २ ॥

छन्द चंडी–जय संभव जगदीश नमस्ते, राग दोष मद पीस नमस्ते। जयानंद घनबीर नमस्ते, नाशत हो भव पीर नमस्ते ॥ ३ ॥ लोका लोक प्रकाश नमस्ते, जन्म जरा दुख नाश नमस्ते। कर्म वज्र को छेद नमस्ते, मोह महा भट भेद नमस्ते ॥४॥ भव दधि तारन सेतु नमस्ते, अधम उधारन हेतु नमस्ते। क्रोध दवानल वारि नमस्ते, भव्य जीव निस्तारि नमस्ते ॥ ५॥ मान शैल को बिंदु नमस्ते धर्म धुरंधर सिंधु नमस्ते। माया शल्य विहंड नमस्ते, अष्ट कर्म के खण्ड नमस्ते ॥ ६॥ बहु सुख दायक देव नमस्ते, इंद्र करत नित सेव नमस्ते। प्रातिहार्य वसु धार नमस्ते, तरु अशोक ढिग धार

नमस्ते ॥ ७ ॥ सुमन वृष्टि नभ होत नमस्ते, सिंहासन रवि जोत नमस्ते । चौसठ चमर ढुरंत नमस्ते सुर दुंदभि वाजंत नमस्ते ॥ ८॥ दिव्य ध्वनि घन घोर नमस्ते, हरषत भवि जन मोर नमस्ते । भामंडल भव पेष नमस्ते, छत्र कोटिरवि रेख नमस्ते ॥ ९ ॥ चतुरानन भगवान नमस्ते, तत्व प्रकाशन ज्ञान नमस्ते । लक्षग चरन तुरंग नमस्ते, वपु कंचन के रंग नमस्ते ॥ १० ॥ चार शतक धनुकाय नमस्ते, वंश इक्ष्वाकु सुआय नमस्ते । खेचर भूचर राय नमस्ते, नमन करें सिरनाय नमस्ते ॥११॥ शिखर समेद महान नमस्ते, पूजूं मोक्ष सुथान नमस्ते । अष्ट गुणन के राज नमस्ते, सोहत सब सिर ताज नमस्ते ॥ १२ ॥ बखतावर सिर नाय नमस्ते, रतनलाल गुण गाय नमस्ते । यह मेरी अरदास नमस्ते, दीजे शिवपुर वास नमस्ते ॥ १३॥

घत्ता छन्द–जय संभव स्वामी अंतर्यामी त्रिभुवन नामी सुखदाई । हम पूजें ध्यावें तूर बजावें गुण गण गावें हरषाई ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंच-कल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ आशीर्वादः। संभवनाथ जिनेश तनी इह वर जयमाला, तन मन वचन लगाय पढे जो बुद्धि विशाला। दुःख दरिद्र को नाश होत ता ग्रह के माही, ऋद्धि सिद्धि वर वृद्धि होत ना घटे कदा ही ।

॥ इत्याशीर्वादः ॥ इति श्री संभवनाथ जिन पूजा संपूर्णा ॥ ३ ॥

४ अथ श्री अभिनन्दननाथजिन पूजा प्रारभ्यते।

बख्तावर सिंह कृत (छन्द सुन्दरी)

स्थापना–पिता संवर जिन वर के सहो, नगर साकेता अद्भुत कही।
चिह्न मर्कट को उर जानके, तिष्ट अभिनंदन इत आन के ॥ १ ॥
ओं ह्रीं श्रीअभिनंदननाथ जिनेंद्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्
ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथ जिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ओं ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

अथ अष्टक (विजयानी सेठ की चाल)

जल–शुभवारि सो जी पद्म ह्रद को लाइये, भरझारी जी चरनन माहिं चढाइये। अभिनंदन जी जग बंधन तोडन बली, हम पूजें जी विघ्न सघन सब ही टली। ओंह्रींश्रीअभिनन्दननाथ जिनेंद्रायगर्भ जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याणप्राप्ताय जन्म मृत्युजरारोगविनाशनाय जलंनिर्वपामीतिस्वाहा।

चंदन–हरि चंदन जी सरस सुवास सुहावने, तिस ऊपरजी गुंजत अलिगण आवने। अभिनंदनजी जग बंधन तोडनबली, हम पूजें जी विघन सघन सब हीटली। ओं ह्रीं श्री अभिनन्दन नाथ जिनेंद्रायगर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारातापरोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत-पुण्यराशि सोजी तासम अक्षत लीजिये, चरनन ढिग जी पुंज मनोहर कीजिये। अभिनंदनजी जग बंधन तोडन बली,हम पूजें जी विघ्न सघन सबही टली। ॐह्रींश्रीअभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म,तप,ज्ञान,निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प-चंपक अरजी बेल चमेली जानिये, सुर तरु के जी फूल मनोहर आनिये। अभिनन्दन जी जग बंधन तोडन बली,हम पूजें जी विघ्न सघन सब ही टली। ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दन नाथ जिनेंद्राय गर्भ,जन्म,तप, ज्ञान,निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय काम वाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य-रसपूरित जी नेवज सदलायोघनी,तिस देखतजी क्षुधा रोग सब ही हनी। अभिनंदन जी जग बंधन जोड़न बली, हम पूजें जी विघ्न सघन सब ही टली। ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दन नाथ जिनेन्द्राय गर्भ,जन्म, तप,ज्ञान,निर्वाणं पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप-रत्नन के जी दीपक तुम आगे धरें, तिस जोति सों जी अन्ध दशों दिश का हरें। अभिनन्दन जी जग बंधन तोडन बली,हम पूजें जी विघ्न सघन सब ही टली। ॐह्रीं श्रीअभिनन्दन नाथ जिनेन्द्राय गर्भ,जन्म,तप,ज्ञान,निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप-दशगंध सोजी कर्पूरादि मिलाइये, तिस खेवत जी अष्ट करम सु जराइये। अभिनंदन जी जग बंधन तोडन बली, हम पूजें जी विघ्न सघन सबही टली। ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान,निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्टकर्मदहनायधूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल–बादाम सेजी श्रीफल आदि सुहावने, भरथारी जी देखत चख ललचावने। अभिनंदनजी जग बंधन तोडन वली, हम पूजें जी विघ्न सघन सबही टली। उों ह्रीं श्री अभिनंदन नाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ–जल फल शुभ जी आठों दर्ब सु कर लिये, कर अर्घ सु जी तुम पद आगे धर दिये। अभिनंदनजीजग बंधन तोडन वली, हम पूजेंजी विघ्न सघन सब ही टली। ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदन नाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंच कल्याणक। (छन्दपायता)

गर्भ–षष्टी वैशाख उजारी, गरभागम तादिन भारी। माता सिद्धारथ ध्याऊं, अभिनंदन पूज रचाऊं। ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेंद्रायवैशाखशुक्लषष्ठीगर्भकल्याणप्राप्तायअर्घं निर्वपामीतिस्वाहा।

जन्म–सित बारसि माघ महीना, जिन चंद जन्म तब लीना। सब जीवन ने सुखपाया, तन कनक बरण छवि छाया। ॐ ह्रीं श्री अभिनंदन नाथ जिनेंद्राय माघ शुक्ल द्वादशी जन्म कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा।

तप–सित माघ द्वादशी जानों तब योग विषे चित ठानो। लौकांतिक सुर तब आये, हम पूजें अर्घ चढाये ॐ ह्रींश्री अभिनन्दननाथ जिनेंद्राय माघ शुक्ल द्वादशी तपःकल्याणप्राप्तायअर्घं निर्वपामीतिस्वाहा।

ज्ञान–चवघाति कर्मदुखदाई,हन केवल ज्ञान लहाई। सितपौष चतुर्दशि जो है,भवजीवन के मन मोहै।
ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथ जिनेंद्राय पौषशुक्ल चतुर्दशी ज्ञान कल्याण प्राप्तायअर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा।
निर्वाण–सम्मेद शिखर गिरि सो है, तहं योग निरोध करोहै। वैशाख शुक्ल छठ आई,शिवनारवरीजिनराई।
ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथ जिनेंद्राय वैशाख शुक्लषष्ठी मोक्षकल्याण प्राप्तायअर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा।

अथ जयमाला। दोहा

महाअर्घ–श्री अभिनंदन देवके, चरण सरोज विशाल। तिनको मैं सिरनायके, गाऊं शुभ जयमाल ॥१॥

चाल बीस जिन पूजा आरती को।

अभिनंदन भगवंत जी जगसार हो नमन करूं सिर नाय। मो विनती हिरदे धरो जगसार हों, स्तुति करूं हूं बनाय। मैं करूं बिनती सुनों स्वामी, चतुरगति में दुःख सहे। यहां योनि लख चौरासि पाई, कोड़ कुल मैं सब लहे ॥ २ ॥ तहां भ्रमत बहु संसार माहीं, पंच थावर तन लियो। जब पडी मंद कषाय मेरी, आन विकल त्रय भयो। तिर्यंचगति दुःख बहु सहे जगसार हो। सो किम बरनें जांय। तुमतें छाने को नहीं जगसार हो। रही सो ज्ञान समाय। सो ज्ञान मांह प्रत्यक्ष दीखे दुःख जेते मैं लहे। जहां भूख प्यास अत्यंतपीडा मार ताडन दुःख सहे ।३। तहां पीठपै बहु बोझ लादे गले में फंदा

गही। संयम बिना ये दुःख पाये अंतनारक गति लही ॥ ३ ॥ नारक भूमि डरावनी जगसार हो, शीत उष्ण दुःख भार। हुंडक डील घिनावनो जगसार हो, करे मार ही मार। तहां मार मार अत्यंत सुनिये पूतरी लिपटात हैं। तरु शालके असि पत्र कंटक तासमें घिसटात हैं। सरिता बहे श्रोणित तनी तिस पान करवावें सदा। इम आयु सागर बंध भुगती सुख नहीं पायो कदा ॥ ४ ॥ निकस तहां मानुष भयो जगसार हो नीच कुली अवतार। बिकलेंद्रिय चख हीन ही जगसार हो, पायो तन दुख कार। दुखकार तन पायो अपावन भूप को किंकर भयो। कर जोड के तहँ भयोठाडो हुकम सिर पै धर लियो। जे भेष मिथ्या जटा धारी तास को गुरु मानियों। जिन बचन की शरधान कीनी तप अज्ञान सुठानियों ॥५॥ कोइयक पुण्य बसायतें जगसार हो, पायो स्वर्ग विमान। नीचदेव संपति लही जग सार हो, घोटक बृषभ कहान। कहान बाहन जातमें बहु दास कर्म सबी गहे। ऋधि देख पर की झुरे अति ही मानसिक जो दुःख सहे। षट मास पहिले माल सूकी देखके बिल लाइयो। आरत थकी तब प्राण त्यागे सुमन तन को पाइयो ॥ ६ ॥ यह प्रकार जग में भ्रम्यो, जगसार हो,सो तुम जानत देव। काल लब्धि जब आइयो जगसार हो, पाई तुम पद सेव। पद सेव पाई नाथ तेरी कृपा ऐसी कीजिये। संसार सागर बीच मो को कर अलंबन दीजिये। मैं करूं नित ही सेव तेरी अहो संबर नंदजी। इक्ष्वाकु वंश सुगगन माहीं दीप्त जैसे चंदजी ॥ ७ ॥ अष्ट करम सब हान के जग सारहो,पहुंचे मोक्ष सुथान। सुर नर अवनी पूजियो जगसार हो, सम्मेदाचल आन। आन

सुर कल्याण कीनो, पंच मो हरषायके। गंधर्व निर्जर गान कीनो, नृत्य तूर बजाय के। हम करें युग कर जोड ठाडे, कृपा सिंधु सुनी जिये। बखता रतन को भृत्य जानो वास अपनो दीजिये ॥ ८॥

घत्ता छन्द–जय जय जिन स्वामी त्रिभुवन नामी सुर नर खग वंदित चरणम्।॥ बहु मंगल गावें तूर बजावें शीस नवावें अघ हरणम्। ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण, पंच कल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महाऽर्घं निर्वपामाति स्वाहा।

अथ आशीर्वाद:। छन्द उपगीता। जे अभिनंदन स्वामी पूजे त्रय भाव शुद्ध कर कोई। ते होवें शिव गामी त्रिभुवन में वंदनीक सो होई॥ १०॥ ॥ इत्याशीर्वाद:॥

इति श्री अभिनंदननाथ जिन पूजा संपूर्णा ॥ ४ ॥

५ अथ श्रीसुमतिनाथजिन पूजा प्रारभ्यते ।

(बखतावरसिंह कृत) (सवैया)

स्थापना–स्थाग बैजयंत सार नगर कोशला मंझार मात मंगला उदार तात मेरु जानियें ।
चिह्न कोक बनधार दुष्ट कर्म नष्ट कार तीन लोक के अधार ज्ञान रूप मानियें ॥
आयु लक्ष पूर्व जान चालिस को है प्रमाण कृपा दृष्टि धार के, सो मम दुःख हानियें ।
आइये जिनंद देव करूं हूं पदाब्ज सेव तिष्ठ तिष्ठ नाथ सब भव्य दुःख भानियें ॥
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भवभव वषट् सन्निधीकरणम् ॥

अथ अष्टक । छंद सोरठा ।

जल–गंगाजल भरलाय, तुम सनमुख धारा दई । जन्म रोग नस जाय, सुमति जिनेश्वर पूजते ॥
ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरा रोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्दन–गोसीरादि घसाय, रतन कटोरी में भरूं। करम दाघ मिटजाय, सुमति जिनेश्वर पद जजें ॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत–अनियारे दुतिचंद, अक्षत पुंज रचाइये। दीजे पद सुख कंद, सुमतिनाथ जिनराय जी ॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प–सुमन अनेक प्रकार, सौरभते अलि गण भ्रमें। मार सुभटको टार, सुमति सुमति दायक सुधी ॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय काम वाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य–लायो सद पकवान, घृत पूरित रस में बने। करो क्षुधा की हान, सुमतिनाथ महाराज जी ॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप–घृत सनेह तें जोय, दीपक कंचन पात्र में। मोह अंध को खोय, सुमति जिनेश्वर ज्ञान दो ॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

खेवत कर्म उडाय, सुमति जिनेश्वर चरण ढिग ॥
धूप—अगर तगर शुभ लाय, धूप धनंजय के विषे।
ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय
अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पावै शिव तियसार, सुमति चरण जग ध्यावतें ॥
फल—श्रीफल आम अनार, पक्व मनोहर लाय के।
ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष
फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों करम नसाय, सुमतिनाथ शिव दीजिये ॥
अर्घ—जल फल द्रव्य मिलाय, अर्घ सुकर धर लाय हू।
ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ
पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंचकल्याणक। छंद लीलावती।

मात सुमंगला के चरनन कों,
गर्भ—शुभ संजयंत तज सावन शुकला, दुतिया के दिन गर्भ लिया। बहु धनद करी
सेवे नित ही स्वर्ग तिया॥ जिम मुक्ता संपुट में राजे तैसे आप विराज रहे।
रत्नन की वर्षा अनहद बाजे बाज रहे॥ ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय श्रावण शुक्ल द्वितीया
गर्भ कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म–मति श्रुति अवधि ज्ञानत्रय भूषित सुमति जिनेश्वर जन्म लहो। दश अतिशय अद्भुत संग जानो, रूप सरूप अनूप गहो॥ तब एक मुहूरत नरक मांहि भी पायो सब जिय चैन तबै। हम चेत शुकल ग्यारस के दिन को, पूजत अर्घ चढाय अबै। ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय चैत्र शुक्ल एकादशी जन्म कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तप–दीनों सब त्याग परिग्रह जिनने, बन में जाय सुयोग धरा। वैशाख शुकल नवमी के दिन, आतम सार विचार करा॥ मौनालीन भये जो दिगंबर, पारन पय का कीना है। हम नित पूजैं तुमरे चरण को, जो समता रस भीना है॥ ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेंद्राय वैशाख शुक्ल नवमी तपः कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान–पाया है केवल ज्ञान जिनेश्वर चेत इकादशि श्वेत कही। समवसरन रचियो तब धनपति बारह सभा अनूप सही॥ बानी खिरे शब्द अंबर जिन सप्ततत्व परकाश करे। हम ध्यावें गावें पावें शिव सुख, चरनन आगे अर्घ धरे॥ ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय चैत्र शुक्ल एकादशी ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

मोक्ष–पाया है शिवथान जिन्होंने श्वेत इकादशि चेत दिना। शुभ गिरि समेद शिखर के ऊपर सुमति जिनेश्वर कर्म हना॥ जिन अष्टम धरा जाय थित कीनी अष्ट गुणन के मंडन हो। हमनुत

कर ध्यावें चरण आप के अष्ट करम के खंडन हो ॥ ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय चैत्र शुक्ल एकादशी मोक्ष कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ जयमाला । दोहा ।

महाअर्घ-वपु उतंग धनु तीनसै, कंचन वरण सुरंग । कोक चिन्ह चरनन विषे, नमन करूं वसु अंग ॥
मेरुनंद सुमतेश जिन, दीजे बुद्धि रसाल । कर जोड़े बिनती करूं, वरनू शुभ गुण माल ॥

चामर छन्द—छाड के विजय विमान नगर कौशला पुरी । मंगला सुमात चरण सेवती सबै सुरी ॥ मेघ के सुनंद नाथ इंद्र तोहि ध्यावते । लक्ष योजन प्रमाण नाग को बनावते ॥ ३ ॥ नृत्यतूर ठान के पिता सुनग्र आवते । प्रेम जासु मात पास भेज सौख्य पावते ॥ जाय के शची जिनंद गोद में लिये तबै । आन के सुरेंद्र देख मोद में भये जबै ॥ ४ ॥ नाग पै सवार कीन्ह स्वर्ण शैल पै गये । न्हौन को उछाह ठान हर्ष चित्त में भये ॥ देख रूप आप को अनंग बीनती लही । इन्द्र चन्द्र बृन्द आन शरण चर्ण की गही ॥ ५ ॥ बीनती करे सुरेश युग्म हाथ जोड़ के । दीजिये पदाब्ज सेव मोह फंद तोड़ के ॥ तो बिना न देव कोय दूसरो निहारियो । लक्ष चार औ असी सुजौन से उबारियो ॥ ६ ॥ नाम आप के अपार रंचपार ना लहूं । शीस को नवाय नाथ ध्यान आप को गहूं ॥ फेर तात के अगार लाय मातको दिये । मेरु की कथा बखान बास आपने गये ॥ ७ ॥ होत वृद्ध इंदु जेम वर्ष अष्टके भये । आप

बोधते अणु सुव्रत पंच को गहे ॥ राज भोग जे अपार आप ने किये महा । तीन लोक नाथ के सुसौख्य को कहे कहा ॥ ८ ॥ भोग त्याग योग को विचार आपने करे । ब्रह्मदेव आन के सुपुष्प चरण में धरे ॥ लाइयो सुरेश पाल की तबै नई जहां । ह्वै सवार आप सर्व संग को तजो तहां ॥ ९ ॥ जाय के अरण्य बीच ध्यान आपने धरे । तीन गुप्ति पाल व्रत पांच जो तहां करे। घाति चार घातिया अपार ज्ञान पाइयो ॥ भव्य वृन्द बोध के समेद शैल आइयो। योग को निरोध ठान मोक्ष को गये सही । देव के समूह आन पूजते वही मही । मैं करूं जुतोह सेव दीन के दयाल को, कीजिये निहाल मेट आपदा सूकाल की ॥ ११ ॥ मैं नमूं जिनेश तोहि आप वास दीजिये। जन्म मृत्यु आधि व्याधि सर्व दूर कीजिये। सेव चर्न में सदैव दास को सुलीजिये , वार वार याचना करूं सुवेग दीजिये ॥ १२ ॥

घत्ता छन्द–धन्य धन्य सुमतेश के । युग चरणाम्बुज सार ॥ तिन पर बल बल जात हूं, भाव भगति उर धार ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ आशीर्वादः । छंद कोसमालती–जो श्रीसुमति जिनेश्वर पूजें, अथवा पाठ पढें मन लाय । तिन के पुण्यतनी जो महिमा, सुर गुरु पै वरनी नहि जाय ॥ पुत्र पौत्र परताप बढे अति सुख संपति पावें अधिकाय । बखतावर अर रत्नदास के, हूजे प्रभु जी वेग सहाय ॥ १४ ॥

इत्याशीर्वादः । इति श्रीसुमतिनाथजिन पूजा संपूर्णा ॥ ५ ॥

६ अथ श्री पद्मप्रभनाथजिन पूजा प्रारभ्यते।

(बखतावरसिंह कृत) छन्द योगीरासा।

स्थापना-नगर कुसंभी अद्भुत राजे धनपति आय बनाई। ऊरध ग्रीवक तैं चय आये,रक्त वरण छविछाई।
धरन तात विख्यात जगतमें मात सुसीमा जानो। थापूं तुम को हरष धारकर तिष्ठ तिष्ठ दुख भानो॥१॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेंद्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

अथ अष्टक। गीता छंद॥

जल-शुभकुंभकनक मय वारि उज्ज्वलतासमेंभरलेत हूं। यह तृषा आतुर नाशनेको धार सन्मुख देतहूं।
श्रीपद्मप्रभ पद कंज लक्षण अरुण वरण सुहातहैं। पूजें अटल पद हेतु स्वामी कलुषताप नशात हैं।
ओं ह्रीं श्रीपद्मप्रभ जिनेद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्य जरा रोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥

चंदन-गोसीर घसकेसर मिलाऊं सरस शोभा देत हैं। तुम चरन चर्चन हेत लायो महक षट्पद लेत हैं।

श्रीपद्मप्रभ पदकंज लक्षण अरुण वरण सुहातहैं। पूजें अटल पद हेतु स्वामी कलुषताप नशात हैं। ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत-चंद्रिका मुक्ता समान सुफेन सम अक्षत लिये। प्रक्षाल प्राशुक नीरमें कर,पुंज तुम आगे दिये॥ श्री पद्मप्रभ पद कंज लक्षण अरुण वरण सुहात हैं। पूजें अटल पद हेतु स्वामी कलुष ताप नशात हैं॥ ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥

पुष्प-सित केतकी जाई जुही शुचि कुंद आदिक जानके। लायो सुमन मैं तुरत ही के धरे ढिग तुम आनके। श्री पद्मप्रभु पद कंज लक्षण अरुण वरण सुहात हैं। पूजे अटल पद हेतु स्वामी कलुष ताप नशात हैं॥ ॐ ह्रींश्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय काम वाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥

नैवेद्य-पकवान नीके सरस घी के सिता के रसमें बनें। जिस देखते सब क्षुधा नाशे थाल भर लायो घनें। श्री पद्मप्रभ पद कंज लक्षण अरुण वरण सुहात हैं। पूजें अटल पद हेतु स्वामी कलुष ताप नशात हैं। ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

दीप-दीपक प्रजारे तम निवारे जोत रवि की सब लसे। सों दीपमाला अति उजाला, जोयतें सब अघ नसे॥ श्रीपद्मप्रभ पद कंज लक्षण अरुण वरण सुहात हैं। पूजें अटल पद हेतु स्वामी, कलुष ताप नशात हैं।ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप-श्रीखंड अगर कपूर लाय सुअग्निसंग जरायही।तिसधूम दशदिसमांहि व्यापी गुंजतें अलिआयही। श्री पद्मप्रभ पद कंज लक्षण अरुण वरण सुहात हैं। पूजें अटल पद हेतु स्वामी कलुष ताप नशात हैं॥ ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥

फल-बादाम खारिक लौंग पिस्ता दाख श्रीफल सार ही। रसना सुहावन नेत्र भावन भरूं कंचन थार ही।श्रीपद्मप्रभ पद कंज लक्षण अरुण वरण सुहात हैं। पूजें अटल पद हेतु स्वामी कलुष ताप नशात हैं। ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा॥

अर्घ-शुभ जल फलादिक द्रव्य प्राशुक अर्घ करमें लाय हूं। मैं नाच राचि नवाय मस्तक सुयश तुमरो गाय हूं। श्रीपद्म प्रभु पद कंज लक्षण अरुण वरण सुहात हैं। पूजें अटल पद हेतु स्वामी कलुष

ताप नसात हैं ॥ ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ पंच कल्याणक। (विजयानी सेठ की चाल)

गर्भ-अंधियारी जी षष्ठी माघ सुहाइयो, तजग्रीवसु जी गर्भ विषे जिन आइयो। माता तुम जी नाम सुसीमा जानके,हम पूजेंजो भाव भक्ति उर आन के। ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभ जिनेंद्राय माघकृष्णषष्ठी गर्भ कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

जन्म-असित कातिक जी पक्ष सुतेरस जाइयो,एरावत जी सजके इंद्र जुलाइयो। गिरिमेरु सु जी न्हवन कियो मन लाय के, हम पूजें जी चरणन अर्घ चढायके। ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभ जिनेंद्राय कार्तिक कृष्ण त्रियोदशी जन्म कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

तप-तपधारो जी दुर्द्धर श्रीधरने जबै, धर षष्ठो जी ध्यान विषे लागे तबै। अंधियारी जी कातिक तेरस सोहनी,हम पूजें जी शिवनगरी के तुम धनी॥ ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभ जिनेन्द्राय कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी तपः कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

ज्ञान-शुभ सोहेजी कानन कौशांबी तनों,जिन के वचजी पाय मोह तम को हनो। तब धनद सुजी समवसरन रचना रची। सित चैत सुजी पुन्यो दिन पूजा रची। ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभ जिनेन्द्राय चैत्र

शुक्ल पूर्णिमा ज्ञान कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

निर्वाण-तिथ जानोजी फागुण कारी बेदही, गिरिशिखर सुजी अष्ट करम को छेदही। शिव पाई जी प्रकृति पिचासीहान के, पद पूजूं जी पद्मप्रभ भगवान के। ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय फाल्गुण कृष्ण चतुर्थी मोक्ष कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ जयमाला। दोहा।

महाअर्घ-धनुष अढाईसौ उनत, अरुणवरन अविकार। पद्म चिन्ह चरणन विषे, नमूं उभयकर धार ॥१॥

छंद पद्धडी-जय पद्मनाथ तन अरुण जान, नख दुति तैं लाजत कोटि भान। धारण नृप कमल विकाश सूर, अज्ञान तिमिर कीनो सुचूर ॥ २ ॥ तुम समवसरन रचना अपार, मैं कहूं किमपि लघु बुद्धिधार। साढे नव योजन को प्रमाण, शुभ वीस हजार बने सिवान ॥ ३ ॥ पहिलो ही कोट सुधूल साल, तिस गोपुरचव लंट कें सुमाल। तिस आगे भूमि प्रसाद सार, चव मानस्थंभ दिये अपार ॥ ४ ॥ त्रय कटनी विविध प्रकार जान, पहिली दूजी मणि मइ बखान। बहु वरण रतन तीजी सुहात, मानी जन देखत मान जात ॥ ५ ॥ ता आगे कोट उतंग श्वेत, चारों दिस है गोपुर समेत। युग बीथी हैं दो नाट शाल, सुर तिय नाचें गावें विशाल ॥ ६ ॥ तहां पुष्प बाटिका वन उतंग, सुर तरु हैं चारों दिश अभंग। तिस आगे कोट जु हेम जान, ध्वज पंकति रूप लसै महान ॥ ७ ॥ फिर फटक कोट

ताप नसात हैं ॥ ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ पंच कल्याणक। (विजयानी सेठ की चाल)

गर्भ-अंधियारी जी षष्ठी माघ सुहाइयो, तजग्रीवसु जी गर्भ विषे जिन आइयो। माता तुम जी नाम सुसीमा जानके,हम पूजेंजो भाव भक्ति उर आन के। ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभ जिनेंद्राय माघकृष्णषष्ठी गर्भ कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

जन्म-असित कातिक जी पक्ष सुतेरस जाइयो,एरावत जी सजके इंद्र जुलाइयो।गिरिमेरु सु जी न्हवन कियो मन लाय के, हम पूजें जी चरणन अर्घ चढायके। ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभ जिनेंद्राय कार्तिक कृष्ण त्रियोदशी जन्म कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

तप-तपधारो जी दुर्द्धर श्रीधरने जबै, धर षष्ठो जी ध्यान विषे लागे तबै । अंधिया तेरस सोहनी,हम पूजें जी शिवनगरी के तुम धनी॥ ॐ ह्रीं त्रयोदशी तपः कल्याण प्राप्ताय अर्घं

ज्ञान-शुभ सोहेजी कान

शुक्ल पूर्णिमा ज्ञान कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

निर्वाण-तिथ जानोजी फागुण कारी बेदही,गिरिशिखर सुजी अष्ट करम को छेदही। शिव पाई जी प्रकृति पिचासीहान के, पद पूजूं जी पद्मप्रभ भगवान के। ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय फाल्गुण कृष्ण चतुर्थी मोक्ष कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ जयमाला। दोहा।

महाअर्घ-धनुष अढाईसौ उनत, अरुणवरन अविकार। पद्म चिन्ह चरणन विषे,नमूं उभयकर धार॥१॥

छंद पद्धडी-जय पद्मनाथ तन अरुण जान,नख दुति तैं लाजत कोटि भान। धारण नृप कमल विकाश सूर, अज्ञान तिमिर कीनो सुचूर॥ २ ॥तुम समवसरन रचना अपार, मैं कहूं किमपि लघु बुद्धिधार। साढे नव योजन को प्रमाण, शुभ बीस हजार बने सिवान ॥ ३ ॥ पहिलो ही कोट सुधूल साल, तिस गोपुरचव लंट कें सुमाल। तिस आगे भूमि प्रसाद सार, चव मानस्थंभ दिये अपार॥ ४ ॥ त्रय कटनी विविध प्रकार जान, पहिली दूजी मणि मइ बखान। बहु वरण रतन तीजी सुहात, मानी जन देखत मान जात ॥ ५॥ ता आगे कोट उतंग श्वेत, चारों दिस है गोपुर समेत। युग वीथी हैं दो नाट शाल, सुर तिय नाचें गावें विशाल॥ ६ ॥ तहां पुष्प वाटिका वन उतंग, सुर तरु हैं चारों दिश अभंग। तिस आगे कोट जु हेम जान, ध्वज पंकति रूप लसै महान ॥ ७॥ फिर फटक कोट

दैदीपमान, विदिशन में द्वादश सभा मान। श्री मंडप शोभा अतिलहाय, तिहुं लोक तनें सब जंतु माय ॥ ८ ॥ बिच गंध कुटी कटनी समेत, तहां तरु अशोक छवि अतुलदेत। तुम अंतरिक्ष राजत जिनंद, सिर छत्र तीन लाजत सुचंद ॥९॥ जीवादिक तत्व प्रकाश कीन, सुन कर भवि उरधारें प्रवीन। तुम कर विहार देशन मंझार, षट् वरष ऊन लख पूर्व सार ॥ १० ॥ यक मास आयु जब शेष थाय, तब संमेदागिरि शीस आय। हनि के अघाति शिव वास लीन, उत्पादक व्यय ध्रुव सर्व चीन ॥ ११ ॥ तुम गुण को पार लहे न शेष, हम किम बरने लघु मति अशेष। वखता रतना नित करत सेव, सुझ देह अबै पद पद्म देव ॥ १२ ॥

घत्ता छन्द–श्री पद्म जिनेशा हरत कलेशा भगत भरेसा अमर नये। यह दाम गुणन की भव्य सुनन की गूंथ संवारी शरमलये ॥ १३॥ ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घपद प्राप्तये महाऽर्घंनिर्वपामीति स्वाहा।

अथ आशीर्वादः–सोरठा–जो पूजें हरषाय, अथवा अनुमोदन करें। सो शिव पर क पढ़ें पढावैं जे सुधी ॥ १४ ॥ इत्याशीर्वादः ॥

७ अथ श्रीसुपार्श्वनाथजिन पूजा लिख्यते।

(वखतावरसिंहकृत) छप्पैछंद।

स्थापना—नगर बनारस मांहि जन्म जिनवर ने लीना। पृथ्वी देवी मात जयो जिन नंद प्रवीना॥
हरित वरण तनतुंग लसें दोसै छवि छाजे। पिताराय सुप्रतिष्ठ तासके सदन बिराजे॥
है महिमाऽनंतमहंत तुम,थापूं मैं सिर नायके।हूजे दयाल मम हालपै, तिष्ठो प्रभु इतआय के॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेंद्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भवभव वषट् सन्निधीकरणम्॥

अथ अष्टक।(चाल अठाई पूजा की।)

जल—शुभ द्रहको निर्मल वारि प्राशुक सुख कारी। तुम चरणन आगे धार कंचन भर झारी।
श्रीदेव सुपारसनाथ तुम गुण गावत हूं,मुझ कीजे आप सनाथ यातें ध्यावत हूं॥
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म,तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरारोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन-गोसीर सुगंध अपार कुंकुम रंग भरा। तुम पद अरचूं युग सार भव आताप हरा।
श्रीदेव सुपारसनाथ तुम गुण गावत हूं। मुझ कीजे आप सनाथ यातें ध्यावत हूं॥
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।
अक्षत-निशकर की ज्योति समान अक्षत अनियारे। अक्षय पद हेतु सुजान पुंज रचूं प्यारे।
श्रीदेव सुपारसनाथ तुम गुण गावत हूं। मुझ कीजे आप सनाथ यातें ध्यावत हूं॥
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।
पुष्प-संतान कल्पतरु आदि तिन के सुमन लिये। तापर अलि करत सुनाद चरणन भेट किये॥
श्रीदेव सुपारसनाथ तुम गुण गावत हूं। मुझ कीजे आप सनाथ यातें ध्यावत हूं॥
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्व
बाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति
नैवेद्य-नेवज नाना परका

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप–रत्नन के दीपक बार जग मग होत भले। कलधौतक के भरथार मोह अज्ञान टले।
श्रीदेव सुपारस नाथ तुम गुण गावत हूं। मुझ कीजे आप सनाथ यातें ध्यावत हूं॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप–मलयागिर चंदन साज गंध अनेकलई। तुम ढिग खेवत महाराज करम कलंक गई॥
श्रीदेव सुपारसनाथ तुम गुण गावत हूं। मुझ कीजे आप सनाथ यातें ध्यावत हूं॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल–सहकार अनार खजूर श्रीफल ल्यावत हैं। पूजत है करम सुदूर शिवफल पावत हैं।
श्रीदेव, सुपारसनाथ तुम गुण गावत हूं। मुझ कीजे आप सनाथ यातें ध्यावत हूं॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ-जल चंदन अक्षत लाय पुष्प सुबास लिये। चरु दीप धूप फल भाय पूजें अर्घ दिये॥
श्रीदेव सुपारस नाथ तुम गुण गावत हूं। मुझ कीजे आप सनाथ यातें ध्यावत हूं॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंचकल्याणक। चौपाई।

गर्भ-षष्ठी भादोंशुक्ल महान, ऊरधग्रीवकतजोबिमान। पृथ्वीदे माताउरआन, मैं पूजूंनितगर्भ कल्याण।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेंद्राय भाद्रपद शुक्लषष्ठी गर्भकल्याणप्राप्ताय अर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा।

जन्म-जेठशुक्ल संज्ञाचक्रेश, जन्मेत्रिभुवननाथदिनेश। इंद्र मेरु पै न्हवन कराय, हमपद पूजें मंगल गाय।

ॐ ह्रींश्रीसुपार्श्वनाथ जिनेंद्राय जेष्ठ शुक्ल द्वादशी जन्म कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा।

तप-बारसजेठउजारीदिना, मनवैरागविचारोजिना। लौकांतिकसुरक्रियोनियोग, जजें सुपारसदेव -

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्रायज्येष्ठशुक्लद्वादशी तप कल्याणप्राप्ता

ज्ञान-फागुनभ्रमरसुसंज्ञाकाय, परम जुकेवलज्ञानलहाय।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेंद्राय

निर्वाण-गिरिसम

॥ अथ जयमाला ॥ दोहा ॥

महाअर्घ-हरित वरण वपु सोहनो, दोसैधनुषउतंग। स्वस्तिक लच्छन चरण में,नमूंनायवसुअंग ॥ १ ॥

छन्द मोतीदाम। तज मधि ग्रीवक सारविमान,धरो तुम जन्मबनारस आन।पिता सुप्रतिष्ट
के नंदमहान, सुभव्यसरोजविकाशनभान॥ २॥ लही लख पूरब बीसजु आय,कुमारपणे रणलाखविहाय।
कियो फिर राजप्रजा सुखकार, सुपूरब चौदह लाख विचार ॥ ३ ॥ तजो सब राज लियो वनवास, सु-
साठ हजार यती पुनरास। लहो तब ज्ञान चतुर्थ प्रकाश, धरो तहांध्यान तजी जग आस ॥४॥ करे तप
घोर सुग्रीषम पल्य, तपे अति भांत चले वहु झल्य। सुपावस रैन महाभय रास, करे चपला नभ मांह
प्रकाश॥५। चहूं दिशतेघनघोरप्रचण्ड,पड़े जल मूसलधार अखण्ड।चहूं दिश बाय चले सर जेम,खड़े तरु
हेठ धरे निज पेम॥ ६ ॥ जबै ऋतु शीत तनो अति जोर,करै बहु तीक्षन पवन झकोर। जमैं तहां पोखर
ताल अनेक,दहे बन माह सु बृक्ष कितेक।७।नदी सरके तट आय जिनंद,धरैं तहां योग करैं रिपु मंद।
वर्ष सुसात रहे छदमस्थ,लहो फिर पंचम ज्ञान प्रशस्त ॥ ८ ॥ समोश्रृत आन रच्यो धन देव, करि जब
आय शची हरि सेव। खिरै दिवध्वन्नि सुने हरषाय, सभा सब द्वादश के समुदाय ॥ ९ ॥ करो जद
आरज देश बिहार, प्रबोध अनेक दिये भवतार। कियो लख पूरब धर्म प्रकाश, रही जब आयतनो
यक मास ॥ १० ॥ सुयोग निरोध सम्मेद महान, सबै रिपु हानि गये निर्वान। अनंत गुणाकर शोभित

देव, सुलोक अलोक तने लख भेव ॥ ११ ॥ नमूं सिर नाय उभय कर जोर, प्रभु हमरे वहु फंदन तोर। लई चरनांबुज शर्न जिनेश, करो मत ढील सुमेट कलेश ॥१२॥

घत्ताछन्द-जैजै रिपुनाशन ज्ञान प्रकाशन श्रीसुपार्श्वदेमोक्षधरा, जो गुण गण गावें शीस नवावेंपढें पढावें हर्ष वरा ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय अनर्घं पद प्राप्तये महाऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ आशीर्वादः। छंदरोडक-श्रीसुपार्श्व जिनतने चरण जे भविजन ध्यावें,पाठ पढें चितलाय तथा,सुनके हरषावें ॥ तिनघर मंगलहोयरिद्धि व्यापे अधिकाई,वखतावर इम कहै रतन सुन चित्त लगाई ॥१४॥

॥ इत्याशीर्वादः॥ इतिश्री सुपार्श्वनाथ जिन पूजा संपूर्णा ॥७॥

८ अथ श्रीचन्द्रप्रभजिन पूजा प्रारभ्यते ॥

बखतावर सिंह कृत। छन्द रोड़क।

स्थापना—वैजयंत सु विमान त्याग के जन्म सुलीना, चंद्र पुरी महाराज पिता महासेन प्रवीना। धनुष डेढ़ सै काय बरन तन श्वेत विराजे, तिष्ठ तिष्ठ जिन चंद्र चरन दुति चंद्र सुलाजे ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ जिनेंद्र अत्र तिष्ठः तिष्ठः ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ जिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

अथ अष्टक। छंद त्रिभंगी।

जल—शुभ द्रह को नीर निरमल सीरं मन वच धीरं ले आयो। भर कंचन झारी तुम ढिग धारी तृषा निवारी सुख पायो। महा सेन दुलारे चंद पियारे तन उजियारे जोति धरे। नख दुतिपै थारे कमल सुहारे चंद विचारे चरण परे॥ ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेंद्राय गर्भ,जन्म,तप,ज्ञान निर्वाण पंच कल्याणप्राप्ताय जन्म मृत्यु जरा रोगविनाशनाय जलंनिर्वपामीति स्वाहा ॥

चंदन—लेचंदन बावन कुंकुम पावन चक्षु सुहावन घस लीना। तिस सौरभ आवें मधु कर छावें तुम

ढिग लावे चरु चीन्हा। महासेन दुलारे चंद पियारे तन उजियारे जोत धरे। नख दुति पै थारे कमल सुहारे चन्द बिचारे चरण परे। ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय संसारताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत–अक्षत अनियारे निशपति हारे धोय समारे थाल भरूं। अक्षय पद दीजे ढील न कीजे निज लख लीजे पुंज करूं। महासेन दुलारे चंद पियारे तन उजियारेजोत धरे। नख दुतिपै थारे कमल सुहारे चंद विचारे चरणपरे ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प–बहु कुसुम नवीने मैं चुन लीने सौरभ भीनें ल्याय धरे। तिस गंध सुहाई मधुकर छाई भेट कराईदर्प हरे। महासेन दुलारे चंद पियारे तन उजियारे जोत धरे, नख दुति पै थारे कमल सुहारे चंद विचारे चरण परे॥ ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय काम वाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥

नैवेद्य–पकवान सुलीने सितरस भीने तुरत करीने मिष्ट महा। बिडारी शर्मलहा। महासेन दुलारे चं सुहारे चंद विचा

दीप-दीपक उजियारे जोय समारे तम छय कारे जोत घनी। मोहादिक नाशो ज्ञान प्रकाशो हम घट वासो मोक्ष धनी। महासेन दुलारे चंद पियारे तन उजियारे जोत धरे। नख दुतिपै थारे कमल सुहारे चंद बिचारे चरण परे। ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप-शुभ अगर मंगावे तगर रलावे मधुकर आवे कर शोरी। तिस गंध सुहाई दश दिश छाई कर्म जराई जिम होरी। महासेन दुलारे चंद पियारे तन उजियारे जोत धरे। नख दुतियै थारे कमल सुहारे चंद विचारे चरण परे॥ ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वंपामीतिस्वाहा।

फल-फल पक्व नवीने सबरस भीने आय धरीने षट ऋतु के। तुम भेट धराऊं मन हरषाऊं शिवफल पाऊं निज हितके। महासेन दुलारे चंद पियारे तन उजियारे जोत धरे। नख दुतिपैथारे कमल सुहारे चंद विचारे चरण परे। ओं ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ-जल फल वसुलाये मंगल गाये अर्घ बनाये भर थारी। वसु कर्म हनीजे देर न कीजे शिव पुर दीजे सुख भारी। महासेन दुलारे चंद पियारे तन उजियारे जोत धरे। नख दुतिथै थारे कमल सुहारे चंद विचारे चरण परे। ओं ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण

पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंचकल्याणक। छंदभुजँग प्रयात।

गर्भ–तजो बैजयंतं बिमानं अनूपा, सुमाता जिनो की सुलक्षण स्वरूपा। तिसी कूषराजे सबै दोष भोजे, वदी चैत की पंचमी सार साजे॥ ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ जिनेंद्राय चैत्र कृष्ण पंचमी गर्भ कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म–भ्रमर पोष की रुद्र संज्ञा नवीना, तिहूं ज्ञान संयुक्त तब जन्म लीना।सुना सीर आये जजे मेरु लाये, तिहूं लोक में हर्ष आनंद छाये। ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ जिनेंद्राय पौष कृष्ण एकादशी जन्म कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तप–जबै पोष ग्यारस अंधेरी जु आई, तबै भावना द्वादशे आप भाई, पुरीचंद्र त्यागी' धरो ध्यान भारी, सुध्याऊं जिनोंको भये सो अगारी। ॐह्रीं श्रीचंद्र प्रभ जिनेंद्राय पौष कृष्णएकादशी तप कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान–लहो ज्ञान पंचम तबै इंद्र आयो, समोसर्न को ठाठ सभा बीच झेलें गणाधीशव

क

जिनेंद्राय फालगुण कृष्ण सप्तमी मोक्ष
तुम्हें शीस नावें अहोचंद नामी। ओं ह्रीं श्रीचंद्रप्रभ
कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

अथ जयमाला। दोहा।

बपु उतंग धनु डेढसै,शशि अंक छबी देत।
महाअर्घ–माता जास सुलक्षणा, कुंद कलीसम श्वेत। मात सुलक्षणा पूज हूं मैं भली। तास की
छन्द लक्ष्मीधरा–श्रीमहा सेन के नंदना हो बली, तात के धाम की सर्व शोभा बनी। सर्व
कूष में आप आये जबै, गर्भ, कल्याण देवेंद्र कीनो तबै॥२॥ शोकादि भय सबं ही को गयो॥३॥
देवी करें सेव अंबा तनी। गर्भ नवमास आनंद भारी भयो, रोग करत महा आनंदा,आये सब
छंद उपगीता–जन्में चंद जिनंदा, पौष संख्या सुरुद्र की कारी।
देव इंद्र की लारी॥४॥

छंदलक्ष्मी धरा–आईयो इंद्र इंद्रायनी मोदमें, लाईयो प्रेमजा आपको गोदमें। रूप देखो
शुनासीर चक्रित भयो, नाय के भाल ऐरावती पै ठयो॥५॥ जाय के मेरु पै न्हौन कीनो हरी, नम्रता
धार के चरण पूजा करी। जय कृपा धीश तेरी छवी मोहनी, चंद्र की चंद्रिका तैं महा सोहनी॥६॥
एक हजार लेनाम माला रची, नृत्य औगान कीनो तबैं ही शची। फेरला आपको मोद दे मात को,
मे रुकी बारताभाषियो तात को॥७॥

छंदउपगीता–धनदकरेनितसेवा,भूषणवस्त्रादिसुर्गतैंल्यावे। तुमसम वयधरदेवा,क्रीडातुमदेखसर्वहरषावे॥
छंद लक्ष्मी धरा–देख क्रीडा सबै भावते अंगना,दोजकेचंद ज्यों वृद्ध होते जिना। राज कीनो
प्रजा दुःख टाले सवे,नीतियो लक्ष नौ पूर्व आयु तबै ॥९॥ फेर वैरागकी भावना भाइयो,ब्रह्म लोकांतके
देव तहां अइयो। बोध के आपको राह ले धाम की,इंद्र ले पालिकी मोतियादाम की ॥ १० ॥ ता समें
बैठ के जाय उद्यान में, सार दीक्षा लई चित्त दे ध्यान में। चार घाती हने ज्ञान पायो महा, बैठ संवाद
में धर्म सारा कहा ॥ ११ ॥ भव्य को बोधियो लक्ष पूर्वैंतही, फेर सम्मेद पै आप आये सही। योग
नीरोध के नाश अघातियो, बास शिव को लियो ज्ञान में भासियो ॥ १२ ॥ आर्या छंद–
तुम गुण वर्णत हारे,गणधर इंद्रादिक महानामी। हम लघुबुद्ध विचारे, किमवरनें सुगुण तुम स्वामी॥१३॥
छन्द लक्ष्मीधरा–स्वामी दीजे हमें मोक्ष लक्ष्मी धरा, चर्न तेरे तले कोट तीर्थंवरा। ज्यों सुमंत भद्र के
काज में देरना, त्यों कृपा सिंधु मोदास को हेरना ॥ १४ ॥
घत्ता छन्द–तुम गुण में सुंदर नमत पुरंदर जय माला सुख की करनी। जो पढें पढावें हित करगावें
"बखत रतन" सुख की भरनी॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप,
ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महाऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥
अथ आशीर्वादः,आर्याछंद–अहोनामी चंद देवाधि देवा, पूजें ध्यावें तास संसार छेवा।
तिहारी,ते पावैं शाश्वतो सुक्ख भारी॥१६॥इत्याशीर्वादः

९ अथ श्रीपुष्पदन्तजिन पूजा प्रारभ्यते ।

(बखतावरसिंहकृत) छंद कोसमालती ।

स्थापना—काकंदी नगरी में आये तज अपराजित नाम विमान ।
श्वेत वरण लक्षण शफरी पति काय धनुष शत एक प्रमान ।
मातरमा सुग्रीव पिता सुत पुष्प दंत भगवंत महान ।
महिमाऽनंत अनंत गुणाकर सो प्रभु तिष्ठ तिष्ठ इत आन ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंत जिनेंद्र अत्रावतराऽवतर संवौषट् आह्वाननम् ॥
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंत जिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ॥

अथ अष्टक । छन्द पायता ।

जल—जल उत्तम द्रह को लावें, कंचन झारी भर ध्यावें । श्री पुष्पदंत महाराजा, तुम पद पूजत अघभाजा ।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरा रोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चंदन—बावन चंदन घसलाई, ता सौरभ पै अलिछाई । भवताप विनाशनहारे, पद पुष्पदंत जिनथारे ॥

१० अथ श्रीशीतलनाथजिन पूजा प्रारभ्यते ।

(बखतावरसिंह कृत) अडिल ।

स्थापना–शीतल नाथ जिनंद स्वर्ग सोलम चये। भद्दलपुर में आय सुनंदा सुत भये ॥
नब्बे धनुष प्रमाण अंक सुर तरु तनो। तिष्ठ तिष्ठ जिनराज करम रिपु को हनो ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ॥

अथ अष्टक । छंद योगीरासा ।

जल–पंचम उदधि तनो जल निर्मल मुनि मन सम शुचि लावें। मणि भृंगार भराय अनूपम धारदेत सुख पावें ॥ शीतल जिन के युग चरणांबुज पूजूं मन वच काई। रोग शोक दुःख दारिद नाशे भव आताप मिटाई ॥ ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्ममृत्यु जरारोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चंदन-कुंकुम रंग कपूर सुमिश्रित मलिया गिर घस लीनो। तासुगंध पै अलिगण आवें सो लेकर चर चीनो॥ शीतल जिनके युग चरणांबुज पूजूं मन वच काईं। रोग शोक दुख दारिद नाशैं भव आताप मिटाई॥ ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा ताप रोग विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत-अनियारे अक्षत शुभ सुंदर निशि कर सम उजियारे। रतन थार भर तुम ढिगलाऊं पूज करूं अति प्यारे॥ शीतल जिनके युग चरणांबुज पूजूं मनवच काई। रोग शोक दुःख दारिद नाशैं भव आताप मिटाई॥ ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प-मेरु तने अथवा अवनीपर विटप महा छबि छाजे। जिन के सुमन सुमन सम नीकें सौरभ पै अलिराजे॥ शीतल जिन के युग चरणांबुज पूजूं मनवच काई। रोग शोक दुख दारिद नाशैं भव आताप मिटाई॥ ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय कामवाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य-मोदक फेनी घेवर बावर गूंजा आदि मंगाई। घृत रस पूरे रसना रंजन नेवज आन चढ़ाई॥ शीतल जिन के युग चरणांबुज पूजूं मनवच काई। रोग शोक दुख दारिद नाशैं भव आताप मिटाई॥ ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय

क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप–घृत सनेह करपूर बातिका रतन दीप उजियारे। जोय धरे तुम सन्मुख हे जिन मोह अंधानरवारे॥ शीतल जिन के युग चरणाम्बुज पूजूं मनवच काई। रोग शोक दुःख दारिद नाशैं भव आताप मिटाई॥ ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप–कृष्णागर गोसीर सुचंदन ताकी धूप बनाई। स्वर्ण धूपायन में धर खेऊं चहुं दिशि गंधसु छाई॥ शीतल जिनके युग चरणाम्बुज पूजूं मन वचकाई। रोग शोक दुःख दारिद नाशैं भव आताप मिटाई॥ ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल–श्रीफल आम अनार सुकेला एला चिरभट लावें। स्वर्ण थाल में धर अति प्राशुक देखत मन ललचावें॥ शीतल जिन के युग चरणाम्बुज पूजूं मन वचकाई। रोग शोक दुःख दारिद नाशैं भव आताप मिटाई। ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म,तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण-प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ–वारि सुचंदन अक्षत वारिज नेवज विविध प्रकारा। दीप धूप फल वसु विधि लेके अर्घ बनाय

सुधारा ॥ शीतल जिनके युग चरणाम्बुज पूजूं मन वच काई । रोग शोक दुःख दारिद नाशैं भव आताप मिटाई । ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप,ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ पंचकल्याणक । सोरठा ।

गर्भ–आरण स्वर्ग विहाय, आठैं कृष्ण सुचैत की । गर्भ सुनंदा आय, धनद रतन बरखाइयो ॥
ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय चैत्र कृष्णअष्टमी गर्भ कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म–माघ कृष्ण तिथि जान, चक्रेश्वर संज्ञा कही । जन्मे युतत्रय ज्ञान, शीतल शीतल करन को ।
ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय माघ कृष्ण द्वादशी जन्म कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा

तप–जन्म सुदिन तिथि आय, योग धरो बन जाय के । मन पर्यय उपजाय, ध्यायो आतम जिन तबै ॥
ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेंद्राय माघ कृष्ण द्वादशी तप कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

ज्ञान–केवल लब्धि उपाय, पौष कृष्ण चौदस दिना । समवसरन सुख दाय, धनद देव रचना रचो ॥
ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय पौष कृष्ण चतुर्दशी ज्ञान कल्याण प्राप्ताय अर्घंनिर्वपामीतिस्वहा ।

निर्वाण–मोक्ष गये जिनराय, सम्मेदाचल शीसतैं । हम पूजें मन लाय, अष्टमि आश्विन शुक्ल को ॥
ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेंद्राय आश्विन शुक्लाष्टमी मोक्ष कल्याण प्रप्ताय अर्घंनिर्वपामीति स्वाहा ।

क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप–घृत सनेह करपूर बातिका रतन दीप उजियारे। जोय धरे तुम सन्मुख हे जिन मोह अंधानरवारे॥ शीतल जिन के युग चरणाम्बुज पूजूं मनवच काई। रोग शोक दुःख दारिद नाशैं भव आताप मिटाई॥ ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप–कृष्णागर गोसीर सुचंदन ताकी धूप बनाई। स्वर्ण धूपायन में धर खेऊं चहुं दिशि गंधसु छाई॥ शीतल जिनके युग चरणाम्बुज पूजूं मन वचकाई। रोग शोक दुःख दारिद नाशैं भव आताप मिटाई॥ ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल–श्रीफल आम अनार सुकेला एला चिरभट लावें। स्वर्ण थाल में धर अति प्राशुक देखत मन ललचावें॥ शीतल जिन के युग चरणाम्बुज पूजूं मन वचकाई। रोग शोक दुःख दारिद नाशैं भव आताप मिटाई। ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण-प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ–वारि सुचंदन अक्षत वारिज नेवज विविध प्रकारा। दीप धूप फल वसु विधि लेके अर्घं

सुधारा ॥ शीतल जिनके युग चरणाम्बुज पूजूं मन वच काई । रोग शोक दुःख दारिद नाशैं भव आताप मिटाई । ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप,ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ पंचकल्याणक । सोरठा ।

गर्भ–आरण स्वर्ग विहाय, आठैं कृष्ण सुचैत को । गर्भ सुनंदा आय, धनद रतन बरखाइयो ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय चैत्र कृष्णअष्टमी गर्भ कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म–माघ कृष्ण तिथि जान, चक्रेश्वर संज्ञा कही । जन्मे युतत्रय ज्ञान, शीतल शीतल करन को ।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय माघ कृष्ण द्वादशी जन्म कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा

तप–जन्म सुदिन तिथि आय, योग धरो बन जाय के । मन पर्यय उपजाय, ध्यायो आतम जिन तवै॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेंद्राय माघ कृष्ण द्वादशी तप कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

ज्ञान–केवल लब्धि उपाय, पौष कृष्ण चौदस दिना । समवसरन सुख दाय,धनद देव रचना रचो ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय पौष कृष्ण चतुर्दशी ज्ञान कल्याण प्राप्ताय अर्घंनिर्वपामीतिस्वहा ।

निर्वाण –मोक्ष गये जिनराय, सम्मेदाचल शीसतैं । हम पूजें मन लाय, अष्टमि आश्विन शुक्ल को ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेंद्राय आश्विन शुक्लाष्टमी मोक्ष कल्याण प्रप्ताय अर्घंनिर्वपामीति स्वाहा ।

अथ जयमाला। दोहा।

महाअर्घ–शीतलनाथ जिनंद तन, नव्वै धनुष प्रमान। हेमवरण अति सोहनों, सुरतरु लक्षग जान ॥

चौपाई–नमूं नमूं जिन शीतल नाथ। शरणागत को करत सनाथ॥ भवदधि तारण पोत समान। अधम उधारण को भगवान ॥ २ ॥ तज आलस अति हरषित होय। तुमरो दर्श लखे जन कोय ॥ सो होवे निश्चय सरदही। सहस्राक्ष कर दरशत सही ॥ ३ ॥ तुमरो पंथ गहै जे आय। तेशिव पुर को गमन कराय ॥ जो तुमरे गुण गावे ईश। तिन गुण गावे सकल मुनीश ॥ ४ ॥ तुमरे चरण विषे लव लाय। ते जन वीतराग पद पाय। नृत्य करें तुम आगे कोय॥ तिस घर शक्री नटवा होय ॥ ५ ॥ तुम चरणाम्बुज रजशिर लहे। परम औषधी सम शर दहे। कुष्ट आदि सब रोग नसाय। कोटि भानु सम तन दरसाय ॥६॥ जे जन रूप लखें तुम देव। करें कुदेव तनी नही सेव ॥ मकर ध्वज सम रूप रसाल। भव भव तन पावे सुख भाल ॥ ७ ॥ जे वाणी तुमरी चित धरें। अन्य ग्रन्थ शरधा नहिं करें ॥ ते बहु श्रुत के पाठी होय। केवल ज्ञान लहें नर सोय॥ ८ ॥ तुमरो न्होन करे चितधार। सुवरण रतन कलस भर वार॥ ताको मेरु सुदर्शन जाय। मघवा न्होन करे हरषाय ॥ ९ ॥ अष्ट द्रव्य अति प्राशुक लाय। पूजा करे भविक हरषाय ॥ पूजनीक पद पावे सोय। इंद्रादिक कर पूजित होय ॥ १० ॥ भली भांत जानी तुम रीत। भई नाथ मेरे परतीत ॥ यातें चरण कमल में आय। भ्रमर समान

रहूं लवलाय ॥ ११ ॥ भयो सौख्य सो कह्यो न जाय। सकल सिद्धि मैं आज लहाय ॥ तुम गुण को पाऊं नहिं ओर। करूं वीनती युग कर जोर ॥ १२ ॥ वखतावर रतन। इम भनो। हम को दीजे त्रिभुवन धनी ॥ भवभव शरण तिहारी ईश। पावें सदा जु हे जगदीश ॥ १३ ॥

घत्ता छन्द–शीतल गुण केरी माल उजेरी टारत फेरी भवकेरी। जे पूज रचावें मंगल गावें तिन घर रामा है चेरी ॥ १४ ॥ ओं ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ आशीर्वादः–सोरठा–शीतलनाथ जिनंद, जे पूजें मन लाय के।

पढें पाठ सुखकंद, सो पावें संपत अषै ॥ १५ ॥ इत्याशीर्वादः ॥

इति श्रीशीतलनाथजिन पूजा संपूर्णा ॥ १० ॥

११ अथ श्रीश्रेयांसनाथजिन पूजा प्रारभ्यते ।

(बखतावरसिंहकृत) छंद भुजंग प्रयात ।

स्थापना–श्रियांसं जिनेशं सुमेटे कलेशं, पिता बिम्ल के चर्न सेवें सुरेशं ।
पुरी पंच आनन में जन्म लीना, सुथापूं तुम्हें तिष्ठिये हे प्रवीना ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्र अत्रावतराऽवतर संवौषट् आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भवभव वषट् सन्निधीकरणम् ॥

अथ अष्टक। (चाल अठाई रासेको)

जल–हेजी प्राशुक जल शुभ लाय के, कंचन के कलश भराय। हेजी प्राणी सन्मुख धारा देत ही, रागादिक मल नस जाय प्राणी ॥ हेजीश्रेयनाथ पद पूजिये। पूजत सब इन्द्र सुआय प्राणी श्रेयनाथ पद पूजिये ॥ ओं ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरारोग विनाशनाय जलंनिर्वपामीतिस्वाहा ॥

चंदन–हेजी बावन चंदन सीयरो, केसर संग घसाय प्राणी। जिन चरणन अरचा करूं, संसार दाघ मिट जाय प्राणी॥ हेजीश्रेयनाथ पद पूजिये। पूजत सब इन्द्र सुआय प्राणी श्रेयनाथ पद पूजिये।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय गर्भ जन्म तप ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अक्षत-हेजी मुक्ता सम अक्षत लिये, रजनी पति की उनहार, प्राणी । पुंज करे अति सोहने, ते पद पावें अविकार प्राणी ॥ हेजी श्रेयनाथ पद पूजिये । पूजत सब इन्द्र सुआय प्राणी श्रेयनाथ पद पूजिये ॥ ॐह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय गर्भ,जन्म तप ,ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पुष्प-हेजी राय बेल ले केतकी, इन आदिक सुमन अपार प्राणी । चरणन पास चढाइये, दे मदन वान निरवार प्राणी ॥ हेजी श्रेयनाथ पद पूजिये । पूजत सब इन्द्र सुआय प्राणी श्रेयनाथ पद पूजिये । उों ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म,तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय कामवाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

नैवेद्य-हेजी व्यंजन तुरत बनायके,चरु मिष्ट मनोहर आन प्राणी । कंचन थारी में धरे,पूजत ह्वै क्षुधाकी हान प्राणी ॥ हेजी श्रेयनाथ पद पूजिये। पूजत सब इन्द्र सुआय प्राणी श्रेयनाथ पद पूजिये । ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय गर्भ,जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दीप-हेजी रतनन के दीपक बने,घृत पूरित जोत जगाय प्राणी । जगमग जगमग कर रहे जिन आगे

मोह नसाय प्राणी ॥ हेजी श्रेयनाथ पद पूजिये । पूजत सब इन्द्र सुआय प्राणी श्रेयनाथ पद पूजिये । ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप,ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

धूप–हेजी अगर तगर चन्द मिले, दश गंध हुताशन मांह प्राणी । खेवत प्रभु अगै भली, सब अष्ट करम जरजांय प्राणी ॥ हेजीश्रेयनाथ पद पूजिये। पूजत सब इन्द्र सुआय प्राणी श्रेयनाथ पद पूजिये । ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

फल–हेजी श्रीफल सेब अनार ही, पिस्ता बादाम छुहार प्राणी । रतन रकाबी में भरे, ध्यावत पावे शिवनार प्राणी ॥ हेजी श्रेयनाथ पद पूजिये ॥ पूजत सब इन्द्र सुआय प्राणी श्रेयनाथ पद पूजिये ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय गर्भ,जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्घ–हेजी आठों द्रव्य प्रकार के, शुभ अर्घ करो मन लाय प्राणी । श्रेयनाथ आगे धरे, संसार जलधि तिरजाय प्राणी । हेजी श्रेयनाथपद पूजिये ॥ पूजत सब इन्द्र सुआय प्राणी श्रेयनाथ पद पूजिये । ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञाननिर्वाण पंचकल्याण प्राप्तय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ पंचकल्याणक । छंद पायता ।

गर्भ–तजके पुष्पोत्तर आये, विमला माता सुख पाये। अलि जेष्ठ छट्ट को ध्याऊं, तादिन मैं पूज रचाऊं॥
ओंह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय ज्येष्ठ कृष्ण षष्ठी गर्भ कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा।

जन्म–इक्ष्वाक वंश में आई,जन्मे त्रिभुवन सुख दाई । फागन ग्यारस अंधियारी, मैं पूजूं अष्ट प्रकारी ॥
ओंह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय फाल्गुणकृष्ण एकादशी जन्मकल्याण प्राप्तायअर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा।

तप–सब भोग अनित्य निवारे, तप दुर्द्धर श्रीधर धारे। दिन जन्म तनो शुभजानो,हम पूजें दुख सबहानो ॥
ओं ह्रींश्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्राय फाल्गुण कृष्णएकादशी तपः कल्याण प्राप्तायअर्घं निर्वपामीतिस्वाहा

ज्ञान–सूर्येन्दु संगम जानो, तिथि माघकृष्ण उर आनो। शुभ केवल ज्ञान सुपायो,हम तुम पद पूज रचायो॥
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्राय माघकृष्णअमावस्या ज्ञानकल्याण प्राप्ताय अर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा॥

निर्वाण–चारों अघातिया चूरे,शिव मांह बसे सुख पूरे। सम्मेद शैल ते पाई,श्रावण सित पूनम आई॥
ओंह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेंद्राय श्रावण शुक्ल पूर्णिमामोक्ष कल्याण प्राप्ताय अर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा।

अथ जयमाला । दोहा ।

महाअर्घ- अस्सी चाप उतंग तनु, हेम वरण छविदेत। गैंडा लक्षण चर्न में, श्रेयनाथ भव सेत ॥ १ ॥

छन्द पद्धड़ी–जय जय श्रेयांस तुम गुण अनंत, गणधर वरणत पावे न अंत। अतिशय दश सहित जाए जिनंद, पित मात तबै बाढो अनंद ॥ २ ॥ संहनन आदि संस्थान सार, शुभ लक्षण बल बीरज अपार। हित मित कारी तुम वचन जोय, सित श्रोणित तन में मलन होय ॥ ३ ॥ वपु सहित सुगंध न स्वेद होत, तुम रूप देख रवि लजत जोत। फिर समवसरन में दश लहाय, चतुरानन छबि वरनी न जाय ॥ ४ ॥ जय आप करत नभ में विहार, सब जीव लहैं साता अपार। सत योजन लोय सुभिक्ष थाय, उपसर्ग रहित छाया बिहाय ॥ ५ ॥ सब विद्या के ईश्वर महान, नख कच बाढत न अहार मान। चष झपंत नहीं भ्रुकुटी नसाय, धनधान्य जीव तुम दरश पाय ॥ ६ ॥ अमरन कृत चौदह तित सुजान, अवनी दीषत दर्पण समान। षट् ऋतु के फूल दिपैं अपार, सब जंतु मित्रता भाव धार। ॥ ७ ॥ बाजत समीर त्रय गुण समेत, बारिज चर्णन तल छबि सुदेत। दिश निर्मल सब आनंद कंद, गंधोदक बरषत मंद मंद ॥ ८ ॥ है मागधि भाषा अति महान, सब फले अठारह भेद नाम। मल बर्जित सुर नभ जय करंत, शुभ धर्म चक्र आगे चलंत ॥ ९ ॥ वसु मंगल द्रव्य समेत एव, चौंतिस अतिशय कर सहित देव। जय अष्ट प्राति हारज दिपंत, दृग शर्म ज्ञान बीरज अनंत ॥१०॥ इम छियालीस गुण सहित ईश, विहरत आये सम्मेद शीस। तहां प्रकृति पिचासी छीन कीन, शिव जाय विराजे शर्म लीन ॥ ११ ॥ गुण अगुर लघु आदिक लहाय, उत्पादक व्यय ध्रुव सब लखाय। बखतावर रतन कहैं बनाय, मम संकट में हूजे सहाय ॥ १२ ॥

घत्ता छंद-श्रेयांस कृपाला दीनदयाला भव दुःख टाला गुण माला। हम नित प्रति ध्यावैं मंगल गावैं शिव सुख पावैं दर हाला ॥ १३ ॥

ऊँ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ आशीर्वादः। अडिल-श्रेयनाथ जिन तनी सरस पूजा करैं। जे बाचैं यह पाठ हरष उर में धरैं॥ तिन घर ऋद्धि अपार सकल मंगल रलैं। अनुक्रम ते शिव जांय सर्व अघको दलैं॥ १४ ॥

इत्याशीर्वादः। इति श्रीश्रेयांसनाथजिन पूजा सम्पूर्णा ॥ ११ ॥

सुवासु पूज्य देव के पदारविंद लाल हैं। नमें सुरेंद्र चंद्र आय नाय के सुभाल हैं ॥

ओं ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

धूप–करूं जु अग्र तग्र चूर चंदनादि जानिये। दिये अपार कर्म दुःख खेयते सुहानिये ॥

सुवासु पूज्य देव के पदारबिंद लाल हैं। नमें सुरेन्द्र चंद्र आय नाय के सुभाल हैं ॥

ओं ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

फल–अनार अंब सेव पक चिर्भटादि लीजिये। चढाय हूं सरोज चर्न मोक्ष सौख्य दीजिये ॥

सुवासु पूज्य देव के पदार बिंद लाल हैं। नमें सुरेंद्र चन्द्र आय नाय के सुभाल हैं ॥

ओं ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्घ–जल फलादि द्रव्यसार अष्टजो मिलाय के। लाय हूं जिनेश अग्र अर्घ को बनाय के ॥

सुवासु पूज्य देव के पदार बिंद लाल हैं। नमें सुरेंद्र चंद्र आय नाय के सुभाल हैं ॥

ओं ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ पंचकल्याणक। चाल चून्दडी की।

गर्भ-साढ कृष्ण छठ पावनी, गर्भ विषे जिन आय हो। श्रीआदिक देवी सबै, सेवे माता पाय हो॥
गर्भ कल्याणक पूज हूं॥ उों ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय आषाढ कृष्ण षष्ठी गर्भ कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म-फागुण चौदशि कृष्ण ही, जन्मे श्री जिन देव हो। इंद्र तबै गिरि मेरु पै, न्हवन करो कर सेव हो॥
जन्म कल्याणक पूज हूं॥ उों ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय फाल्गुण कृष्ण चतुर्दशी जन्म कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तप-भव तन भोग असार है, कर विचार जिन राय हो। बाल पने दीक्षा लही, जन्म तने दिन आय हो॥
तप कल्याणक पूज हूं॥ उों ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेंद्राय फाल्गुण कृष्ण चतुर्दशी तपः कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

ज्ञान-केवल ज्ञान प्रकाशियो, माघजु दोयज शुक्ल हो। भव्यातम बोधे घने, शुभ विहार जिन कीजहो।
ज्ञान कल्याणक पूज हूं॥उों ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय माघ शुक्ल द्वितीया ज्ञान कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण-योग निरोध किये सबै, चंपापुर बन आय हो। भाद्रों श्वेत चतुर्दशी, मोक्ष जिनेश्वर पाय हो॥

मोक्ष कल्याणक पूज हूं ॥ ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी मोक्ष कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला। दोहा।

महाअर्घ–बाल ब्रह्मचारी प्रभु, अरुण बरण अविकार। सत्तर धनुष सुउच्च तन, वासु पूज्य भवतार॥१॥

भुजंग प्रयात छंद–अजी नाथजी, एक अर्जी हमारी, सुनों चित्त देके कहूं मैं प्रचारी। सबै आप के ज्ञान तेरे सुछाई, कहूं क्या भला मैंने जो दुःख पाई ॥ २ ॥ यही आठ कर्म दिये दुःख भारी, सुनें कौन मेरी करूं जो पुकारी। सबों में अगारी महा मोह राजा, भ्रमायो हमें वहुत कीनों अकाजा। ॥ ३ ॥ दुती ज्ञान वर्न हरी बुद्ध मेरी, न होने दई नाथ ज्ञानं उजेरी। तृती दर्शना बर्न देखन्न देवे, छुटे फंद याको तबै आप बेवे ॥४॥ बली अंतरायं करी जो नवीनी, छती वस्तु मोको जु भोगन्न दीनी। बडो नाम कर्मं सबै जेर कीने, गिने नहिं जावैं इते नाम दीने ॥ ५ ॥ जबै गोत कर्म किया आन फेरो, कभी उच्च कीनो कभी नीच चेरो। कभी सागरों की धरी आय केती, कभी स्वासके भाग में आय एती ॥ ६ ॥ भली बेदनी स्वर्ग के सुक्ख धारे, असाता उदय नर्क में आन डारे। यही बंध मूलं कुभव में भ्रमायो, डरो मैं इन्हों से तेरी शर्णं आयो ॥ ७ ॥ बचावो इन्हों से अजी आप स्वामी, बडो वृद्ध तेरो सबै माहनामी। जिते शर्न आये तिते पार पाये, तिनोंके चरित्रं कथा वेद गाये ॥८॥ सबै देव

देखे नहीं तो समाना, जु कोई धरे तीय कोई कमाना । जबै काम ने आन के शरजु मारे, तबै भ्रष्ट ब्रह्मादि हूवे सुसारे ॥ ९ ॥ तजी आपने मांग बाला तुम्हारी, वरी नाहिं नारी भये ब्रह्मचारी । बहत्तर लख वर्षं की आय सारी, किये नाह राजं बने योग धारी ॥ १० ॥ सबै कर्म जारे गही मोक्षनारी, सुउद्यान चंपापुरी के मंझारी । प्रभु दास को आपनो बास दीजे, जोई आप भावे वही बेग कीजे ॥ ११ ॥

घत्ताछन्द–जैजै जग खंडन सब गुण मंडन बासुपूज्य जिन काम हना । बखता नित ध्यावे मंगल गावे आतम ज्ञान प्रकाश घना ॥ १२ ॥ ओं ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय गर्भ जन्म तप ज्ञान निर्वाणपंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घपदप्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ आशीर्वादः । छप्पय सिंहावलोकन–जो पूजे मन लाय पूजपद ताको होवे, होवे काम स्वरूप सर्व दुःख दारिद खोवे । खोवे सकल अज्ञान करे अनुमोदन कोई, कोई बांचे पाठ तास घर संपति होई । हो इस लोक को छिनकमें, छिन में पावे शिव सिरी । श्रीवासुपूज्य जिन राज को, रतन भली पूजा करी ॥ ३ ॥ इत्याशीर्वादः ॥ इति श्रीवासुपूज्य जिन पूजा संपूर्णाः ॥ १२ ॥

१३ अथ श्री विमलनाथजिन पूजा लिख्यते।

(बखतावरसिंहकृत) छंद।

स्थापना–श्री विमल जिनवर जन्म लीनो नगर कंपिल्या कही।
कृत धर्म के सुत ऊपने जिस मात जय सेन्या सही॥
शूकर चिहन चरनन विराजे तिष्टये इत आय के।
मैं हाथ जोड़ करूं सुविंती थाप हूं सिर नाथ के॥ १॥

ओं ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्र अत्रावतराऽवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ओं ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनम्।
ओं ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भवभव वषट् संन्निधीकरणम्॥

अथ अष्टक। बसंत तिलका छंद।

जल–मुनि मन समसीरं बारि उज्वल सु लाऊं। भर कनक सुझारी धार तोको चढाऊं॥ तुम विमल जिनंदा मात जयसेन नंदा। जजहूं चर्न तेरे काटिये कर्म फंदा॥ ओंह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्ममृत्यु जरारोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।
चंदन–लेय शुभ हर गंध संग कुंकुम रलाऊं, धर रतन कटोरी पूज तेरी रचाऊं॥

मात जयसेन नंदा। जजहूं चर्न तेरे काटिये कर्म फंदा॥ ओंह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म,
तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत-निशि कर सम श्वेतं सार तंदुल नवीने। निर्मल जल धोये पुंजताके करीने। तुम विमल जिनंदा
मात जयसेन नंदा। जजहूं चर्न तेरे काटिये कर्म फंदा॥ ओं ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ,
जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प-सुमन कल्प केरे कुंद बेला चुनाये। उड़त तिस सुगंधा तास पै भौर छाये॥ तुम विमल जिनंदा
मात जयसेन नंदा। जजहूं चर्न तेरे काटिये कर्म फंदा॥ ओं ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ,
जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय काम वाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य-घृत कर कीने चार मोदक जुताजे। भर सुवरण थारं पूजते भूख भाजे॥ तुम विमल जिनंदा
मात जयसेन नंदा। जज हूं चर्न तेरे काटिये कर्म फंदा॥ ओं ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ,
जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप-मणि कनक जड़ाये तास दीवे बनाये। बहु जग मग जोतं थार भर के चढाये॥ तुम विमल जिनंदा
मात जयसेन नंदा। जजहूं चर्न तेरे काटिये कर्म फंदा॥ ओं ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ,
जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धप-अगर तगर गंधं खेय हूं धूप दानं। मम करम दहीजे दीजिये आप थानं॥ तुम विनल जिनंदा

मात जयसेन नंदा। जजहूं चर्न तेरे काटिये कर्म फंदा ॥ ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल–फल मधुर रसीले सेव दाडिम सुलाये। लख ललित अनूपा सर्व इंद्री लुभाये॥ तुम विमल जिनंदा मात जयसेन नंदा। जजहूं चर्न तेरे काटिये कर्म फंदा। ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ–जल फल वसु लेके द्रव्य सारे समारे। कर रतन रकाबी पूज हूं अर्घ धारे॥ तुम विमल जिनंदा मात जयसेन नंदा। जजहूं चर्न तेरे काटिये कर्म फंदा॥ ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंचकल्याणक। चौपाई।

गर्भ–शुक्र सुरग तज आये एव। माता सेन्या गर्भ सुदेव। जेठ कृष्ण दशमी सुखकारि। सेव करें नित छपन कुमारि॥ ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय ज्येष्ठ कृष्ण दशमी गर्भ कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म–माघ श्वेत तिथि तुरी बखान। जन्मे तीन ज्ञान युत आन॥ कंपिल्ला नगरी शुभ सार। भए सु घर घर मंगल चार॥ ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय माघ शुक्र चतुर्थी जन्म कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तप–कारण लख वैराग उपाय, रतन जडित शिविका हरि लाय॥ कानन में तप दुर्द्धर धार, जन्म तनो दिन है अविकार॥ ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय माघ शुक्ल चतुर्थी तपःकल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान–चार घातिया कर्म निवार, केवल जोत जगी सुख कार॥ माघ शुक्ल षष्ठी दिन जोय, हम पद पूजे हरषित होय॥ ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय माघ शुक्ल षष्ठी ज्ञान कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण–भ्रमर षाढ अष्टमके दिना। सम्मेदाचल तें शिव जिना॥ पायो विमल विमल पद श्वेत। हम पद पूजें हरष समेत। ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय आषाढकृष्ण अष्टमी मोक्ष कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला। दोहा।

महाअर्घ–धनुष साठ तन सोहनो, तप्त हेम सम जान। दीजे बुद्धि दयाल मम, वरणू पंचकल्याण॥

छन्द कामिनी मोहन–नाथ विमलेश पद विमल शोभा लहै। इंद्र नागेंद्र नर सेव तेरी गहै॥ जान शुभ जेठ की कृष्ण दशमी दिना। स्वर्ग सहस्रार को त्याग के हे जिना॥ २॥

आर्या छन्द–मति श्रुति अवधि सुलाये, आन विराजे सु कूष माता की। धनद रतन बरषाये, इंद्रादिक करें सेव त्राता की॥ ३॥

छंद कामिनी मोहन–सेव देवी करें सरस अंबा तनी। नगर कंपिल्लका अधिक शोभा बनी॥ मास नौ गर्भ के सार सुख में गये। तात को भूप सब शीस नावत भये॥ ४॥

आर्या छंद–जन्में त्रिभुवन स्वामी, शुकल चतुर्थी माघ की आई। सकल सुरासुर नामी, आसन कंपात शीस सब नाई॥ ५॥

छन्द कामिनी मोहन–शीसको नाय के चलन उमगो हरी। रचो ऐरावती मान के धन घरी॥जासके रदन बहुतास पै सर बने। कमलिनी पत्र पै नृत्य देवी ठने॥

आर्याछंद–ताल मृदंग सुभेरी,बीना बंशी सु चंग सुर नाई। नाचें लेले फेरी,हाव भावसहित सप्त सुरगाई॥

छन्द कामिनी मोहन–गात बहु भांत पग झमक झमक झमकती। छमकछं छमकछं चमकचं चमकती॥ दमकदं दमकदं दामिनीसी भ्रमें। त्रिदश सब देखके शीस तुम को नमें॥

आर्याछंद–इत्यादि शोभ भारी,मघवा ले लार आय पुर मांही। माया मई शिशु धारी,शची लाय इंद्र देय हरषाई

छन्द कामिनी मोहन–लेय गीर्वाण गजराज चढके चले। जाय गिरि मेरु पै सकल ही सुर रले॥ सहस अर आठ तब वारि कलशे भरे। धार तुम शीस पै इंद्र कर ते ढरे॥ १०॥

आर्या छंद–न्हौंन तनी विध सारी। करके श्रृंगार तात घर लाये। नृत्य कियो अति भारी,पूजे पित मात धाम निज ध्याये॥ ११॥

छंदकामिनी मोहन–ध्याय बहु धनद नित सेव थारीकरी। कुमर वय तरुण लह राज पदवी धरी। राज को

छाड बन जाय दीक्षा गही। धार निज ध्यान को कर्म तैं जय लही ॥ १२ ॥

आर्याछंद–पायोकेवलज्ञान, दीनो उपदेश भव्यबहुतारे। शिखर समेद महानं, पाईशिवसिद्धअष्ट गुणधारे ॥

छन्द कामिनी मोहन–धार गुण सिद्ध के आप नामी भये। पूजता अवनि को शक्र निज थल गये ॥
हे दया सिंधु यह टेर सुन लीजिये। दास बखता रतन तास शिव दीजिये ॥ १४ ॥

घत्ता छन्द–जय विमल जिनेश्वर कर्म हनेश्वर दुःख दरिद्र नाशे पलमें। जे पूजा भारी करें तुम्हारी
ते उपजे जा शिवथल में ॥ १५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय
अनर्घ पद प्राप्तये महाअर्घं नि र्पामीति स्वाहा ॥

अथ आशीर्वादः। सोरठा–पूज पढें यह पाठ, अथवा अनुमोदन करें। अष्ट करम को काट, ते पावें
शिव सुख महा ॥ १६ ॥ इत्याशीर्वादः। इति श्रीविमलनाथजिन पूजा संपूर्णा ॥ १३ ॥

१४ अथ श्री अनन्तनाथजिन पूजा प्रारभ्यते ॥

(बखतावरसिंह कृत) माधवी छंद ।

स्थापना—तज के पुष्पोत्तरसार बिमान, पिता हरसेन के पुत्र कहाये ।
जगमात सु सूर्य के नंदन आप, भवो दधितैं भव पार लगाये ॥
जिनऽनंत तुम्हें हम थापत हैं, मन शुद्ध किए अति ही उमगाये ।
जिन नाथ हमें अब कीजे सनाथ, सुदास के काज सबै बन आये ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेंद्र अत्रावतराऽवतर संवौषट् आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथ जिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ॥
ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेंद्र अत्र मम संनिहितो भव भव वषट् संन्निधी करणम् ।

(अथ अष्टक) गीता छंद ।

जल—जोहिमनगिरिपै पदम हृद शुभ, तास को जल लाइये। भरगंध मिश्रित धार दीजे, तृषा रोग नशाइये ॥ श्री नंत जिनवर छबि सुतेरी, देखते नाशैं अरी। इंद्र चंद्र धनेन्द्र चक्री, आनपद सेवाकरी ॥ ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेद्राय गर्भ जन्म तप ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्युजरारोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

चंदन–घनसार गंध घसाय चंदन, कनक थाली में धरो। तुम चरण चरचूं भाव सेती, दाह मेरी सब हरो॥ श्री नंतजिनवर छबि सुतेरी, देखतें नाशें अरी। इंद्र चंद्र धनेन्द्र चक्री, आन पद सेवा करी॥ ॐ ह्रीं श्री अनन्त नाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा ताप रोग विनाशनाय चन्दनंनिर्वपामीति स्वाहा॥

अक्षत–सित फेन गंग तरंग जैसे, सार अक्षत कर लिये। पद अषैदाता के सुढिग में, पुंज नीके धर दिये॥ श्री नंतजिनवर छवि सुतेरी, देखते नाशें अरी॥ इंद्र चंद्र धनेन्द्र चक्री, आनपद सेवा करी॥ ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥

पुष्प–गेंदा गुलाब अरु सेवती जूही चमेली चुन लईं। धारे चरण ढिग सुमन मैं पीडा मनोज तनी गईं॥ श्री नंत जिनवर छबिसुतेरी देखतें नाशें अरी। सब इंद्र चंद्र धनेंद्र चक्री आनपद सेवा करी॥ ॐ ह्रीं अनन्तनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय काम वाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीतिस्वाहा॥

नैवेद्य–पकवान नीके सरस घीके, सितारस में पक रहे। यह क्षुधारोग विनाश मेरी, चरण तेरे लग रहे॥ श्री नंत जिनवर छबि सुतेरी देखते नाशें अरी। सब इंद्र चन्द्र धनेन्द्र चक्री, आन पद

सवा करी ॥ ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

दीप–दीपक नवीने बार दीने, सरस होत उजासका । मम मोहध्वांत विनाश कीजे, सुपर ज्ञान प्रकाशका । श्री नंत जिनवर छबि सुतेरी, देखतें नाशें अरी । सब इंद्र, चंद्र धनेन्द्र चक्री आन पद सेवा करी ॥ ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

धूप–करपूर कृष्णागर सुचंदन, लौंग आदि मिलायहूं । दश गंध खेऊं ढिग तुम्हारे, अष्ट कर्म जराय हूं ॥ श्री नंतजिनवर छबि सु तेरी, देखते नाशें अरी, सब इंद्र चंद्र धनेन्द्र चक्री आन पद सेवा करी ॥ ॐ श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्रायगर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

फल–बादाम पिस्ता दाख दाडिम, पारिकादि मंगाईये । धारूं सुपद ढिग थाल भरके, देत सब सुख पाइये ॥ श्री नंतजिनवर छबि सुतेरी, देखते नाशें अरी । सब इंद्र चंद्र धनेन्द्र चक्री, आन पद सेवा करी ॥ ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञाननिर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्षफल प्राप्तये फलंनिर्वपामीतिस्वाहा ॥

अर्घं–लेवारि गंधमयी सुअक्षत, मन नेव -

ही ॥ श्री नंतजिनवर छबि सुतेरी, देखते नाशें अरी । सब इंद्र चंद्र धनेन्द्र चक्री, आनपद
सेवा करी ॥ ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाणपंचकल्याण
प्राप्ताय अनर्घपदप्राप्तये अर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा ॥

अथ पंचकल्याणक । छंद चोटक ।

गर्भ–कलि कातिक एकम को गिनियें, गरभागम के दिन को भनिये । तज बारम स्वर्ग जिनंद सही,
जननी पद सेव शची जु गही ॥ ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेंद्राय, कार्तिक कृष्ण प्रतिपदा गर्भ
कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

जन्म–जन्में त्रय ज्ञान लिये जिनजी, अलि जेठ दुवादशि के दिनजी। तिहुंलोक विषे जयकार भयो, हरि
सेन नरेन्द्र सुदान दियो ॥ ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेंद्राय ज्येष्ठ कृष्ण द्वादशी जन्म कल्याण
प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

तप–जिन भावत द्वादश भावन कों, करमादिक रोग उडावन को । तम द्वादश जेठ सु कानन में, जिन
जाय लगे निज ध्यानन में ॥ ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेंद्राय ज्येष्ठ कृष्ण द्वादशी तपः कल्याण
प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

ज्ञान–बदि मावस चैतसु ज्ञानबली, जिन पाय जु कर्म समूह दली । शुभ तत्त्व प्रकाशक वायक हैं,

हम पूजत भक्ति बढायक हैं ॥ ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेंद्राय चैत्र कृष्ण अमावस्या ज्ञान कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

निवार्ण-सुसमेदथकी जिनमोक्ष गये,त्रयलोक शिरोमणि सिद्ध भये । गिन चैत अमावस्याके जो दिना, हम ध्यावत शीस नवाय घना ॥ ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेंद्राय चैत कृष्ण अमावस्या मोक्ष कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ जयमाला । दोहा ।

महाअर्घ-व्योम अंगुलन नहिं नपे,उडुगण गिनेन जांय । त्यों तुम सुगुण अनंतहैं,हम से किम बरनांय ॥ पै तुम भक्ति सो हिये मम, प्रेरत हैं बहु आय । तातें सुगुण सुमालिका, पहरूं कंठ बनाय ॥

छंद त्रोटक-जयअनंत जिनेश्वर चर्न नमूं, भव बारिधि तारन तर्न नमूं। जब गर्भ विषे थित आयधरी, धनदेव रची आयुध्या नगरी ॥ ३ ॥ अलि जेठ दुवादशि आय जये, भवजीवन के दुःख दूर गये । सब आयुष लाख जु तीस कही, कुमरापन साढे सात गई ॥ ४ ॥ पंदरै लख बर्ष सुराज किये, कछु कारण पाय सुत्याग दिये। तब ही बन जांय के योग धरो, निज आतम सार विचार करो, ॥ ५ ॥ चव घात तनी सब सैन दली,लहि केवल ज्ञान प्रकाश वली । दिव ध्वन्नि खिरे

गण ईश पचास प्रकाश करे ॥ ६ ॥ चरचा नव तत्त्वतनी सुकही, अणु व्रत महा व्रत सर्व सही । दश धर्म तनें सब भेद कहे, अनुयोग सुने भव शर्मलहे ॥ ७॥ इन आदिक भेद सुनो सब ही, कितने इक योग लियो तब ही । शुभ केतक श्रावक धर्म गहो, बहुतेयक सम्यकसार लहो ॥ ८ ॥ फिर आरज देश बिहार करो, भवि बोध भवोदधिपार धरो । एक मास तनी जद आयु रही, अवनी सम्मेद तनीजु गही ॥ ९ ॥ तहां योग निरोध के मोक्ष गये, सुख लीन महा प्रभु आप भये । तुम ही सब विघ्न विनाशक हो, दुःख जन्म जरा मृत नाशक हो ॥ १० ॥ तुम नाम अधार हिये समरो, जिन पार करो मत देर धरो । बखता रतना इम अर्ज करी, न विलंब करो प्रभु एक घरी ॥ ११ ॥

घत्ताछन्द-यह मंगल माला दुःख सब टाला, सुख संपत छिन में बरनी । सब के मानन को गुण जानन को अष्टम छित में यह धरनी ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय गर्भ जन्म तप ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घपद प्राप्तये महऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ आशीर्वादः । दोहा-श्री अनंत जिनदेव को, जो पूजे चितलाय । पुत्र मित्र धन धान्य यश, तिन घर सदा रहाय ॥ १३ ॥ इत्याशीर्वादः ॥ इति श्रीअनंतनाथ जिन पूजा संपूर्णा ॥ १४ ॥

१५ अथ श्रीधर्मनाथ जिनपूजा प्रारभ्यते ॥

(वखतावरसिंह कृत) कड़खा छन्द ।

स्थापना–छाड विमान सर्वार्थ सिद्धे महामात श्री सुव्रता कूष आये,
पिता नृपभान है भान सम तेज जिस नगर रतनापुरी इंद्र ध्याये ।
लेय गिरि मेरु पै न्हौन करते भये, एक हज्जार कलशे ढुराये,
धर्म जिन पूजिये पाप सब धूजिये थाप हूं चर्न में सीस नाये ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं श्री धर्म नाथ जिनेंद्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेंद्र अत्र मम सन्नहितो भव भव वषट् सन्निधी करणम् ॥

अथ अष्टक । छंद सुंदरी ।

जल–उदक श्वेत जु क्षीर समान ही, सुरन झारी भर कर आन ही । पूज हूं तुम चरन रिसाल जी, धर्म जिनवर धर्म दयाल जी ॥ ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेंद्राय गर्भ जन्म तप ज्ञान निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरारोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

चंदन–घसत कुंकुम चंदन लाइयो, सरस सौरभ पै अलि छाइयो । पूज हूं तुम चरण रिसालजी, धर्म जिनवर धर्म दयालजी ॥ ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय गर्भ जन्म तप ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारातापरोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अक्षत–अक्षत श्वेत महा छबि को धरें, कांति निशपति की देखत टरें । पूज हूं तुम चरण रिसालजी, धर्म जिनवर धर्म दयाल जी ॥ ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पचकल्याण प्राप्ताय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥

पुष्प–सुमन वर्न अनेक प्रकार के, जडत स्वर्ण मई कर धारके। पूज हूं तुम चरण रिसालजी, धर्म जिनवर धर्म दयाल जी ॥ ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाणपंच कल्याण प्राप्ताय कामवाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥

नैवेद्य–लेय नेवज बिविध प्रकार जी, सरकरा मिश्रित भरथार जी । पूजहूं तुम चरण रिसाल जी, धर्म जिनवर धर्म दयालजी । ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

दीप–घृत कपूर तनें दीपक भरे, जोय कर तुम मंदिर में धरे, पूज हूं तुम चरण रिसालजी, धर्म जिनवर धर्म दयालजी ॥ ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाणपंच कल्याण प्राप्ताय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

धूप–सर सुगंध धनंजय लहकती, खेय हूं दशगंध सु महकती। पूज हूं तुम चरण रिसालजी, धर्म जिनवर धर्म दयालजी॥ ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥

फल–जायफल लौंगादिक कर लिये, थाल भर तुम आगे धर दिये। पूज हूं तुम चरण रिसालजी, धर्म जिनवर धर्म दयालजी॥ ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा॥

अर्घ–जल फलादिक मिष्ट मिलायके, करूं अर्घ सु तुम गुण गायके। पूज हूं तुम चरण रिसालजी, धर्म जिनवर धर्म दयालजी॥ ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय अनर्घपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

अथ पंच कल्याणक। दोहा।

गर्भ–अंधियारी वैशाख की, तेरस तिथी सु जान। मात सुव्रता गर्भ में, पुष्पोत्तर तज आन॥
ॐ ह्रींश्रीधर्मनाथ जिनेंद्रायवैशाखकृष्ण त्रयोदशी गर्भकल्याणप्राप्ताय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा॥

जन्म–माघ शुकल तेरस विषे, दश अतिशय धरमेश। जनमे हरि सुर गिरिजजे, हम पूजें हरषेश॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथजिनेंद्रायमाघशुक्लात्रयोदशी जन्मकल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा॥

तप–श्वेत माघ तेरस भली, योग धरो वन जाय। मन पर्ययलह ज्ञान जिन आतम

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेंद्राय माघ शुक्ल त्रयोदशी तपः कल्याण प्राप्ताय अर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा ॥
ज्ञान–चार घातिया नाशके, केवलज्ञान प्रकाश । समवसरन लक्ष्मी सहित, पूनम पौष उजास ॥
ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय पौष शुक्ल पूर्णिमा ज्ञान कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा ॥
निर्वाण–इंदुतनीतिथि जेठकी,संज्ञा ध्यान बखान । जगत पूज्य शिव पाइयो, सम्मेदाचल जान ॥
ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय ज्येष्ठशुक्लचतुर्थी मोक्षकल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा ॥

अथ जयमाला–दोहा ।

महाअर्घ–धर्मनाथ जिनकी छबी, कंचन वर्ण दिपंत । उन्नत पैतालिस धनुष वज्र चिह्न शोभंत ॥१॥

अडिल–धर्मजिनेश्वर देव नमूं शिरनायके, सर्वारथ सिध त्याग रतनपुर आयके । पिता भानु महाराज सुब्रता मातजी,तिनके सुत तुम भये जगत विख्यातजी॥२॥बरष लाख दश आयु भली तुमने लई,बरष अढाई लाख कुमरपन में गई। पांच लाख जिन वर्ष राज तुमनें कियो,सब परजा दुःख टाल र यश जगमें लियो ॥ ३ ॥ कछु कारण लख राज त्याग बन में गये, पण मुष्टी कचलौंच परिग्रह तज दये । हुवे सहस अवनीश आपके संग तबै, भये दिगंबर रूप वरत धारे सबै ॥४॥ धर षष्ठम उपवास ध्यान में थिर भये, बर्द्धमानपुर माहिं असन हितको गये । धर्मसेन तहां राय सु भोजन पय दिये,नवधा भक्ति जुधार सप्त गुणको लिये॥५॥ पंचाश्चर्य महान तास घरमें भये,कर भोजन महाराज फेर कानन

गये । करत तपस्या घोर बर्ष इक यूं गयो,चारों कर्म नशाय ज्ञान केवल लयो ॥६॥ समवसरन के माहिं सकल रचना रची, आये सब सुर बृन्द सु जय जय धुन मचा । करें इंद्र तुम स्तुती पूज रचाय के, दोष अठारह रहित सु बरने गायके ॥ ७ ॥ गुण छालिस तुम माह बिराजे देवजी, तिंतालिस गण ईशकरें तुम सेवजी । भव्य जीव निस्तारन को तुमने सही, करो बिहार महान आर्य देशन कही ॥ ८ ॥ अंग बंग पंचाल मिसर गुतरातजी, काशी कौशल मगध देश विख्यात जी । देकर बहु उपदेश जीव तारे घने, गिरि सम्मेद पै आय अघाती सब हने ॥ ९ ॥ भये सिद्ध महाराज अष्टगुणमयसदा, फेर नहीं इस मांहि जिना आवन कदा। जो यह मंगल पाठ तुमारो चितधरे, सिंह चोर जल सर्प उपद्रव सब टरे ॥१०॥ करूं बीनती आपतनी निज काजजी,तुम ही बडे दयालु सुनो जिनराजजी। बखतावर अर रतन नमें शिर नायके, कीजे मम कल्याण टेर सुन आयके ॥ ११ ॥

घत्ता छन्द-यह वर गुण माला धर्म रसाला कंठ मांह जे धरें त्रिकाल । शुभज्ञान बढावें : नसावें शिवपुर को पावें दरहाल ॥ ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय गर्भ = पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पदप्राप्तये महार्घं निर्वंपामीति

अथ आशीर्वादः । बसंत तिलका

रिद्धि भारी ।

१६ अथ श्री शान्तनाथ जिन पूजा प्रारभ्यते ॥

(बखतावरसिंहकृत) रोडक छंद।

स्थापना–सर्वारथ सुविमान त्याग गजपुर में आये। विश्वसेन भूपाल तास के नंद कहाये ॥
पंचम चक्री भये दर्प द्वादश में राजे। मैं सेवूं तुम चरण तिष्ठिये ज्यों दुःख भाजे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्र अत्रावतराऽवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भवभव वषट् सन्निधीकरणम्।

अथ अष्टक। कोशमालती छंद।

जल–पंचम उदधि तनो जल निरमल कंचन कलश भरे हरषाय। धार देत ही श्रीजिन सन्मुख जन्म जरामृत दूर भगाय ॥ शांतिनाथ पंचम चक्रेश्वर द्वादश मदन तनो पद पाय। तिन के चरण कमल के पूजे रोग शोक दुःख दारिद जाय ॥ ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरा रोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन–मलयागिर चंदन कदली नंदन कुंकुम जल के संग घसाय। भव आताप विनाशन कारण चरचूं

पूजे रोग शोक दुख दारिद जाय ॥ ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

(अथ पंच कल्याणक) छन्द उपगीत।

गर्भ–भाद्रव सप्तमि श्यामा, सर्वार्थत्याग नागपुर आये। माता ऐरा नामा, मैं पूजूं ध्याऊं अर्घ शुभलाये॥
ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ जिनेंद्राय भाद्रपदकृष्ण सप्तमी गर्भ कल्याणप्राप्ताय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा॥

जन्म–जन्मे तीरथंकर जेठ असित चतुर्दशी सोहै। हरिगण नावें माथ, मैं पूजूं शांति चरण युग जोहै॥
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेंद्राय ज्येष्ठकृष्ण चतुर्दशीजन्म कल्याणप्राप्ताय अर्घंनिर्वपामीति स्वाहा॥

तप–चौदस जेठ अंधारी, काननमें जाय योग प्रभु दीन्हा। नवनिधिरतन सुछारी, मैं वंदूं आतमसारि
ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ जिनेंद्राय ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दशी तपः कल्याणप्राप्ताय

ज्ञान–पौष दसें उजियारा, अर घात ज्ञानभानजिन पाय
ओं ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेंद्राय

निर्वाण–सम्मेद

अथ जयमाला छप्पय छंद।

महाअर्घ—भये आप जिन देव जगत में सुख विस्तारे,तारे भव्य अनेक तिनोंके संकट टारे। टारे आठों
कर्म मोक्ष सुख तिन को भारी,भारी बृद्ध निहार लही मैं शर्ण तिहारी ॥चरणन को सिरनायहूं,
दुःख दारिद्र संताप हर। हर सकल कर्म छिन एक में, शांति जिनेश्वर शांति कर ॥ १ ॥
दोहा—सारंग लक्षण चरण में, उन्नत धनु चालीस। हाटक वर्न शरीर दुति, नमूं शांति जगईश ॥ २॥
छंदभुजंग प्रयात—प्रभु आपने सर्व के फंद तोडे, गिनाऊं कछूमैं तिनो नाम थोडे। पडो अंबुधै
बीच श्रीपाल आई। जपो नाम तेरो भए थे सहाई ॥३॥ धरो रायने सेठ को सूलिका पै, जपी आपके
नाम की सार जापै। भये थे सहाई तबै देव आये,करी फूल वर्षा सु बिष्टर बनाये ॥४॥ तबै लाख के
धामसबही प्रजारी, भयो पांडवों पै महा कष्ट भारी। जबै नाम तेरे तनी टेर कीनी, करी थी बिदुर ने
वही राह दीनी ॥ ५ ॥ हरी द्रोपदी धातुकी खंड मांही, तुम्हीं हो सहाई भला और नांही। लियो नाम
तेरो भलो शील पालो, बचाई तहां ते सबै दुःख टालो ॥ ६ ॥ जबै जानकी राम ने जो निकारी,
धरे गर्भ को भार उद्यान डारी। रटो नाम तेरो सबै सौख्यदाई, करी दूर पीडा सु छिन्ना लगाई ॥७॥
विखल सात सेवें करें तस्कराई, सुअंजन्न त्यारो घडीं ना लगाई। सहे अंजना चंदना दुःख जेते,
गये भाग सारे जरा नाम लेते ॥८॥ घडे बीच में सास ने नाग डारो, भलो नाम तेरोजु सोमा संभारो॥

गई काढने को भई फूल माला, भई है विख्यातं सवै दुःख टाला ॥ ९ ॥ इन्हें आदि देके कहां लो वखानें, सुनो वृच्छ भारी तिहूं लोक जानें। अजी नाथ मेरी जरा ओर हेरों, वडी नाव तेरी रती बोझ मेरो ॥ १० ॥ गहो हाथ स्वामी करो वेग पारा, कहूं क्या अवै आपनी मैं पुकारा। सवै ज्ञान के बीच भासी तुम्हारे, करो देर नांही अहो संत प्यारे ॥ ११ ॥

घत्ता छंद—श्रीशांति तुम्हारी कीरति भारी सुन नर नारी गुण माला। वखतावर ध्यावे रतनसुगावे मम दुःख दारिद सब टाला ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घपद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ आशीर्वादः। शिखरिणी छंद—अजी ऐरानंदं छवि लखत है आय अरनं, धरें लज्जा भारी करत थुति सो लाग चरनं। करे सेवा कोई लहत सुख सोसार छिन में, घनें दीना त्यारे हम चहत हैं बास तिन में ॥ १३ ॥ इति आशीर्वादः। इति श्रीशांतिनाथजिन पूजा संपूर्णा ॥ १६ ॥

१७ अथ श्री कुन्थुनाथजिन पूजा लिख्यते.

बखतावर सिंह कृत। छन्द।

स्थापना–गजपुर नगर मझार भान प्रभु भूपजी, कुंथुनाथ जिन पुत्र भये सुख रूपजी।
लक्षण अजा अनूप मात लक्ष्मीमती, तुंग धनुष पैंतीस तिष्ठ करुणापती॥ १॥
ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेंद्र अत्रावतराऽवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधी करणम्॥

अथ अष्टक। त्रिभंगी छंद।

जल–पद्महृदनीरं गंधगहीरं अमल सहीरं भर लायो, कंचन मय झारी भर सुखकारी पूज तिहारी कर धायो। श्री कुंथुदयालं जगरिछपालं हन भव जालं गुण मालं। तेरम मक्रेश्वर षट्चक्रेश्वर विघन हनेश्वर दुख टालं॥ ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरारोग विनाशनाय जलंनिर्वपामीति स्वाहा॥

चंदन–घस चंदन बावन दाह मिटावन निरमल पावन सुखकारी, तुम चरण चढाऊं दाह नसाऊं शिवपुर पाऊं हित धारी। श्री कुंथु दयालं जग रिछपालं हन भव जालं गुण मालं, तेरम

मक्केश्वर षटचक्रेश्वर विघन हनेश्वर दुख टालं। ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारातापरोग विनाशनायचन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अक्षत–अक्षत अनियारे प्राशुक धारे पुंज समारे तुम आगे, अक्षय पद दीजे बिलम न कीजे निज लख लीजे सुख जागे। श्री कुंथुदयालं जगरिछपालं हन भव जालं गुणमालं, तेरम मक्केश्वर षट् चक्रेश्वर विघन हनेश्वर दुख टालं ॥ ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥

पुष्प–वर कुसम सुवासं अमल बिकाशं षट् पद रासं गुंजकरा, भर कंचन थारी तुम ढिग धारी काम निवारी सौख्य करा। श्रीकुंथुदयालं जग रिछपालं हन भव जालं गुणमालं, तेरम मक्केश्वर षट् चक्रेश्वर विघन हनेश्वर दुख टालं ॥ ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेंद्राय गर्भ जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय कामवाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥

नैवेद्य–पकवान सुकीनें तुरत नवीनें सित रस भीने मिष्ट महा, तुम पद तल धारे नेवज सारे क्षुधा निवारे शर्म लहा। श्री कुंथुदयालं जग रिछपालं हन भव जालं गुण मालं। तेरम मक्केश्वर षट् चक्रेश्वर विघन हनेश्वर दुख टालं। ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

दीप–दीपक उजियारे तम क्षय कारे जोय समारे स्वर्ण मई, मोह अंधबिनाशी निज परकाशी हम घट

भासी ज्ञान लई । श्री कुंथुदयालं जगरिछपालं हन भव जालं गुण मालं, तेरम मक्रेश्वर षट् चक्रेश्वर विघन हनेश्वर दुख टालं ॥ ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

धूप–दशगंध मिलावें परिमल आवें अलिगण छावें कर शोरी, संग अगनि जराऊं कर्म नसाऊं पुण्य बढाऊं कर जोरी । श्री कुंथुदयालं जग रिछपालं हन भव जालं गुणमालं, तेरम मक्रेश्वर षट् चक्रेश्वर विघन हनेश्वर दुख टालं ॥ ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

फल–श्रीफल सहकारं लौंग अनारं अमल अपारं सब रुतके। तुम चरण चढाऊं गुण गण गाऊं शिव-फल पाऊं विधि हत के । श्री कुंथुदयालं जग रिछपालं हनभव जालं गुण मालं, तेरम मक्रेश्वर षट् चक्रेश्वर विघन हनेश्वर दुख टालं ॥ ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अर्घ–जलफल बसु लीजे अर्घ करीजे पूज रचीजे दुख हारी, संसार हनीजे शिवपद दीजे ढील न कीजे बलिहारी । श्रीकुंथुदयालं जगरिछपालं हनभव जालं गुण मालं, तेरम मक्रेश्वर षट् चक्रेश्वर विघन हनेश्वर दुख टालं ॥ ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय अनर्घपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ पंचकल्याणक।

गर्भ-भ्रमर सावन दशमी गाइयो, कूष मात श्रीकांता आइयो। धनद देव आय बरषाकरो, हम जजें धन मान वही घरी ॥ ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेंद्राय श्रावण कृष्ण दशमी गर्भ कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

जन्म-कुंथु जिनवर जन्म लियो जबै, हरिन के विष्टर कांपेतबै, शुकल एकम जान बैशाखजी, हम जजे करके अभिलाष जी ॥ ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेंद्राय वैशाख शुक्ल प्रतिपदा जन्म कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

तप-जनम को दिन पावन आइयो, चित बिषे बैराग सुभाइयो। राज षट् खंड को तुम त्यागियो, ध्यान में प्रभु आप सुलागियो ॥ ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेंद्राय बैशाख शुक्लप्रतिपदा तपः कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

ज्ञान-चैत उजियारी तृतिया जु है, जिन सुपायो केवल ज्ञान है। सभा द्वादश में वृष भाषियो, भव्य जन सुन के रस चाखियो ॥ ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेंद्राय चैत्र शुक्लतृतीया ज्ञान कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

निर्वाण-कर सुयोग निरोध महान है, गिरि समेदथकी निरवान है। प्रतिपदा बैशाख उजास में

शिवपुर दो निजबास में ॥ ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेंद्राय बैशाख शुक्ल प्रतिपदा मोक्ष कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ जयमाला। दोहा।

कीड़ीकुंजर कुंथवा, सब जीवन रछपाल। कुंथुनाथ पद नमन कर बरनूं तिन गुणमाल ॥१॥

छंद पद्धड़ी–जय जय श्रीकुंथु जिनंद चंद, जय जय श्रीभानु नरेन्द्र नंद। उपजे गजपुर नगरी मझार, लीजे स्वामी मो को उबार ॥ २ ॥ जय काम रूप शोभा अमान, जय भव्य कमल को रवि समान। जय अजर अमर पद देनहार, लीजे स्वामी मो को उबार ॥ ३ ॥ चय चक्रवर्ति पद को लहाय, जय नव निधि चौदह रतन पाय। सिर नावत नृप बत्तिस हजार, लीजे स्वामी मो को उबार। ॥ ४ ॥ जय नार छानवें सहस जोय, जय रूप लखे रवि थकित होय। इत्यादि सौज शोभे अपार, लीजे स्वामी मो को उबार ॥ ५ ॥ जय भोगन बर्ष गये महान, जय सवा इकत्तर सहसजान, कछु कारण लख संबेग धार, लीजे स्वामी मो को उबार ॥६॥ जय गजपुर नग्री तज दयाल, जय सिद्धन को कर नमन भाल। जय तज दीने सब ही सिंगार,लीजे स्वामी मोको उबार॥७॥ जय पंच महाब्रत धरण धीर, जय मन परजय पायो गहीर। जय षष्ठम को शुभ नेमधार, लीजे स्वामी मो को उबार जय मंदिरपुर में दत्तराय, जय तिन घर पारण को कराय। जय पंचाश्चर्यभये अपार, लीजे स्वामी

मो को उबार ॥ ९ ॥ जय मौन सहित बहुधरत ध्यान, जय षोडश वर्ष गये सुजान। चवघाति कर्म कीने निवार, लीजे स्वामी मो को उबार ॥ १० ॥ जय केवल ज्ञान जगो रिसाल, जय तत्व प्रकाशे तुम दयाल। सब भव्य बोध भव सिंधुतार, लीजे स्वामी मो को उबार ॥ ११ ॥ जय आरज देशन कर विहार, जय आये गिरि संमेद सार। सब विधि हन पाईं मोक्षनार, लीजे स्वामी मो को उबार ॥१२॥ जय जग जीवन के तुम दयाल, जय तुम ध्यावत हूए निहाल। जय दारिद गिरि नाशन कुठार, लीजे स्वामी मो को उबार ॥ ३ ॥ जय सिद्धथान के बसन हार, बखता रतना की यह पुकार। मो दीजे निज आवास सार, लीजे स्वामी मो को उबार ॥ १४ ॥

घत्ता छन्द–यह दुःख विनाशन सुख परकाशन जयमाला अघ की टरनी। मैं तुम पद ध्याऊं पूज रचाऊं शिवपद पाऊं भव हरनी ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेंद्राय गर्भ जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय अनर्घपद प्राप्तये महाऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ आशीर्वादः। दोहा–कुन्थु जिनेश्वर देव को, जो पूजे मन लाय। पुत्र मित्र सुख संपदा, तिन घर सदा रहाय ॥ १६ ॥ इत्याशीर्वादः॥ इति श्री कुन्थुनाथजिन पूजा संपूर्णा ॥ १७ ॥

१८ अथ श्रीअरनाथजिन पूजा प्रारभ्यते ।

(बखतावरसिंहकृत) त्रिभंगी छंद ।

स्थापना–हथनापुर आये भवि मन भाये पिता सुदर्शन राजा है ।
मित्रादे माता सब सुख दाता तिन की कूष बिराजा है ॥
धनु तीस विराजे अति छबि छाजे लक्षण मीन जु पाया है ।
तिष्ठो जिनदेवा करहूं सेवा कर तें पुष्प चढाया है ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथ जिनेन्द्र अत्रावतराऽवतर संवौषट् आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं श्रीअरनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्रीअरनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भवभव वषट् सन्निधीकरणम् ॥

अथ अष्टक । चाल "सुगुण हमध्यावें" की ।

जल–जय निर्मल जल सुन्दर सुख कारी । जय जजत सुप्रासुक भरके झारी । सो प्रभु हम ध्यावें । जय पूजत इंद्र धनेंद्र जु आवें । जय तीर्थंकर चक्रेश्वर स्वामी । जय कामदेव अरजिन शिव गामी ! जी प्रभु हम ध्यावें ॥ ॐ ह्रीं श्रीअरनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्ममृत्यु जरा रोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चंदन–जय चंदन घस गोसीर सुलावें। जय पूजत ही भव दाघ मिटावें। सो प्रभु हम ध्यावें। जय पूजत इंद्र धनेंद्रजु आवें। जय तीर्थंकर चक्रेश्वर स्वामी। जय कामदेव अर जिन शिव गामी। जी प्रभु हम ध्यावें। ॐ ह्रीं श्रीअरनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत–जय चंद किरन सम अक्षत लीजे। जय ताके पुंज सुसन्मुख कीजे। सो प्रभु हम ध्यावें। जय पूजत इंद्र धनेन्द्र जुआवें। जयतीर्थंकर चक्रेश्वर स्वामी। जय कामदेव अर जिन शिव गामी। जी प्रभु हम ध्यावें॥ ॐ ह्रीं श्रीअरनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प–जय पंच वरण सुमन सुताजे। जय भेट धरत मकरध्वज भाजे। सो प्रभु हम ध्यावें। जय पूजत इन्द्र धनेंद्र जु आवें, जय तीर्थंकर चक्रेश्वर स्वामी। जय कामदेव अर जिन शिव गामी॥ जी प्रभु हम ध्यावें॥ ॐ ह्रीं श्रीअरनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय काम वाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य–जयसुर घृत कर पकवाननवीने। जय भरसु रकाबी पद चर चीने। सों प्रभुहम ध्यावें। जयतीर्थंकर चक्रेश्वर स्वामी। जय कामदेव अरजिन शिवगामी। जी प्रभु हम ध्यावें॥ ॐ ह्रीं श्रीअरनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पं

दीप–जय दीपक मणिमय जोति प्रकाशे । जय ध्यावत ही मोह अंध विनाशे ॥ सो प्रभु हम ध्यावें । जय
पूजत इन्द्र धनेन्द्र जु आवें । जय तीर्थंकर चक्रेश्वर स्वामी । जय कामदेव अर जिन शिव
गामी ॥ जी प्रभु हम ध्यावें ॥ ओं ह्रीं श्रीअरनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण
पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

धूप–जय संग धनंजय धूप दहीजे । जय खेवत अष्ट करम सब छीजे ॥ सो प्रभु हम ध्यावें ॥ जय
पूजत इन्द्र धनेन्द्र जु आवें जय तीर्थंकर चक्रेश्वर स्वामी । जय कामदेव अर जिन शिव गामी
जी प्रभु हमध्यावें ॥ ओं ह्रीं श्रीअरनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण
प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

फल–जय आंब कपित्थ लौंग भर थारी । जय पूजत शिव फल पाऊं भारी ॥ सो प्रभु हम ध्यावें ॥ जय
पूजत इन्द्र धनेंद्र जु आवें जय तीर्थंकर चक्रेश्वर स्वामी । जय कामदेव अर जिन शिव गामी ॥
जी प्रभु हम ध्यावें ॥ ओं ह्रीं श्रीअरनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण
प्राप्ताय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्घ–जय जलफलादि बसु द्रव्य समारे । जय अर्घ बनाय चरण तले धारे ॥ सो प्रभु हम ध्यावें ॥ जय
पूजत इंद्र धनेन्द्र जु आवे ॥ जय तीर्थंकर चक्रेश्वर स्वामी । जय कामदेव अर जिन शिव गामी ॥

जी प्रभु हम ध्यवें ॥ ओं ह्रीं श्रीअरनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ पंचकल्याणक । छंद मोती दाम ।

गर्भ—जुफागण की तृतिया सितजान । वसे जिन मात सुगर्भ महान । तबै धनदेव करें नित सेव । अनेक प्रकार उछाह भरेव ॥ ओं ह्रीं श्रीअरनाथ जिनेन्द्राय फाल्गुण शुक्ल तृतीया गर्भ कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जन्म—जये अरनाथ जिनंद अनूप । भये हरि चकित देख स्वरूप ॥ सुदी तिथि चौदस जान अघन्न । जय होत भयो जग धन्न सुधन्न ॥ ओं ह्रीं श्रीअरनाथ जिनेन्द्राय मार्गशिर शुक्ल चतुर्दशी जन्म कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

तप—तजी तुम नार सु छानु हजार । कियो निज आतम सार विचार ॥ देशैं शुभ मारग मास जु आय । चतुर्थम ज्ञान जिनंद उपाय ॥ ओं ह्रीं श्रीअरनाथ जिनेन्द्राय मार्गशिर शुक्ल दशमी तपः प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

म ॥ भयो तब केवल भानु

निर्वाण-सुयोग निरोध किये अरि घात। मावस चैत जु मास सुहात ॥ वरी शिव नारि भये जब सिद्ध। जजैं हम चर्न लहें सत्र ऋद्ध ॥ ॐ ह्रीं श्रीअरनाथ जिनेन्द्राय चैत्र कृष्ण अमावस्या मोक्ष कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला। दोहा।

महाअर्घ-अष्टादश तीर्थेश पद, सप्तम चक्रीदेव। लह मनोज पद चौदमो, करूं सुतुम पद सेव ॥

चाल पंचकल्याणक की-अपराजित तज के भये, गजपुर नगर मझार। मित्रादेवी कूष में, आये जिन सुख कार ॥ तार तार अर नाथ जी ॥ २ ॥ जन्मे युत त्रय ज्ञान जी, दश अतिशय ले आप। कनक वरण तन सोहनो, उन्नत तीस सुचाप ॥ तार तार अर नाथ जी ॥ ३ ॥ वरष चौरासी सहस की, आयु लही जगदीश। पाव गई कुमरा पने, राज कियो फिर ईश ॥ तार तार अर नाथ जी ॥ ४ ॥ सहस बयालिस भोगियो, सहस छानवें नार। चक्रवर्ति पद की विभो, गिनत न पावें पार ॥ तार तार अरनाथ जी ॥ ५ ॥ कारण लख विरकत भये, जगत अनित्य विचार। लौकांतिक सुर आय के, नमत भये पद सार ॥ तार तार अर नाथ जी ॥ ६ ॥ जंवू तरु तल जाय के, सहस भूप ले संग। पण मुष्टी कच लौंचियो, षष्ठम धार अभंग ॥ तार तार अर नाथ जी ॥ ७ ॥ नाग पुरी नगरी गये अशन हेत महाराज। अपराजित कर पै दियो, बरखे रतन समाज ॥ तार तार अरनाथ जी ॥८॥

षोडशवर्ष किये भले, उग्र उग्र तप घोर। घोर कर्म सब जारके, पायो केवल भोर ॥ तार तार अरनाथ जी ॥ योजन साढे तीन ही, समवशरण रच देव। सप्त भंग बाणी खिरे, सुन सुर नर शरधेव ॥ तार तार अर नाथ जी ॥ १० ॥ आरज देशन के जिते, बोधे भव्य अपार। चार संघ सोहत भले, मुनि आदिक व्रत धार ॥ तार तार अरनाथ जी ॥ ११ ॥ वरष इकीस हजार ही, कर उपदेश महान। सम्मेदागिरि आय के, योग निरोध सुठान ॥ तार तार अरनाथ जी ॥ चार अघाती हानके, जाय वरी शिव नार। लोकालोक निहारियो, पायो भव दधि पार ॥ तार तार अरनाथ जी ॥ १३ ॥ बखतावर विनती करे, सुनियें दीन दयाल ॥ रतन तनें दुख मेटिये, आवागमन सुटाल ॥ तार तार अरनाथ जी ॥

घत्ताछन्द–अरनाथ सुवाणी सुन भव प्राणी, आरति हानी सुख दानी। यह बिनती मेरी निज हित केरी, हर भव फेरी तुम ज्ञानी ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीअरनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ आशीर्वादः। चौबोला चाल–जो पूजें मन लाय पाय अर जिनवर स्वामी। पुत्र मित्र धन लहैं सार जग में है नामी। जो वाचे मन लाय त्रास जम के मिट जावें। ते पावें भव पार फेर जग में नहिं आवें ॥ इत्याशीर्वादः। इति श्रीअरनाथजिन पूजा संपूर्णा ॥ १८ ॥

१९ अथ मल्लिनाथजिन पूजा प्रारम्यते।

बखतावरसिंह कृत (कवित्त)

स्थापना—अपराजित सु विमान त्यागकर आये मिथिला नगर मझार।
कुंभराय राजा तहां सोहे, प्रजावती तिन के पट नार॥
तिन के घर तुम जन्म लियो श्रीमल्लि जिनेश्वर करुणा धार।
सो प्रभु तिष्ठ आय यह थानक दास तनें सब कर्म निवार॥ १॥

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेंद्र अत्रावतराऽवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् संन्निधी करणम्।

अथ अष्टक। छंद गीता॥

जल-पंचम उदधि को नीर निर्मल भर सुझारी लीजिये, तुम चरण के ढिग धार देऊं तृषानाशन कीजिये। श्रीमल्लि जिनवर अतुल योधा कामतें प्रभु जय लही, तिहुं लोक में तुम सम न देखे शरण चरणान की गही। ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच-कल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरा रोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥

चंदन-चौपाई। चंदन मलयागिरि घसलाय, कनक कटोरी भर सुखदाय। मल्लि जिनेश्वर के पदसार, चरचूं मन बच तन हितधार। ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा॥

अक्षत-छन्द(योगीरासा) मुक्ता की सम उज्वल अक्षत पावन धोय सुलीनें। कनक रकाबी में शुभ कर के पुंज जो सन्मुख कीनें। मल्लि जिनेश्वर मदन हनेश्वर ध्यावत सुर नर सारे। रत्नत्रय निधि देऊ अनूपम भव दधितें भवितारे। ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥

पुष्प-(चाल अठाई पूजा की) चंपादिक फूल मंगाय तापै अलिछाये। यह काम बान नसजाय तुम पद को ध्याये। श्रीमल्लि जिनेश्वर देव छबि तेरी प्यारी। तुम बालपनें महाराज काम व्यथा टारी। ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय काम वाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य-(छन्द बसंत तिलका) खाजे जुघेवर अपार मंगाय ताजे, पूजूं जिनंद तुम पाद छुधादि भाजे। तोही समान तिहुं लोक विषें न हेरा, श्रीमल्लिनाथ भव वास निवार मेरा। ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप-(छंद त्रिभंगी) दीपक उजियारं अंध निवारं बहु सुख धारं जोति धरे। पद अंबुज थारे ता ढिग

धारे ज्ञान उजारे मोह हरे। श्रीमल्लिजिनेशं मदन हनेशं जगत महेशं तीर्थेशं। भवि कमल दिनेशं कुमुद निशेशं भव पोतेशं परमेशं। उों ह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप–(सुंदरी छंद) गंध दश विध की अति लेय हूं, अमर जिह्व विषे धर खेय हूं। मल्लि जिनवर के पद ध्यावते, अष्ट कर्म सबी उड़ जावते। ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल–(कोशमालती छंद) एला केला दाख छुहारा, पिस्ता श्रीफल क्षारक लाय। मोक्ष महा फल चाखन कारण, पूजूं तुम को शीस निवाय। मल्लिनाथ जिन काम बिडारो, दीने आठों कर्म निवार। मोक्षपुरी में बासा कीना गाऊं तुम गुण वारं वार। उों ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म तप, ज्ञान निर्वाण, पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ–(विजयानी सेठ की चाल) जल फल वसुजी आठों द्रव्य समार के। कर अर्घ सुजी तुम सन्मुख ही धार के। श्रीमल्लि सुजी डूबत मोहिनिकारिये। शिव बास सो जी ता मधि वेग सु धारिये। उों ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

अथ पंचकल्याणक। दोहा।

गर्भ--अपराजित सु विमान तज, परजावति उर आय। चैत शुकल एकैं भली, जजे चरण हरषाय।
ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेंद्राय चैत्रशुक्ल प्रतिपदा गर्भ कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
जन्म-जनमें मंगशिरशुक्ल ही, संख्या रुद्र जिनेश। न्हवन कियो गिरि मेरुपै,अमर वृंद अमरेश। ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेंद्राय मार्गशिर शुक्ल एकादशी जन्म कल्याणप्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा
तप-मगसिर ग्यारस शुक्ल ही, बालपनें मल्लिनाथ। छाड परिग्रह बन वसे, हम नावें निजमाथ। ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेंद्राय मार्गशिर शुक्ल एकादशी तपः कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥
ज्ञान-पौष श्याम दुतिया हने, चार कर्म दुःख दाय। केवल ज्ञान प्रकाशियो, चतुरानन दरशाय। ॐ ह्रीं श्री मलिनाथ जिनेंद्राय पौष कृष्ण द्वितीया ज्ञान कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
निर्वाण-शुकला फागुण पंचमी लहो अचल पद देव। गिरि समेद पूजूं मही, अष्ट द्रव्य शुभलेव। ॐ ह्रीं श्री मलिनाथ जिनेंद्राय फाल्गुण शुक्ल पंचमी मोक्ष कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला। दोहा।

महा अर्घ-शिशु बय तें मलिनाथ जी,पालो शील अखंड। राज भोग छाडे सबै, जीतो काम प्रचंड ॥१॥
नभ में उडुगण हैं जिते, का पै गिने सुजांय। त्यों तुम गुणमाला विविध, हम से किम वरनाय ॥ २ ॥

पद्धडी छन्द–जय केवल ब्रह्म विराजमान, सब योगीश्वर ध्यावें महान। तुम छालिस गुण पूरण जिनेश, परमातम आतम श्रीमहेश ॥ ३ ॥ भव वारिधि तारन को तरंड, तुम हनो ब्रह्मसुत अति प्रचंड। शरणा गत पालन को दयाल, सुर आवत तुम पद नमत भाल ॥ ४॥ तुम अजर अमर पद देन हार, भव तारण को तुम बिरद सार। जय राग द्वेष मद मोह चूर, जयऽनंत चतुष्टय गुणान पूर॥५॥ जय चतुरानन दीखत जिनंद, जय चौंसठ चमर ढुरें अमंद। जय द्वादश सभा बिराजमान, गणईस अठाइस हैं निधान ॥ ६॥ ते झेलत हैं बाणी त्रिकाल, भवि सुन कर टारत मोह जाल। जय संघ सुचार प्रकार एव, तिन सहित सो विहरत आप देव ॥ ७॥ दो शतक घाट उनतिस हजार, मुनि राज महा गुण के भंडार। जे धरत श्वेत साडी प्रमान, अजया पचपन सुहजार जान ॥ ८॥ इक लक्ष शरावक धर्म लीन, धारैं सम्यक् सबही प्रबीन। लख तीन जुश्रावकनी उदार, मिथ्यात्व त्याग चित वरत धार ॥ ९॥ देवी अर देव समूह आय, तिनकी संख्या बरनी न जाय। संख्याते हैं तिर्यंचजौन, तज वैर भाव धारैं सु मौन ॥ १०॥ इन आदिक को भव पार लाय, सम्मेद शैलतें शिव लहाय। हम याचत हैं तुम पै सुदेव, भव भव में पाऊं चरण सेव ॥११॥ यह मोकों हे किरपा निधान, दीजेजु अनुग्रह चित्त ठान। बखता रतना को भृत्य जान, मेरी बिनती कीजे प्रमान ॥ १२ ॥

घत्ता छन्द–वरणात गुण थारे गण धर हारे मल्लि जिनेश्वर काम हरं। भव दधितें तारो सुख विस्तारो

राग द्वेष निरवार करं ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घपद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ आशीर्वादः—सवैया ३१वां। बंश इक्ष्वाक माह प्रगट भये कुंभराय ताके शुभ नंदन श्रीमल्लिनाथ जानके। तिन के चरणारविंद सेवत सुरेंद्रचंद्र ध्यावत मुनिंद्रवृंद नाना थुतिठान के। कोई भव्य जीव अष्ट दरब शुद्ध लाय पूजा को रचाय बहु भक्ति उर आन के। ताके शुभ पुण्य की सुमहिमा न कही जाय सो लहैं मोक्षथान सर्व कर्म हानके॥१४॥ इत्याशीर्वादः।

इति श्रीमल्लिनाथ जिन पूजा संपूर्णा१९॥

२० अथ श्रीमुनिव्रतनाथ जिनपूजा प्रारभ्यते ॥

बखतावर सिंह कृत । कडषा छंद ॥

स्थापना–स्वर्ग प्रानत तजो सब इंद्रन जजो आय हरि बंश उद्योत कीना ।
मात पद्मावती पिता सुहमित जो धनु तन बीस छवि श्याम लीना ॥
अंक कच्छप सही अतुल शोभा लही नगर राजगृही सुर रचीना ।
थाप के नुति करूं चरण सिर पर धरूं कीजिये नाथ मम कर्म क्षीना ॥ १ ॥

उों ह्रीं श्री मुनि सुव्रतनाथ जिनेंद्र अत्रावतराऽतवर संवौषट् आह्वाननम् ।
उों ह्रीं श्री मुनि सुव्रतनाथ जिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
उों ह्रीं श्री मुनि सुव्रतनाथ जिनेन्द्र अत्र मम संन्निहितो भव भव वषट् सन्निधी करणम् ॥

(अथ अष्टक) गीता छंद ।

जल–गिरि हिमन कुल को नीर निर्मल तथा सोमथकी करो, भरभृंग कर तुम चरण पूजूं जन्म मरण जरा हरो, तुम सम न तारण तरण कोई अहो मुनिसुव्र धनी । हरि बंश नभ में आप शशि सम कांति सोहे अतिघनी ॥ उों ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरारोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

चंदन—गोशीर्ष चंदन और कुंकुम वार संग घसाइयो, तुम चरण पूजूं धार देके मोह ताप मिटाइयो। तुम सम न तारण तरण कोई अहो मुनिसुव्रत धनी, हरि वंश नभ में आप शशि सम कांति सोहै अतिघनी॥ ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा ताप रोगविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत—मुक्ता समान अखंड अक्षत चंद की दुति को हरें, मम अषैपद दीजे जिनेश्वर पुंज तुम आगे धरें। तुम सम न तारण तरण कोई अहो मुनिसुव्रतधनी, हरि वंश नभ में आप शशि सम कांति सोहे अति घनी॥ ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥

पुष्प—मंदार तरुके कुसुम प्राशुक गंध पै अलि छाइये, सो लेय तुम ढिग चरण धारे मदन वान नसाइये। तुम सम न तारण तरण कोई अहो मुनिसुव्रत धनी। हरि वंश नभ में आप शशि सम कांति सोहे अति घनी॥ ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय काम वाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥

नैवेद्य—खगधीश सुरनर असुर सबको क्षुधा वेदन दुख करो। पकवान तैं तुम चरण पूजूं क्षुधा नागन को हरो, तुम सम न तारण तरण कोई अहो मुनिसुव्रत धनी, हरिवंश नभ में आप शशि सम कांति सोहे अति घनी॥ ॐ ह्रीं श्री मुनिसव्रतनाथ जिनें ाय

पंच कल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

दीप–यह मोह अंध सुज्ञान ढापो आप पर नहिं भास ही। मणि दीप जोय सु चरण पूजूं करो ज्ञान प्रकाश ही॥ तुम सम न तारण तरण कोई अहो मुनिसुव्रत धनी। हरिवंश नभ में आप शशि सम कांति सोहे अति घनी॥ ॐ ह्रीं श्री मुनि सुव्रतनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार विनाशाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

धूप–यह आठ कर्म अनादि ही के बहुत दुख मोको करो, यातें सुगंधी धूप खेऊं अष्ट दुष्ट सबै हरो। तुम सम न तारण तरण कोई अहो मुनिसुव्रत धनी। हरिवंश नभ में आप शशि सम कांति सोहे अति घनी॥ ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

फल–पुरषार्थ रोको अंतराय सु मोह दुर्बल जान के, शिवथान दो तुम चरण अरचूं फल अनूपम आन के। तुम सम न तारण तरण कोई अहो मुनिसुव्रत धनी, हरिवंश नभ में आप शशि सम कांति सोहे अति घनी॥ ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलंनिर्वपामीति स्वाहा ॥

अर्घ–जल चंदनाऽक्षत सुमन, नेवज दीप गंध फलोघ ही। भरके रकाबी अरघ लीजे, जजूं हरत्रय रोग ही। तुम सम न तारण तरण कोई अहो मुनिसुव्रत धनी। हरि वंश नभ में आप शशि सम

कांति सोहे अति घनी ॥ ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुब्रतनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ पंचकल्याणक । चाल त्रिभुवन गुरुस्वामी की ।

गर्भ–दुतिया तिथी कारीजी, सावन शुभ वारी जी । गर्भागम धारी, प्राणत त्याग के जी । पद्मावत माईजी शची पूजन आई जी । सेऊं सुख दाई, चरणन लागके जी ॥ ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुब्रतनाथ जिनेंद्राय श्रावण कृष्ण द्वितीया गर्भ कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

जन्म–अतिशय दश गायेजी, त्रय ज्ञान सुहायेजी । निज साथ लाये, जन्म तने दिनाजी । बैशाख अंधारीजी, दशमी सुरसारीजी । गिरि शीस मझारी, न्हवन कीयो जिनाजी । ॐ ह्रीं श्री मुनिसुब्रतनाथ जिनेंद्राय बैशाख कृष्ण दशमी जन्म कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

तप–संसार असाराजी, सब अनित विचाराजी । दशमी तिथकारी, जान विशाख की जी । कानन तप धारेजी, सब वसन उतारे जी । जब आरतिटारे, शिव अभिलाख कीजी । ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुब्रतनाथ जिनेंद्राय बैशाख कृष्ण दशमी तपः कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

ज्ञान–बैशाख महीनाजी, आतम चित दीना जी । कलि नौमी दिन लीना, पंचम ज्ञान को जी । वर धर्म बखानाजी, भवि जीवन जाना जी । जिन देवमहाना, सब सख दीजिये जी ॥ ॐ ह्रीं

श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेंद्राय वैशाख कृष्ण नवमी ज्ञान कल्याण प्राप्ताय अर्घ निर्वपामीतिस्वाहा॥
निर्वाण-अलि फागुण आईजी, द्वादश सुख दाईजी। सब कर्म नसाई, गिरिसम्मेदतैं जी। तुम सिद्ध कहायेजी, सब अलख लखाये जी। हम माथ नवाये, छुडावो खेदते जी॥ ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेंद्राय फाल्गुण कृष्ण द्वादशी मोक्ष कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

अथ जयमाला। दोहा।

महा अर्घ-इंद्रादिक नख मुकट में, देखत आनत आय। छवि सुंदर मनको हरे, कोटिक भानुलजाय॥

चाल अहो जगतगुरु की-प्राणत स्वर्ग बिहाय मात श्यामा उर आये। तात सुमंत महान नगर कौशाग्र सुहाये॥ सेवे माता पाय सुरतिय आय नवीनी। नभतैं रतन अपार धनद ने बरषा कीनी॥२॥ तुम जन्में जग ईश सकल जग मंगल छाये, आसन कंपित जान सबै सुर हर्षित आये। लेय गये गिरि शीस न्हवन कीनो अति भारी, कलस हजार भराय इंद्रने धारा ढारी॥ ३॥ कर शृंगार महान नाम मुनिसुब्रत दीना, सौंप मात हरषाय नृत्य तहां तांडव कीना। धनद करे नित सेव वस्त्र आभूषण लावें, हय गय हंसम पूरदेव बहुरूप बनावें॥ सहस तीस तुम आय धनुषबपुबीस उचाई, साढे सात हजार कुमर पन मांह विहाई। फेर कियो तुम राज वर्ष पंदरह सु हजारा, कृष्ण दसैं बैशाष सबै जग अथिर बिचारा॥ ५॥ देव ऋषी सब आय चरण तल पुष्प चढाये, संबोधन कह बैन नमन निजथान सिधाये। निर्ज्जर चार प्रकार सकल इंद्रादिक आये, रतन जडित सुखपाल तास मे तुम चढ धाये॥६॥

पहुंचे विपिन मझार सहस राजा संग लीनी, दीक्षा निज हितकार दिगंबर मुद्रा चीनी । मन परजय लहज्ञान बिहरत इकल विहारी, ग्यारह वरष प्रमान प्रभू तुम मौन सुधारी ॥ ७ ॥ पायो केवल ज्ञान लोका लोक निहारे, दे उपदेश महान भवोऽदधितैं भवितारे । मास रही इक आय गिरी सम्मेद पधारे, योग निरोध सुठान चारों कर्म निवारे ॥ ८ ॥ सिद्ध भये तुम देव तबैं इंद्रादिक आये, कीनो मोक्ष कल्याण सबै मिल मंगल गाये । कीनो अंक सुरेन्द्र तास शिलशिव तुम पाई । पूजत हैं भवि जाय चरण तुमरे हरषाई ॥९॥

दोहा–यह गुण पूरन देव की गुणमाला अविकार, जो जन धारैं कंठ में ते पावैं भव पार ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं श्री मुनिसुब्रतनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय अनर्घ्य पद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ अशीर्वादः–कुंडलिया छंद । पूजा मुनिसुब्रत तनी जो कर हैं मन लाय, अथवा अनुमोदन करैं पढैं पाठ चित लाय । पढैं पाठ चितलाय तास घर संपति भारी, पुत्र मित्र सुख लहैं बहुत जन आज्ञा कारी ॥ कह बखतावर रतन तास सम नर नहिं दूजा, मन बच काय लगाय करें जो निशि दिन पूजा ॥ ११ ॥ इत्याशीर्वादः । इति श्रीमुनिसुब्रतनाथ जिन पूजा संपूर्णा ॥ २० ॥

२१ अथ श्री नमिनाथजिन पूजा प्रारभ्यते ॥

(वखतावरसिंहकृत) अडिल ।

स्थापना–अपराजित तज नाथ नगर मिथिला सही। विजियारथ के नंद मात बिप्रा लही।
पंदरे धनुष प्रमाण हेम तन पाय जी। हम पूजें मन लाय तिष्ठ इत आय जी ॥ १ ॥
ऊँ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्र अत्रावतराऽवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ऊँ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनम्।
ऊँ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्र अत्र मम संन्निहितो भवभव वषट् संन्निधी करणम् ॥

अथ अष्टक। अडिल।

जल–हिमवन शैल उतंग थकी गंगापरी। ताको शीतल वारि कनक झारी भरी ॥ पूजा श्रीनमिनाथ चरणकी कीजिये। लखचौरासीयोन जलांजलि दीजिये ॥ ऊँ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्रायगर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरा रोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन–चंदन अर कर्पूर सु कुंकुम सानके। चरचूं चरण सरोज हरष उर आन के ॥ पूजा श्रीनमिनाथ चरण की कीजिये। लख चौरासी योन जलांजलि दीजिये ॥ ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्रायगर्भ, जन्म,

तप,ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा॥

अक्षत–दोनों अनी समान सुअक्षत लीजिये। भर के सुवरण थालसु पुंज धरीजिये॥ पूजा श्रीनमिनाथ चरण की कीजिये। लख चौरासी योन जलांजलि दीजिये॥ ऊँ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ,जन्म,तप,ज्ञान,निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीतिस्वाहा।

पुष्प–कुसुम अनेक प्रकार अनूपमसार है, अलि समूह गुंजार करत भर थार है॥ पूजा श्री नमिनाथ चरण की कीजिये। लख चौरासी योन जलांजलि दीजिये॥ ऊँ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेंद्राय गर्भ,जन्म तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य–नेवज बहुपरकारं सुमन ललचावनी। रसना रंजन लेय क्षुधादि भगावनी॥ पूजा श्रीनमिनाथ चरण की कीजिये। लख चौरासी योन जलांजलि दीजिये॥ ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप–जगमग जगमग जोत कपूर वलाइये। कंचन दीपक माहि सुध्वांत नसाइये॥ पूजा श्रीनमिनाथ चरण की कीजिये। लख चौरासी योन जलांजलि दीजिये॥ ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीतिस्वाहा

धूप–कालागर कशमीर सुचंदन लेयके। अमर जिह्वमें धार धनंजय खेय के॥ पूजा श्रीनमिनाथ चरण की कीजिये। लख चौरासी योन जलांजलि दीजिये॥ ॐ ह्रीं श्रीन [illegible]

तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

फल-दाख छुहारा एला केला लाइये । सरस मनोहर थार भरे सुचढाइये ॥ पूजा श्रीनमिनाथ चरण की कीजिये । लख चौरासी योन जलांजलि दीजिये ॥ ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्घ-जल फल आठों द्रव्य मिलाय हूं । स्वर्ण रकाबी मांहि सुअर्घ बनाय हूं । पूजा श्रीनमिनाथ चरण की कीजिये । लख चौरासी योन जलांजलि दीजिये ॥ ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ पंचकल्याणक । दोहा ।

गर्भ-अपराजित तजके प्रभु, विप्रा गर्भ मझार । आश्विन द्वितिया कृष्ण ही, लयो जजं पद सार ॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय आश्विनकृष्ण द्वितिया गर्भ कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

जन्म-दशमी असित आसढ ही, जन्मे श्रीनमि देव । मघवासुर गिरि पर जजे, हम पूजें वसुभेव ॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय आषाढ कृष्णदशमी जन्म कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

तप-जन्म तनो दिन आइयो, तप कीनो बन जाय । पण मुष्टी कचलौंचियो, आतम ध्यान लगाय ॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेंद्राय आषाढ कृष्णदशमी तपः कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञान–सित मगसिर ग्यारस हने, घाति कर्म दुःख दाय। केवल ज्ञान उपाइयो, वृष भाषो दुःखदाय।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेंद्राय मार्गशिरशुक्ल एकादशीज्ञानकल्याणप्राप्ताय अर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा

निर्वाण–चतुर्दशी वैसाख तम, हन अघाति लह मोष, सम्मेदाचल तें गये, भये गुणन के कोष॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेंद्राय वैशाख कृष्ण चतुर्दशी मोक्ष कल्याणप्राप्तायअर्घं निर्वपामीतिस्वाहा

अथ जयमाला। दोहा।

महाअर्घ–इंद्र नरेन्द्र फणीन्द्र नर,स्तुती करें जु वनाय। गुण वारिधि नमिनाथ के, पार न पाये जाय॥१॥
पै तुम भक्ति सुहिय मम, प्रेरत आठों जाम। मति माफिक कछु कहत हूं, गुण माला गुण धाम॥ २॥

छन्द पद्धड़ी–जयजय जयजय नमिनाथ देव। सुर नर इंद्रादिक करत सेव॥ दश सहस वरष की आयु पाय। धनु पंद्रह कंचन वरण काय॥ ३॥ जय लक्षण पंकज खंड सार। उपमा वरनत पाऊं न पार। जय तपकर चारों अरि प्रजार। पायो तब केवल पद उदार॥ ४॥ तब समव सरन रचना समार। कीनी इक छिन में धनद त्यार॥ दो योजन की इक शिल सुधार,नीली अति सोहै गोल कार॥ ५॥ अवनी तैं ढाई कोश जान। उन्नत सिवान सोहैं महान॥ तापै रचना बहु भांति कीन धूली शालादिक का प्रवीन॥ ६॥ तहां समवसरण में इंद्र आय। स्तुति कीनो मस्तक नवाय॥ जय तुम देवन के देव इष्ट। भव दधि तारन म . . . ६२ .

भव्य कंज को रवि विशाल ॥ इत्यादिक थुति कीनो सुरेश। फिर तुम विहरे आरज सुदेश ॥ ८ ॥ गण धर सतरै चव ज्ञान पूर। ऋषि गण तहां बीस हजार सूर॥ अजया पैंतालिस सहस संग। इक लाख सरावक व्रत अभंग ॥ ९ ॥ श्रावकनी लख त्रय, शील वान। सम्यक्त्व सहित किरपा निधान॥ चवसंग सहित भवि वृन्दतार। आये सम्मेदाचल पहार ॥ १० ॥ इक मास रही तब शेष आय। चव कर्म अघाती तब षिपाय ॥ इक समें माहि निरवान थान, पायो तुम आवा गमन हान ॥ ११ ॥ इक्ष्वाक वंश कीनो उजाल। सो नमि जिनवर मम दुःख टाल। बखता रतना पै हो दयाल। दीजे शिव संपति कर निहाल ॥ १२ ॥

घत्ताछन्द–जय जय नमि दाता सब जग त्राता कर्म जुघाता मोक्ष वरी। सोई गुण धारी टेर हमारी मति अनुसारी अर्ज करी ॥ १३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ आशीर्वादः। सोरठा–जो पूजे नमि देव, अष्ट द्रव्य शुभ लायके। इंद्रादिक तिन सेव, करें सुनिश दिन आय के ॥ १४ ॥ इत्याशीर्वादः। इति श्रीनमिनाथजिन पूजा संपूर्णा ॥ २१ ॥

२२ अथ श्रीनेमिनाथजिन पूजा प्रारभ्यते।

(बखतावरसिंहकृत) कवित्त।

स्थापना–ध्यान रूप हय पर सवार है रतनत्रय सिर ढोय संभार।
दशधा धर्म कियो बक्तर शुभ संवर असिकी तीक्षण धार॥
अनुभवने जाकर गह लीनों कर्म अरी लीने ललकार।
शिव देव्या नंदन नेमीश्वर थापन करूं मंत्र उच्चार॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्र अत्रावतराऽवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्र अत्र मम संन्निहितो भव भव वषट् संन्निधीकरणम्।

अथ अष्टक। बसंत तिलका छंद।

जल–क्षीरोदधि परम नीर मंगाय लीनो। चामीर कुंभ भर चरण सुधार दीनो॥ श्रीनेमिनाथ तुम बाल सुब्रह्मचारी। पूजूं पदार युग कंज प्रमाद टारी॥ ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म

चंदन–गोशीर चंदन कपूर घसाय लायो। चर्चा करी चरण पास अनंद पायो ॥ श्रीनेमिनाथ तुम बाल सुब्रह्मचारी। पूजूं पदार युग कंज प्रमाद टारी॥ ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा तापरोग विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत–श्रीचंद जोत सम अक्षत श्वेत जो हैं। धारे जु पुंज तुम अग्र अपार सो हैं॥ श्रीनेमिनाथ तुम बाल सुब्रह्मचारी। पूजूं पदार युग कंज प्रमाद टारी॥ ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प–बेलाजुही सुमन प्राशुक सार लीने। सोहैं सुरंग भर अंजलि भेद कीने॥ श्रीनेमिनाथ तुम बाल सुब्रह्मचारी। पूजूं पदार युग कंज प्रमाद टारी॥ ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय कामवाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य–फेनी सुहाल वर मोदक सद्य ताजे। मोहैं सुनैन तिस देखत भूखभाजे॥ श्रीनेमिनाथ तुमबाल सुब्रह्मचारी। पूजूं पदार युग कंज प्रमाद टारी॥ ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप–बाती कपूर कर कंचन दीप मांही। दीने प्रजार तुम मंदिर मांह साईं॥ श्रीनेमिनाथ तुम बाल सुब्रह्मचारी। पूजूं पदार युग कंज प्रमाद टारी॥ ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप-श्रीखंड लोंग कर्पूर सुगंध भूरे। खेऊं हुताशन सुकर्म निवार करे॥ श्रीनेमिनाथ तुम बाल सुब्रह्मचारी। पूजूं पदार युग कंज प्रमाद टारी॥ ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल-एला अनार वरसेव सुआम लाऊं। सुवर्ण थार भर नाथ तुम्हें चढाऊं॥ श्रीनेमिनाथ तुम बाल सुब्रह्मचारी। पूजूं पदार युग कंज प्रमाद टारी॥ ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ-नीरादि अष्ट शुभ प्राशुक द्रव्य लाये। कीने महा अरघ सुंदर गान गाये॥ श्रीनेमिनाथ तुम बाल सुब्रह्मचारी। पूजूं पदार युग कंज प्रमाद टारी॥ ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंचकल्याणक। कडखाछंद।

गर्भ-त्यागियो आपने वैजयंते महा, मात शिव देवि की कूख आये। श्वेत कातिक कही छठ के दिन लही मात के चरण तब शची ध्याये॥ धनद तब गगन तें वृष्टि करतो भयो रतन की आदि पण वर्ज लाये। छपन देवी तहां सेव करती महा सुरन ने आय बाजे बजाये॥ ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेंद्राय

जन्म-शुक्ल छठ सावनी अमर मन भावनी तास दिन आपने जन्म लीना। सुरन आसन चले मौलि तब ही हले, सात पग चाल तब नमन कीना॥ आइयो सुर पति नगर द्वारावती शची कर लेय जिन रूप चीना। मेरु गिरि पै गये वारि कलसे लये, सहस अर आठ सिर धार दीना॥ ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेंद्राय श्रावण शुक्ल षष्ठी जन्म कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तप-व्याह हरिने ठयो यान सजतो भयो, चढे जब आप श्रीनेमि स्वामी। पशु धुनि जब सुनी करत चिंता गुणी, चतुर्गति मांह जिय दुक्ख पामी। छोड रजमति तिया नेह शिव तें किया, बास वन में लिया हनो कामी। जन्म की तिथि कहा व्रत महा जब गहा, कियो तब मौन जिन भये नामी॥ ॐह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेंद्राय श्रावण शुक्ल षष्ठी तप कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान-क्वार एकैं भली सेत पष में रली मोह सेन्या दली ज्ञान पायो। समवसर की ठनी धनद रचना तनी सभा द्वादश बनी इंद्र आयो॥ चरण अरचा करी हरष उर में धरी मान धन धन धरी शीस नायो। आप बानी भई सबै जग सरदही, मेट ममपीर मैं अर्घ लायो॥ ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय आश्विन शुक्ल प्रतिपदा ज्ञान कल्याण प्राप्ताय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण-शैल गिरिनार पै मास बाकी रही, आयु तब योग नीरोध कीना। खिरत बानी नहीं मौन सब ही लही सप्तमी साढ सित मोक्ष चीना। लोक अलोक के आप ज्ञायक भये अष्टमी धरा निज

वास लीना। दास बिनती करे चरण उरमें धरे, कीजिये नाथ संसार छीना॥ ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय आषाढ शुक्ल सप्तमी मोक्ष कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला। दोहा।

महाअर्घ–हरि हरादि हारे सबै, दिये विरंचि डिगाय। सो मकरध्वज तुम हनो, अहो नेमि जिनराय॥

छंद भुजंग प्रयात–तजो वैजयंतं लयो जन्म स्वामी। शिवा देवि माता महा सौख्य पामी॥ भले द्वारिका नग्र में आप जाये। हरी आदि निर्जर सबै आन ध्याये॥ २॥ गये मेरु शीसं कियो न्हौन भारी। पिता मात को सौंप आनंद धारी॥ प्रभु बाल लीला कही नाहिं जावे। कभी रत्न भूपै कभी गोद आवे॥ ३॥ शची आदि देवी गहे कर चलावे। कभी चाल सीधी कभी अट पटावे॥ छबी श्याम सुंदर मनो मेघ कारे। भये वर्ष अष्टम अणु व्रत्त धारे॥४॥ छपन कोड यादों सभा जोड लीहै। चली बात ऐसे कहै को बली है॥ प्रभु अंगुरी बीच जंजीर डारी। सबै खैंच हारे झुलाये मुरारी॥ ५॥ हली आदि जेते सबै शीस नाये। भई फूल वर्षा सुरों गांन गाये॥ करै कृष्ण नारी खडी अर्ज भारी। सुनो आप स्वामी वरो एक नारी॥ ६॥ तबै आप मानी करी कृष्ण त्यारी। चढे व्याहने को सबै राज धारी॥ सुजूनागढी सोंव के बीच आये। पशु टेर कीनी वचन यों सुनाये॥ ७॥ घिरे फंद मांही न दीसै सहाई। पडे. काल के बीच दीजे छुडाई॥ सुने बैन ऐसे तबै ही छुडाये। गही सार दीक्षा

सुगिरिनार आये ॥ ८ ॥ नमें सिद्ध को लौंच कीनो प्रवीना। दिने छप्पने में महा ध्यान कीना। जबै घातिया जोर छिन में उडायो। लहो ज्ञान भानं तिहूं लोक छायो ॥ ९ ॥ समवसरण की इंद्र शोभा बनाई। शुची डेढ योजन आनंद दाई ॥ गणाधीश ग्यारह सु झेलैं हैं बाणी। लहैं राज मोक्षं सुनैं भव्य प्राणी ॥ १० ॥ घने सात सै वर्ष में भव्य तारे। गयो उर्जयंतं सबै योग टारे ॥ भये सिद्ध स्वामी तिहूं लोक जानं। सबै इंद्र कीने सुपंचम कल्याणं ॥११॥ नमूं चर्ण तेरे अजी संग लीजे। छुटे भवकी फेरी यही दान दीजे ॥ सुनो अर्ज मेरी जगन्नाथ नामी। करो देर छिन ना अहो नेमि स्वामी ॥

घत्ता छंद—रजमतिसी नारी ततक्षिन छारी वर शिव नारी ततकाला। तिन की थुति कीनी चित धर लीनी पातग हीनी गुण माला ॥१३॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ आशीर्वादः। अडिल—नेमीश्वर पद कमल तनी पूजा करें। अलिसम कर अनुराग भक्ति उर में धरें। ते पावें भव पार कहै बखता सही। रतन कहै मन लाय ऋद्धि पावैं वही ॥

इत्याशीर्वादः। इति श्रीनेमिनाथजिन पूजा संपूर्णा ॥ २२ ॥

२३ अथ श्री पार्श्वनाथजिनपूजा प्रारभ्यते । (बखतावरसिंह कृत) गीताछन्द

थापना–बरस्वर्ग प्राणतको विहाय सुमात वामासुत भये। अश्वसेनके पार्श्वजिनवर चरण तिनके सुरनये ना हाथ उन्नत तन विराजै उरग लक्षण अतिलसै। थापूंतुम्हें जिन आय तिष्ठो कर्म मेरो सब नसै॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्र अत्रावतराऽवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्र अत्र मम संन्निहितो भव भव वषट् संन्निधी करणम् ।

अथ अष्टक । चामर छन्द ॥

जल–क्षीर सोम के समान अंबुसार लाइये, हेम पात्र धारके सु आप को चढाइये। पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूंसदा, दीजिये निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा॥ ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म,तप,ज्ञान निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरारोग विनाशनायजलं निर्वपामीतिस्वाहा।

चंदन–चंदनादि कंसरादि स्वच्छ गंधलीजिये, आप चर्न चर्च मोहतापको हनीजिये। पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूंसदा, दीजिये निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा॥ ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्राय गर्भ जन्म,तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारातापरोगविनाशनाय चंदनं निर्वपामीतिस्वाहा॥

अक्षत–फेन चंद की समान अक्षतं मंगायके, पाद के समीप सार पूजको रचायके। पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूंसदा, दीजिये निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा॥ ॐ

जन्म; तप; ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥
पुष्प–केवडा गुलाब और केतकी चुनाइये, धार चर्णके समीप काम को हनाइये । पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूंसदा, दीजिये निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा ॥ ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥
नैवेद्य–घेवरादि बावरादि मिष्ट सद्य में सनें, आप चर्ण अर्च तें क्षुधादि रोग को हनें । पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूंसदा, दीजिये निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा॥ ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्राय गर्भ जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीतिस्वाहा ॥
दीप–लाय रत्न दीप को सनेह पूरके भरूं, बातिका कपूरवार मोह ध्वांत को हरूं । पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूंसदा, दीजिये निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा॥ ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म,तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥
धूप–धूप गंध लेयके सु अग्नि संग जारिये, तास धूप के सु संग कर्म अष्ट वारिये । पार्श्वनाथ देव सेव आप की करूं सदा, दीजिये निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा ॥ ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्तय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥
फल–क्षारकादि चिर्भटादि रत्नथार में भरूं, हर्ष धार के जजूं सुमोक्ष सौख्यको वरूं । पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूं सदा, दीजिये निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा ॥ ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्राय

गर्भ, जन्म, तप, ज्ञाननिर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अर्घ–नीर गंध अक्षतं सुपुष्प चारु लीजिये,दीप धूप श्रीफलादि अर्घ तें जजीजिये। पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूं सदा, दीजिये निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा ॥ ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय अनर्घ्य पदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ पंचकल्याणक। छंद पायता।

गर्भ–शुभ प्राणत स्वर्ग विहाये, वामा माता उर आये। वैशाख तनीदुतकारी, हम पूजें विघ्न निवारी ॥ ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्राय वैशाख कृष्ण द्वितीया गर्भ कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म–जन्में त्रिभुवन सुखदाता,कलिकादशि पौष विख्याता। स्यामातन अद्भुतराजे,रवि कोटिकतेज सुलाजे ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्राय पौष कृष्ण एकादशी जन्म कल्याण प्राप्तायअर्घंनिर्वपामीति स्वाहा॥

तप–कलि पौष इकादशि आई, तब बारह भावना भाई। अपने कर लौंच सुकीना, हम पूजें चर्नजजीना ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्राय पौष कृष्ण एकादशी तपः कल्याण प्राप्ताय.अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

ज्ञान–वह कमठ जीव दुखकारी,उपसर्ग कियो अति भारी। प्रभु केवल ज्ञान उपाया, अलि चैत चौथ दिन गाया॥ ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्राय चैत्र कृष्ण चतुर्थी ज्ञान कल्याणप्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

निर्वाण–सित सावन सातैं आई शिवनार तबै जिनपाई। सम्मेदाचल हरि माना, हमपूजें मोक्ष कल्याना ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेंद्राय श्रावण शुक्लसप्तमी मो कर

अथ जयमाला ।

महाअर्घ-पारसनाथ जिनंद तने बच पौनभषी जरते सुन पाये। करो सरधान लहो पद आन भये पद्मावति शेष कहाये। नाम प्रताप टरे संताप सुभव्यनको शिवशर्म दिखाये। हो विश्वसेनके नंदभये गुण गावत हैं तुमरे हरषाये॥ केकी कंठ समान छबि, बपु उतंग नव हाथ। लक्षण उरग निहार पग, बंदू पारसनाथ॥

छंद मोती दाम-रची नगरी षट् मास अगार, बने बहुगोपुर शोभ अपार। सु कोटतनी रचना छबिदेत, कगूंरन पै लहकैं बहु केत॥ १॥ बनारस की रचना जु अपार, करी या भांत धनेश तयार। तहां बिश्वसेन नरेन्द्र उदार, करै सुख बाम सु दे पटनार॥ २॥ तजो तुम प्राणत नाम बिमान, भये तिन के घर नंदन आन। तबै पुर इंद्र नियोगनि आय, गिरींद्र करी विध न्हौन सु जाय॥ ३॥ पिता घर सौंप गये निज धाम, कुवेर करे बसु जाम जु काम। बधेजिन दूज मयंक समान, रमैं बहु बालक निर्जर आन॥४॥ भये जब अष्टम बर्ष कुमार, धरे अणु ब्रत्त महा सुखकार। पिता जद आन करी अरदास, करो तुम व्याह भरो मम आस॥ ५॥ करो तब नाह रहे जग चंद, किये तुम कामक सायक मंद। चढे गजराज कुमार न संग, सु देखत गंगतनी सुतरंग॥ ६॥ लख्यो यक रंक करे तप घोर, चहुंदिस अग्नि बले अति जोर। कहे जिननाथ अरे सुन भ्रात, करे बहुजीव तनी मतघात॥ ७॥ भयो तब कोप कहै कितजीव, जले तब नाग दिखाय सदीव। लख्यो यह कारण भावन भाय, नये दिव ब्रह्मऋषी सब आय॥ ८॥ तबै सुर चार प्रकार नियोग, धरी शिविका निजकंध मनोग। करो बन

माह निवास जिनंद, धरे व्रत चारित आनंद कंद ॥ ९ ॥ गहे तहां अष्टम के उपवास, गये धन दत्त तनें जु अवास। दियो पयदान महा सुखकार, भई पण वृष्टि तहां तिहवार ॥१०॥ गये फिर कानन माह दयाल, धरो तुम योग सबै अघटाल। तबै वह धूम सुकेत अयान, भयो कमठाचर को सुर आन॥११॥ करै नभ गौन लखे तुम धीर, जू पूरब बैर बिचार गहीर। करो उपसर्ग भयानक घोर, चली बहु तीक्षण पवन झकोर ॥१२॥ रहो दशहूं दिश में तम छाय, लगी बहु अग्नि लखी नहिं जाय। सुरुंडन के बिन मुण्ड दिखाय,पडे जल मूसल धार अथाय॥ १३॥तब पद्मावती कंत धनंद, नये युग आय तहांजिनचंद। भगो तब रंक सुदेखतहाल, लहो तब केवल ज्ञान विशाल ॥१४॥ दियो उपदेश महाहितकार सुभव्यन बोधि सम्मेद पधार।सु सुब्रण भद्र जू कूट प्रसिद्ध,वरी शिवनारि लही बसुऋद्ध॥१५॥ जजूं तुम चर्णदोऊ कर जोर। प्रभु लखिये अबही मम ओर। कहैं वखतावर रत्न बनाय,जिनेश हमें भव पार लगाय ॥१६॥

घत्ता छंद-जय पारस देवं सुर कृत सेवं बंदित चरण सुनागपती। करुणा के धारी पर उपकारी शिव सुख कारी कर्म हती॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महाऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ आशीर्वादः-छंद मद अवलिप्त। जो पूजै मन लाय भव्य पारस प्रभु नित ही। ताके दुख सब जांय भीतिव्यापै नहिं कितही। सुख संपति अधिकाय पुत्र मित्रादिक सारे। अनुक्रम सों शिव लहे रतन इम कहे पकारे ॥१८॥ त्या

२४ अथश्रीवर्द्धमानजिन पूजा लिख्यते।

बखतावरसिंहकृत। अडिल

स्थापना–सिद्धारथ है तात मात त्रिशिला सही, अच्युत तैं चय आय नगर कुंडिन कही।
हाथ सात परमान अंक है मृगपती, महावीर जिनदेव तिष्ठ करुणा पती॥ १॥

ॐ ह्रीं श्रीमहाबीर जिनेंद्र अत्रावतराऽवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री महाबीर जिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीमहाबीर जिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधी करणम्॥

अथ अष्टक। छंद त्रिभंगी।

जल–क्षीरोदधिवारं निर्मल सारं गंध अपारं भर धारं। अति ही शुचिकारं तृषा निवारं तुम पद ढारं दुःख हारं। श्रीबीर कुमारं शिव दातारं पाप निवारं सुख कारं। सुंदर आकारं ज्ञान भंडारं जग हितकारं जित मारं॥ ओं ह्रीं श्री महाबीर जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरा रोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन–चंदन मन भावन ताप नसावन सौरभ पावन भरझारी । करपूज तिहारी आनंद कारी पाप निवारी गुण कारी । श्रीबीर कुमारं शिवदातारं पाप निवारं सुखकारं । सुंदर आकारं ज्ञान भंडारं जग हितकारं जितमारं । ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षत–अक्षत शुभ सारं खेत सुधारं हेम सुथारं मांह भरे । तुम चरण चढाऊं पुंज रचाऊं शिव सुख पाऊं हर्ष वरे । श्री वीरकुमारं शिव दातारं पाप निवारं सुखकारं । सुंदर आकारं ज्ञान भंडारं जग हितकारं जितमारं ॥ ॐ ह्रीं श्रीमहाबीर जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पुष्प–शुभ षट् ऋतु केरे सुमन उजेरे अलिगण नेरे गुंज करे । ले पूजूं ध्याऊं मन हरषाऊं सीस नवाऊं काम जरे । श्रीबीर कुमारं शिवदातारं पाप निवारं सुखकारं । सुंदर आकारं ज्ञान भंडारं जग हितकारं जितमारं । ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय काम वाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

नैवेद्य–चरु घृत में कीनी रसमें भीनी पुष्ट नवीनी भर थारी । चरणन ढिग लाउं
न ाऊं ...

भंडारं जग हितकारं जितमारं । ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण चकल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप-मणि दीप प्रकाशे ध्वांत विनाशे निज हित भाषे कांति लसे। तल चर्ण चढाऊं मोहनसाऊं ज्ञान सुपाऊं सुख बिलसे। श्रीवीर कुमारं शिवदातारं पाप निवारं सुखकारं। सुंदर आकारं ज्ञान भंडारं जग हितकारं जितमारं। ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप-कृष्णागर चूरं लौंग कपूरं परिमल भूरं खेवत हूं। तिस धूम उडाये अलिगण आये कर्म नसाये सेवत हूं॥ श्रीबीर कुमारं शिवदातारं पाप निवारं सुख कारं। सुंदर आकारं ज्ञान भंडारं जग हितकारं जितमारं। ओं ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल-बादाम छुहारी लौंग सुपारी फल सहकारी मैं लायो। भर हाटक थारी तुम ढिग धारी शिव सुख कारी गुण गायो। श्री बारकुमारं शिव दातारं पाप निवारं सुखकारं। सुंदर आकारं ज्ञान भंडारं जग हितकारं जितमारं। ओं ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ-जल गंध अपारं अक्षत सारं सुमन सुधारं चरुजुबरा। ले दीपं धूपं फल बहु रूपं स्वर्ण रकाबी

अर्घ करा ॥ श्री वीर कुमारं शिवदातारं पाप निवारं सुखकारं । सुंदर आकारं ज्ञान भंडारं जग हितकारं जितमारं । ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

(अथ पंच कल्याणक) छन्दलक्ष्मीधरा ।

गर्भ-षाढसित छट्ठ को गर्भ मातासही, आइयो त्याग के स्वर्ग सोलं कही । होत आकाशतें रत्न वरषाघनी, देव देवी सबै सेव माता ठनी । ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेंद्राय आषाढ शुक्ल षष्ठी गर्भ कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

जन्म-चैत सित त्रोदसी जन्म लीनो महा । नारकी दो घडी सर्वं साता लहा । मेरु पै इंद्र नागेंद्र ने पूजियो, मैं जजूं अर्घ ले वेग त्यारीजियो । ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेंद्राय चैत्र शुक्ल त्रयोदशी जन्म कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

तप-मार्गशीर्षा दसैं स्याम की आइयो, तादिना आप चिद्रूप को ध्याइयो । धार षष्ठं महा दान गोक्षीर को, लीजियो आपने मैं जजूं वीर को । ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय मार्गशिर कृष्ण दशमी तपः कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञान-घात चौ कर्म को ज्ञान पायो म ।

धर्म ही, मैं जजूं अर्घ ले मेटिये कर्म ही। ओं ह्रीं श्री महावीर जिनेंद्राय वैशाख शुक्ल दशमी ज्ञान कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

निर्वाण–नग्रपावापुरी सार उद्यान में, योग निरोधियो ठान के ध्यान में। मावसी कातकी भ्रमर की लीजिये, सिद्ध राजा भये बास मो दीजिये। ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेंद्राय कार्तिक कृष्ण अमावस्या मोक्ष कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला। दोहा।

महा अर्घ–सकल सुरेश नरेश अर, किन्नरेश फनयेश। ते सब वंदित चरणयुग, वंदू बीर जिनेश ॥

छन्द पद्धडी–जयजय जयजय श्रीबीर राज, भवसागर में अद्भुत जहाज। जय पुष्पोत्तर तजके बिमान, त्रिशिला माता की कूष आन ॥ २ सिद्धारथ तात बडे सुजान, जय कुंडिनपुर नगरी महान। तिनके घर आप भये जिनंद, हरिवंश व्योम ऊगे सुचंद ॥ ३ ॥ तब अमरन के आसन चलाय, सिर मुकुट नयत अचरज लहाय। कलपन घर घन घंटा बजाय, ज्योतिष घर के हरिनाद थाय ॥ ४ ॥ भवनालय संग बजे अपार, व्यन्तर के मंदिर ढोल सार। इन चिह्न थकी तुम जन्म जान, इंद्रादिक आये हरषमान ॥५॥ कुंडिन पुर तैं गिरिमेरु जाय, इक सहस वसु कलसे ढुराय। तब मघवा स्तुतिजु कर बनाय, तुम नाम धरो जिन बीर राय ॥६॥ शचि पौंछ कियो श्रृंगार येम, सोहत भूषण को कलप

जेम। फिर लाय तात के सदन इंद्र, लख माता हरषी बाल चंद्र ॥ ७ ॥ तांडव नाटक कीनो सुरिंद, दिखलायो जिन दश भव अमंद। पहिले भवनांहर रूप धार, दूजे सौ धर्म सुरगं मझार।८। बिजयारध में षग धीश राय, कनक प्रज्वल नामा लहाय। चौथे भवलांतव नाक थान, पंचम हरिषेन नरिंद जान ॥ ९ ॥ षष्ठम महा शुक्र बिषै जुदेव, सप्तम चक्री प्रिय मित्र येव। सहस्रार माह अष्टम प्रजाय, तहां ते चय उपजे नंदराय ॥ १० ॥ तप कर अच्युत थानक सुरिंद, तहां ते चय आप भये जिनंद। यह भव दिखलाये नृत्य थान, सब जीव भये आनंद खान ॥ ११ ॥ पितमात पूज हरिकर पयान, जिन बालक बय धारे सुजान। यक देव परीक्षा काज आय, तिन नाग रूप लीनो बनाय ॥ १२ ॥ क्रीडा तरु खेलत संग कुमार, सब भाग गये तिस तन निहार। प्रभु ततक्षिन ताको मद उतार, क्रीडा कर संगम देव हार ॥ १३ ॥ तब नाम दियो महावीर शूर, तिनथानक पहुंचो हरष पूर। युग मुनिवर नभ में गमन ठान, तिन के संशय उपजो महान ॥ १४ ॥ तुम पीठ़ जबै देखी दयाल, चित को विभ्रम सबही सुटाल। तब नाम दियो सन्मति उदार, इम तीस वरषके भये कुमार ।१५। लख पूरब भव वैराग्य भाय, सिद्धारथ बन दीक्षा लहाय। तप द्वादश कर बहुक्षीण काय, चव घाति हान केवल लहाय ॥१६॥ ग्यारह गणधर गोतम सु आद, मुनि सहस चतुर्दश तज प्रमाद। अजया ब्रत चंदन आदि धार सोहे सब छत्तिस सहस धार ॥ १७ ॥ यक लक्ष श्रावक अतिपुनीत, त्रिगुनी श्रावकनी धर्म नीत। इम

पायो सब कर्महान । तहां सिद्ध भये निर्भय निरास, सो सोहत हैं अद्भुत निवास ॥ १९ ॥ तुमरो ही मारग भव्य पाय, सो उतरंगे भवपार जाय । अबलो तुमरो तीरथ जिनंद, सो बर्तत है आनंद कंद ॥२०॥ हम याचत हैं तुम पै दयाल, दुख दारिदटार करो निहाल । बखतावर रतन कहै बनाय, शिव सुख दीजे महावीर राय ॥ २१ ॥

घत्ता छन्द–जय त्रिशिला प्यारे जग उजियारे भवि गण तारे मोक्ष दई । लख चरण तुम्हारे रविशशि हारे पूजन हारे शर्म लई ॥ २२ ॥ ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महाऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ आशीर्वादः दोहा–बीर महाअतिबीरजी, सन्मति वर्द्ध सुजान । पंचनाम पूजें सदा, पावें पद निर्वान ॥

इत्याशीर्वादः । इति श्रीमहावीर जिन पूजा संपूर्णा ॥ २४ ॥

समाप्त–अर्घ–छंद सुंदरी–ऋषभ जिनको आदि मनाय कै, अंत में महाबीर सुध्याय कै ।

चतुर्विंश जिनगुणगाय कै, जजत हूं मैं अर्घ चढायकै ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीऋषभ देवादि महावीर पर्यंत चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यः समाप्त्यर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ आशीर्वादः । छंद अडिल–जे चौबीस जिनेंद्रतनी पूजा करें, इंद्रादिक पदपाय चक्रि पद को धरें । कीरति है सुरराय मान जगमें सही, अनुक्रम तें शिव जाय सर्व बहु बिधि लही ॥ २ ॥ इत्याशीर्वादः

दोहा–संवत अष्टादश शतक, और वानवैंजान। फागनकारी सप्तमी, भौमवार पहचान। ॥ १ ॥ मध्य देश मंडल विषै, दिल्ली शहर अनूप। बादशाह अकबर नसल नमन करैं बहु भूप ॥ २ ॥ चार वर्ण जहां बसत हैं, कोइ न दुःख स्वरूप। शैली श्रावक धर्मकी, लसत महा सुख कूप॥ ३ ॥ नाना विधि रचना सहित, सोहत जिन आगार। चरचा अध्यातम तनी, करैं भव्य हित धार ॥ ४ ॥ शैली में सज्जन भले, सुगनचंद गुण खान। पुत्र सुगिरधर लाल तसु, ज्ञानवान जसवान ॥ ५ ॥

सवैया। तिसही शैली मंझार पंडित विवेक धार गिरधारी लाल सार स्नेही लालजानिये। कानजीमल्ल आन जै जै मल शीलवान गुपालराय साहिबसिंह सज्जन पहचानिये। २। बाल बुद्धि को विचार बखतावर नाम धार रतनलाल अग्रवाल न्यात जिस मानिये॥ ३ ॥ तानैं रचो पाठ जोग वांचो सब सुधी लोग भूल चूक शोधकर क्षमा उर आनिये ॥ ४ ॥

दोहा–मित्र युगल मिलके कियो, मन में यही विचार। शुभ कारण पूजा रची, कछु पिंगल अनुसार ॥ ५ ॥ अलंकार जानूं नहीं, नहिं लौकिक सुज्ञान। भक्ति एक उरधार के, रचो पाठ हितमान ॥ ६ ॥ बखतावरसिंह सीखियो, कछु भाषा की चाल। तातैं पाठ बनाइयो, बुधि माफिक अघ टाल ॥७॥

कुंडालियां छंद–भ्राता रतन सु लाल को नाम रामपरसाद। तिन तें रतन जो सीखियो कछू छंद मरजाद। कछू छन्द मरजाद आदि अक्षर सिखलाये। विद्या कछू पढाय बहुत उपकार कराये।
क[illegible]

देव, सुलोक अलोक तने लख भेव ॥ ११ ॥ नमूं सिर नाय उभय कर जोर, प्रभु हमरे वहु फंदन तोर।
लई चरनांबुज शर्न जिनेश, करो मत ढील सुमेट कलेश ॥१२॥

घत्ताछन्द–जैजै रिपुनाशन ज्ञान प्रकाशन श्रीसुपार्श्वदेमोक्षधरा, जो गुण गण गावें शीस नवावें पढें पढावें हर्ष वरा ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महाऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ आशीर्वादः। छंदरोडक–श्रीसुपार्श्व जिनतने चरण जे भविजन ध्यावें, पाठ पढें चितलाय तथा, सुनके हरषावें ॥ तिनघर मंगलहोयरिद्धि व्यापे अधिकाई, वखतावर इम कहै रतन सुन चित्त लगाई ॥१४॥

॥ इत्याशीर्वादः॥ इतिश्री सुपार्श्वनाथ जिन पूजा संपूर्णा ॥७॥

८ अथ श्रीचन्द्रप्रभजिन पूजा प्रारभ्यते ॥

बखतावर सिंह कृत। छन्द रोड़क।

स्थापना–वैजयंत सु विमान त्याग के जन्म सुलीना, चंद्र पुरी महाराज पिता महासेन प्रवीना।
धनुष डेढ़ सै काय बरन तन श्वेत विराजे, तिष्ठ तिष्ठ जिन चंद्र चरन दुति चंद्र सुलाजे ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ जिनेंद्र अत्र तिष्ठः तिष्ठः ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ जिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

अथ अष्टक। छंद त्रिभंगी।

जल–शुभ द्रह को नीर निरमल सीरं मन वच धीरं ले आयो। भर कंचन झारी तुम ढिग धारी तृषा निवारी सुख पायो। महा सेन दुलारे चंद पियारे तन उजियारे जोति धरे। नख दुतिपै थारे कमल सुहारे चंद विचारे चरण परे॥ ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेंद्राय गर्भ,जन्म,तप,ज्ञान निर्वाण पंच कल्याणप्राप्ताय जन्म मृत्यु जरा रोगविनाशनाय जलंनिर्वपामीति स्वाहा॥

चंदन–लेचंदन बावन कुंकुम पावन चक्षु सुहावन घस लीना। तिस सौरभ आवें मधु कर छावें तुम

ढिग लावे चरु चीन्हा। महासेन दुलारे चंद पियारे तन उजियारे जोत धरे। नख दुति पै थारे कमल सुहारे चन्द बिचारे चरण परे। ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय संसारताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत-अक्षत अनियारे निशपति हारे धोय समारे थाल भरूं। अक्षय पद दीजे ढील न कीजे निज लख लीजे पुंज करूं। महासेन दुलारे चंद पियारे तन उजियारेजोत धरे। नख दुतिपै थारे कमल सुहारे चंद बिचारे चरणपरे ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प-बहु कुसुम नवीने मैं चुन लीने सौरभ भीनें ल्याय धरे। तिस गंध सुहाई मधुकर छाई भेट कराईदर्प हरे। महासेन दुलारे चंद पियारे तन उजियारे जोत धरे, नख दुति पै थारे कमल सुहारे चंद विचारे चरण परे॥ ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय काम बाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥

नैवेद्य-पकवान सुलीने सितरस भीने तुरत करीने मिष्ट महा। बिडारी शर्मलहा। महासेन दुलारे चं
सुहारे चंद विचा

दीप-दीपक उजियारे जोय समारे तम छय कारे जोत घनी। मोहादिक नाशो ज्ञान प्रकाशो हम घट वासो मोक्ष धनी। महासेन दुलारे चंद्र पियारे तन उजियारे जोत धरे। नख दुतिपै थारे कमल सुहारे चंद बिचारे चरण परे। ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप-शुभ अगर मंगावे तगर रलावे मधुकर आवे कर शोरी। तिस गंध सुहाई दश दिश छाई कर्म जराई जिम होरी। महासेन दुलारे चंद पियारे तन उजियारे जोत धरे। नख दुतियै थारे कमल सुहारे चंद विचारे चरण परे॥ ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीतिस्वाहा।

फल-फल पक्व नवीने सबरस भीने आय धरीने षट ऋतु के। तुम भेट धराऊं मन हरषाऊं शिवफल पाऊं निज हितके। महासेन दुलारे चंद पियारे तन उजियारे जोत धरे। नख दुतिपैथारे कमल सुहारे चंद विचारे चरण परे। ओं ह्रीं श्रीचन्द्रप्रम जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ-जल फल वसुलाये मंगल गाये अर्घ बनाये भर थारी। वसु कर्म हनीजे देर न कीजे शिव पुर दीजे सुख भारी। महासेन दुलारे चंद पियारे तन उजियारे जोत धरे। नख दुतियै थारे कमल सुहारे चंद विचारे चरण परे। ओं ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण

पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंचकल्याणक। छंद भुजँग प्रयात।

गर्भ-तजो बैजयंतं बिमानं अनूपा, सुमाता जिनो की सुलक्षण स्वरूपा। तिसी कूषराजे सबै दोष भाजे, वदी चैत की पंचमी सार साजे॥ ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ जिनेंद्राय चैत्र कृष्ण पंचमी गर्भ कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म-भ्रमर पोष की रुद्र संज्ञा नवीना, तिहूं ज्ञान संयुक्त तब जन्म लीना। सुना सीर आये जजे मेरु लाये, तिहूं लोक में हर्ष आनंद छाये। ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ जिनेंद्राय पौष कृष्ण एकादशी जन्म कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तप-जबै पोष ग्यारस अंधेरी जु आई, तबै भावना द्वादशे आप भाई, पुरीचंद्र त्यागी' धरो ध्यान भारी, सुध्याऊं जिनोंको भये सो अगारी। ॐ ह्रीं श्रीचंद्र प्रभ जिनेंद्राय पौष कृष्णएकादशी तप कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान-लहो ज्ञान पंचम तबै इंद्र आयो, समोसर्न को ठाठ सभा बीच झेलें गणाधीशब

क

तुम्हें शीस नावें अहोचंद नामी। ओं ह्रीं श्रीचंद्रप्रभ जिनेंद्राय फालगुण कृष्ण सप्तमी मोक्ष
कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ जयमाला। दोहा।

महाअर्घ-माता जास सुलक्षणा, कुंद कलीसम श्वेत। बपु उतंग धनु डेढसै, शशि अंक छवी देत।

छन्द लक्ष्मीधरा-श्रीमहा सेन के नंदना हो बली, मात सुलक्षणा पूज हूं मैं भली। तास की कूष में आप आये जबै, गर्भ, कल्याण देवेंद्र कीनो तबै ॥ २ ॥ तात के धाम की सर्स शोभा बनी। सर्ब देवी करें सेव अंबा तनी। गर्भ नवमास आनंद भारी भयो, रोग शोकादि भय सर्व ही को गयो ॥ ३ ॥

छंद उपगीता-जन्में चंद जिनंदा, पौष संख्या सुरुद्र की कारी। करत महा आनंदा, आये सब देव इंद्र की लारी ॥ ४ ॥

छंदलक्ष्मी धरा-आईयो इंद्र इंद्रायनी मोदमें, लाईयो प्रेमजा आपको गोदमें। रूप देखो शुनासीर चक्रित भयो, नाथ के भाल ऐरावती पै ठयो ॥५॥ जाय के मेरु पै न्होन कीनो हरी, नम्रता धार के चरण पूजा करी। जय कृपा धीश तेरी छवी मोहनी, चंद्र की चंद्रिका तैं महा सोहनी ॥ ६ ॥ फेरला आपको मोद दे मात को, एक हजार लेनाम माला रची, नृत्य औगान कीनो तबै ही शची। मे रुकी बारताभाषियो तात को ॥ ७ ॥

छंदउपगीता–धनदकरेनितसेवा,भूषणवस्त्रादिसुर्गतैंल्यावे । तुमसम वयधरदेवा,क्रीडातुमदेखसर्वहरषावे॥
छंद लक्ष्मी धरा–देख क्रीडा सवै मावते अंगना,दोजकेचंद ज्यों वृद्ध होते जिना। राज कीनो
प्रजा दुःख टाले सवे,बीतियो लक्ष नौ पूर्व आयु तवै ॥९॥ फेर वैरागकी भावना भाइयो,ब्रह्म लोकांतके
देव तहां अइयो । वोध के आपको राह ले धाम की,इंद्र ले पालिकी मोतियादाम की ॥ १० ॥ ता समें
बैठ के जाय उद्यान में, सार दीक्षा लई चित्त दे ध्यान में। चार घाती हने ज्ञान पायो महा, बैठ संवाद
में धर्म सारा कहा ॥ ११ ॥ भव्य को बोधियो लक्ष पूर्वैंतही, फेर सम्मेद पै आप आये सही । योग
नीरोध के नाश अघातियो, वास शिव को लियो ज्ञान में भासियो ॥ १२ ॥ आर्या छंद–
तुम गुण वर्णत हारे,गणधर इंद्रादिक महानामी।हम लघुबुद्ध विचारे, किमवरनें सुगुण तुम स्वामी॥१३॥
छन्द लक्ष्मीधरा–स्वामी दीजे हमें मोक्ष लक्ष्मी धरा, चर्न तेरे तले कोट तीर्थंवरा । ज्यों सुमंत भद्र के
काज में देरना, त्यों कृपा सिंधु मोदास को हेरना ॥ १४ ॥
घत्ता छन्द–तुम गुण में सुंदर नमत पुरंदर जय माला सुख की करनी । जो पढें पढावें हित करगावें
"बखत रतन" सुख की भरनी॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप,
ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महाऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥
अथ आशीर्वादः,आर्याछंद–अहोनामी चंद देवाधि देवा, पूजें ध्यावें तास संसार छेवा ।
तिहारी,ते पावैं शाश्वतो सुक्ख भारी॥१६॥इत्याशीर्वादः

९ अथ श्रीपुष्पदन्तजिन पूजा प्रारभ्यते ।

(बखतावरसिंहकृत) छंद कोसमालती ।

स्थापना—काकंदी नगरी में आये तज अपराजित नाम विमान ।
श्वेत वरण लक्षण शफरी पति काय धनुष शत एक प्रमान ।
मातरमा सुग्रीव पिता सुत पुष्प दंत भगवंत महान ।
महिमाऽनंत अनंत गुणाकर सो प्रभु तिष्ठ तिष्ठ इत आन ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंत जिनेंद्र अत्रावतराऽवतर संवौषट् आह्वाननम् ॥
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंत जिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ॥

अथ अष्टक । छन्द पायता ।

जल—जल उत्तम द्रह को लावें, कंचन झारी भर ध्यावें । श्री पुष्पदंत महाराजा, तुम पद पूजत अघभाजा ।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरा रोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चंदन—बावन चंदन घसलाई, ता सौरभ पै अलिछाई । भवताप विनाशनहारे, पद पुष्पदंत जिनथारे ॥

१० अथ श्रीशीतलनाथजिन पूजा प्रारम्यते ।

(बखतावरसिंह कृत) अडिल ।

स्थापना–शीतल नाथ जिनंद स्वर्ग सोलम चये। भद्दलपुर में आय सुनंदा सुत भये ॥
नव्बे धनुष प्रमाण अंक सुर तरु तनो। तिष्ठ तिष्ठ जिनराज करम रिपु को हनो ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ॥

अथ अष्टक । छंद योगीरासा ।

जल–पंचम उदधि तनो जल निर्मल मुनि मन सम शुचि लावें। मणि भृंगार भराय अनूपम धारदेत सुख पावें ॥ शीतल जिन के युग चरणांबुज पूजूं मन वच काई। रोग शोक दुःख दारिद नाशे भव आताप मिटाई ॥ ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्ममृत्यु जरारोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चंदन–कुंकुम रंग कपूर सुमिश्रित मलियागिर घस लीनो। तासुगंध पै अलिगण आवें सो लेकर चर चीनो॥ शीतल जिनके युग चरणांबुज पूजूं मन वच काई। रोग शोक दुख दारिद नाशैं भव आताप मिटाई॥ ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा ताप रोग विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत–अनियारे अक्षत शुभ सुंदर निशि कर सम उजियारे। रतन थार भर तुम ढिगलाऊं पूज करूं अति प्यारे॥ शीतल जिनके युग चरणांबुज पूजूं मनवच काई। रोग शोक दुःख दारिद नाशैं भव आताप मिटाई॥ ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प–मेरु तने अथवा अवनीपर विटप महा छबि छाजे। जिन के सुमन सुमन सम नीके सौरभ पै अलिराजे॥ शीतल जिन के युग चरणांबुज पूजूं मनवच काई। रोग शोक दुख दारिद नाशैं भव आताप मिटाई॥ ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय कामवाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य–मोदक फेनी घेवर बावर गूंजा आदि मंगाई। घृत रस पूरे रसना रंजन नेवज आन चढ़ाई॥ शीतल जिन के युग चरणांबुज पूजूं मनवच काई। रोग शोक दुख दारिद नाशैं भव आताप मिटाई॥ ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय

क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप-घृत सनेह करपूर बातिका रतन दीप उजियारे। जोय धरे तुम सन्मुख हे जिन मोह अंधानरवारे॥ शीतल जिन के युग चरणाम्बुज पूजूं मनवच काई। रोग शोक दुःख दारिद नाशैं भव आताप मिटाई॥ ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप-कृष्णागर गोसीर सुचंदन ताकी धूप बनाई। स्वर्ण धूपायन में धर खेऊं चहुं दिशि गंधसु छाई॥ शीतल जिनके युग चरणाम्बुज पूजूं मन वचकाई। रोग शोक दुःख दारिद नाशैं भव आताप मिटाई॥ ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल-श्रीफल आम अनार सुकेला एला चिरभट लावें। स्वर्ण थाल में धर अति प्राशुक देखत मन ललचावें॥ शीतल जिन के युग चरणाम्बुज पूजूं मन वचकाई। रोग शोक दुःख दारिद नाशैं भव आताप मिटाई। ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण-प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ-वारि सुचंदन अक्षत वारिज नेवज विविध प्रकारा। दीप धूप फल वसु विधि लेके अर्घ बनाय

सुधारा ॥ शीतल जिनके युग चरणाम्बुज पूजूं मन वच काई । रोग शोक दुःख दारिद नाशैं भव आताप मिटाई । ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ पंचकल्याणक । सोरठा ।

गर्भ—आरण स्वर्ग विहाय, आठैं कृष्ण सुचैत की । गर्भ सुनंदा आय, धनद रतन बरखाइयो ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय चैत्र कृष्णअष्टमी गर्भ कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जन्म—माघ कृष्ण तिथि जान, चक्रेश्वर संज्ञा कही । जन्मे युतत्रय ज्ञान, शीतल शीतल करन को ।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय माघ कृष्ण द्वादशी जन्म कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा

तप—जन्म सुदिन तिथि आय, योग धरो बन जाय के । मन पर्यय उपजाय, ध्यायो आतम जिन तवै ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेंद्राय माघ कृष्ण द्वादशी तप कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

ज्ञान—केवल लब्धि उपाय, पौष कृष्ण चौदस दिना । समवसरन सुख दाय, धनद देव रचना रचो ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय पौष कृष्ण चतुर्दशी ज्ञान कल्याण प्राप्ताय अर्घंनिर्वपामीतिस्वहा ।

निर्वाण—मोक्ष गये जिनराय, सम्मेदाचल शीसतैं । हम पूजें मन लाय, अष्टमि आश्विन शुकल को ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेंद्राय आश्विन शुक्लाष्टमी मोक्ष कल्याण प्राप्ताय अर्घंनिर्वपामीति स्वाहा ।

क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप-घृत सनेह करपूर बातिका रतन दीप उजियारे। जोय धरे तुम सन्मुख हे जिन मोह अंधानरवारे॥ शीतल जिन के युग चरणाम्बुज पूजूं मनवच काई। रोग शोक दुःख दारिद नाशैं भव आताप मिटाई॥ ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप-कृष्णागर गोसीर सुचंदन ताकी धूप बनाई। स्वर्ण धूपायन में धर खेऊं चहुं दिशि गंधसु छाई॥ शीतल जिनके युग चरणाम्बुज पूजूं मन वचकाई। रोग शोक दुःख दारिद नाशैं भव आताप मिटाई॥ ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल-श्रीफल आम अनार सुकेला एला चिरभट लावें। स्वर्ण थाल में धर अति प्राशुक देखत मन ललचावें॥ शीतल जिन के युग चरणाम्बुज पूजूं मन वचकाई। रोग शोक दुःख दारिद नाशैं भव आताप मिटाई। ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण-प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ-वारि सुचंदन अक्षत वारिज नेवज विविध प्रकारा। दीप धूप फल वसु विधि लेके अर्घ

सुधारा ॥ शीतल जिनके युग चरणाम्बुज पूजूं मन वच काई। रोग शोक दुःख दारिद नाशैं भव आताप मिटाई। ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंचकल्याणक। सोरठा।

गर्भ–आरण स्वर्ग विहाय, आठैं कृष्ण सुचैत की। गर्भ सुनंदा आय, धनद रतन बरखाइयो ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय चैत्र कृष्णअष्टमी गर्भ कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म–माघ कृष्ण तिथि जान, चक्रेश्वर संज्ञा कही। जन्मे युतत्रय ज्ञान, शीतल शीतल करन को।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय माघ कृष्ण द्वादशी जन्म कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा

तप–जन्म सुदिन तिथि आय, योग धरो बन जाय के। मन पर्यय उपजाय, ध्यायो आतम जिन तवै॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेंद्राय माघ कृष्ण द्वादशी तप कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

ज्ञान–केवल लब्धि उपाय, पौष कृष्ण चौदस दिना। समवसरन सुख दाय, धनद देव रचना रचो ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय पौष कृष्ण चतुर्दशी ज्ञान कल्याण प्राप्ताय अर्घंनिर्वपामीतिस्वहा।

निर्वाण–मोक्ष गये जिनराय, सम्मेदाचल शीसतैं। हम पूजें मन लाय, अष्टमि आश्विन शुक्ल को ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेंद्राय आश्विन शुक्लाष्टमी मोक्ष कल्याण प्रप्ताय अर्घंनिर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला। दोहा।

महाअर्घ-शीतलनाथ जिनंद तन, नव्वै धनुष प्रमान। हेमवरण अति सोहनों, सुरतरु लक्षण जान॥

चौपाई-नमूं नमूं जिन शीतल नाथ। शरणागत को करत सनाथ॥ भवदधि तारण पोत समान। अधम उधारण को भगवान॥ २॥ तज आलस अति हरषित होय। तुमरो दर्श लखे जन कोय॥ सो होवे निश्चय सरदही। सहस्राक्ष कर दरशत सही॥ ३॥ तुमरो पंथ गहै जे आय। तेशिव पुर को गमन कराय॥ जो तुमरे गुण गावे ईश। तिन गुण गावे सकल मुनीश॥ ४॥ तुमरे चरण विषे लव लाय। ते जन वीतराग पद पाय। नृत्य करे तुम आगे कोय॥ तिस घर शकी नटवा होय॥ ५॥ तुम चरणाम्बुज रजशिर लहे। परम औषधी सम शर दहे। कुष्ट आदि सब रोग नसाय। कोटि भानु सम तन दरसाय॥६॥ जे जन रूप लखें तुम देव। करें कुदेव तनी नही सेव॥ मकर ध्वज सम रूप रसाल। भव भव तन पावे सुख भाल॥ ७॥ जे वाणी तुमरी चित धरें। अन्य ग्रन्थ शरधा नहिं करें॥ ते बहु श्रुत के पाठी होय। केवल ज्ञान लहें नर सोय॥ ८॥ तुमरो न्हौन करे चितधार। सुवरण रतन कलस भर वार॥ ताको मेरु सुदर्शन जाय। मघवा न्हौन करे हरषाय॥ ९॥ अष्ट द्रव्य अति प्राशुक लाय। पूजा करे भविक हरषाय॥ पूजनीक पद पावे सोय। इंद्रादिक कर पूजित होय॥ १०॥ भली भांत जानी तुम रीत। भई नाथ मेरे परतीत॥ यातें चरण कमल में आय। भ्रमर समान

रहूं लवलाय ॥ ११ ॥ भयो सौख्य सो कह्यो न जाय। सकल सिद्धि मैं आज लहाय ॥ तुम गुण को पाऊं नहिं ओर। करूं बीनती युग कर जोर ॥ १२ ॥ वखतावर रतन। इम भनी। हम को दीजे त्रिभुवन धनी ॥ भवभव शरण तिहारी ईश। पावें सदा जु हे जगदीश ॥ १३ ॥

घत्ता छन्द–शीतल गुण केरी माल उजेरी टारत फेरी भवकेरी। जे पूज रचावें मंगल गावें तिन घर रामा ह्वै चेरी ॥ १४ ॥ ऊँ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ आशीर्वादः–सोरठा–शीतलनाथ जिनंद, जे पूजें मन लाय के।
पढ़ें पाठ सुखकंद, सो पावें संपत अषै ॥ १५ ॥ इत्याशीर्वादः ॥

इति श्रीशीतलनाथजिन पूजा संपूर्णा ॥ १० ॥

११ अथ श्रीश्रेयांसनाथजिन पूजा प्रारभ्यते।

(वखतावरसिंहकृत) छंद भुजंग प्रयात ।

स्थापना–श्रियांसं जिनेशं सुमेटे कलेशं, पिता बिम्ल के चर्न सेवें सुरेशं ।
पुरी पंच आनन में जन्म लीना, सुथापूं तुम्हें तिष्ठिये हे प्रवीना॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्र अत्रावतराऽवतर संवौषट् आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भवभव वषट् सन्निधीकरणम् ॥

अथ अष्टक। (चाल अठाई रासेको)

जल–हेजी प्राशुक जल शुभ लाय के, कंचन के कलश भराय। हेजी प्राणी सन्मुख धारा देत ही, रागादिक मल नस जाय प्राणी ॥ हेजीश्रेयनाथ पद पूजिये। पूजत सब इन्द्र सुआय प्राणी श्रेयनाथ पद पूजिये ॥ ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरारोग विनाशनाय जलंनिर्वपामीतिस्वाहा ॥

चंदन–हेजी बावन चंदन सीयरो, केसर संग घसाय प्राणी । जिन चरणन अरचा करूं, संसार दाघ मिट जाय प्राणी॥ हेजीश्रेयनाथ पद पूजिये। पूजत सब इन्द्र सुआय प्राणी श्रेयनाथ पद पूजिये ।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय गर्भ जन्म तप ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अक्षत–हेजी मुक्ता सम अक्षत लिये, रजनी पति की उनहार प्राणी। पुंज करे अति सोहने, ते पद पावें अविकार प्राणी॥ हेजी श्रेयनाथ पद पूजिये। पूजत सब इन्द्र सुआय प्राणी श्रेयनाथ पद पूजिये॥ ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय गर्भ,जन्म तप,ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प–हेजी राय बेल ले केतकी, इन आदिक सुमन अपार प्राणी। चरणन पास चढाइये, दे मदन वान निरवार प्राणी॥ हेजी श्रेयनाथ पद पूजिये। पूजत सब इन्द्र सुआय प्राणी श्रेयनाथ पद पूजिये। ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म,तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय कामवाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य–हेजी व्यंजन तुरत बनायके,चरु मिष्ट मनोहर आन प्राणी। कंचन थारी में धरे,पूजत ह्वै क्षुधाकी हान प्राणी॥ हेजी श्रेयनाथ पद पूजिये। पूजत सब इन्द्र सुआय प्राणी श्रेयनाथ पद पूजिये। ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय गर्भ,जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप–हेजी रतनन के दीपक बने,घृत पूरित जोत जगाय प्राणी। जगमग जगमग कर रहे जिन आगे

मोह नसाय प्राणी ॥ हेजी श्रेयनाथ पद पूजिये । पूजत सब इन्द्र सुआय प्राणी श्रेयनाथ पद पूजिये । ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप,ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

धूप–हेजी अगर तगर चन्द मिले, दश गंध हुताशन मांह प्राणी । खेवत प्रभु आगे भली, सब अष्ट करम जरजाय प्राणी ॥ हेजीश्रेयनाथ पद पूजिये। पूजत सब इन्द्र सुआय प्राणी श्रेयनाथ पद पूजिये । ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

फल–हेजी श्रीफल सेब अनार ही, पिस्ता बादाम छुहार प्राणी । रतन रकाबी में भरे, ध्यावत पावे शिवनार प्राणी ॥ हेजी श्रेयनाथ पद पूजिये ॥ पूजत सब इन्द्र सुआय प्राणी श्रेयनाथ पद पूजिये ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय गर्भ,जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्घ–हेजी आठों द्रव्य प्रकार के, शुभ अर्घ करो मन लाय प्राणी । श्रेयनाथ आगे धरे, संसार जलधि तिरजाय प्राणी । हेजी श्रेयनाथपद पूजिये ॥ पूजत सब इन्द्र सुआय प्राणी श्रेयनाथ पद पूजिये । ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञाननिर्वाण पंचकल्याण प्राप्तय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ पंचकल्याणक । छंद पायता ।

गर्भ–तजके पुष्पोत्तर आये, विमला माता सुख पाये। अलि जेष्ठ छट्ट को ध्याऊं, तादिन मैं पूज रचाऊं ॥
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय ज्येष्ठ कृष्ण षष्ठी गर्भ कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा।

जन्म–इक्ष्वाक वंश में आई,जन्मे त्रिभुवन सुख दाई । फागन ग्यारस अंधियारी, मैं पूजूं अष्ट प्रकारी ॥
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय फाल्गुणकृष्ण एकादशी जन्मकल्याण प्राप्तायअर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा।

तप–सब भोग अनित्य निवारे, तप दुर्द्धर श्रीधर धारे। दिन जन्म तनो शुभजानो,हम पूजें दुख सबहानो ॥
ॐ ह्रींश्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्राय फाल्गुण कृष्णएकादशी तपः कल्याण प्राप्तायअर्घं निर्वपामीतिस्वाहा

ज्ञान–सूर्येन्दू संगम जानो, तिथि माघकृष्ण उर आनो। शुभ केवल ज्ञान सुपायो,हम तुम पद पूज रचायो॥
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्राय माघकृष्णअमावस्या ज्ञानकल्याण प्राप्ताय अर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा॥

निर्वाण–चारों अघातिया चूरे,शिव मांह बसे सुख पूरे। सम्मेद शैल ते पाई,श्रावण सित पूनम आई ॥
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेंद्राय श्रावण शुक्ल पूर्णिमामोक्ष कल्याण प्राप्ताय अर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा।

अथ जयमाला । दोहा ।

महाअर्घ- अस्सी चाप उतंग तनु, हेम वरण छविदेत । गैंडा लक्षण चर्न में, श्रेयनाथ भव सेत ॥ १ ॥

छन्द पद्धड़ी-जय जय श्रेयांस तुम गुण अनंत, गणधर वरणत पावे न अंत। अतिशय दश सहित जाए जिनंद, पित मात तबै बाढो अनंद ॥ २ ॥ संहनन आदि संस्थान सार, शुभ लक्षण बल बीरज अपार। हित मित कारी तुम वचन जोय, सित श्रोणित तन में मलन होय ॥ ३ ॥ वपु सहित सुगंध न स्वेद होत, तुम रूप देख रबि लजत जोत। फिर समवसरन में दश लहाय, चतुरानन छबि वरनी न जाय ॥ ४ ॥ जय आप करत नभ में विहार, सब जीव लहैं साता अपार। सत योजन लोय सुभिक्ष थाय, उपसर्ग रहित छाया बिहाय ॥ ५ ॥ सब विद्या के ईश्वर महान, नख कच बाढत न अहार मान। चष झपंत नहीं भ्रुकुटी नसाय, धनधान्य जीव तुम दरश पाय ॥ ६ ॥ अमरन कृत चौदह तित सुजान, अवनी दीषत दर्पण समान। षट् ऋतु के फूल दिपैं अपार, सब जंतु मित्रता भाव धार। ॥ ७ ॥ बाजत समीर त्रय गुण समेत, बारिज चर्णन तल छबि सुदेत। दिश निर्मल सब आनंद कंद, गंधोदक बरषत मंद मंद ॥ ८ ॥ है मागधि भाषा अति महान, सब फले अठारह भेद नाम। मल बर्जित सुर नभ जय करंत, शुभ धर्म चक्र आगे चलंत ॥ ९ ॥ वसु मंगल द्रव्य समेत एव, चौंतिस अतिशय कर सहित देव। जय अष्ट प्राति हारज दिपंत, दृग शर्म ज्ञान बीरज अनंत ॥१०॥ इम छियालीस गुण सहित ईश, विहरत आये सम्मेद शीस। तहां प्रकृति पिचासी छीन कीन, शिव जाय विराजे शर्म लीन ॥ ११ ॥ गुण अगुर लघु आदिक लहाय, उत्पादक व्यय ध्रुव सब लखाय। बखतावर रतन कहैं बनाय, मम संकट में हूजे सहाय ॥ १२ ॥

घत्ता छंद–श्रेयांस कृपाला दीनदयाला भव दुःख टाला गुण माला। हम नित प्रति ध्यावें मंगल गावें शिव सुख पावें दर हाला॥ १३॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ आशीर्वादः। अडिल–श्रेयनाथ जिन तनी सरस पूजा करैं। जे बाचैं यह पाठ हरष उर में धरैं॥ तिन घर ऋद्धि अपार सकल मंगल रलैं। अनुक्रम ते शिव जांय सर्व अघको दलैं॥ १४॥

इत्याशीर्वादः। इति श्रीश्रेयांसनाथजिन पूजा सम्पूर्णा॥ ११॥

सुवासु पूज्य देव के पदारविंद लाल हैं। नमें सुरेंद्र चंद्र आय नाय के सुभाल हैं ॥

ओं ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप—करूं जु अग्र तग्र चूर चंदनादि जानिये। दिये अपार कर्म दुःख खेयते सुहानिये ॥

सुवासु पूज्य देव के पदारबिंद लाल हैं। नमें सुरेन्द्र चंद्र आय नाय के सुभाल हैं ॥

ओं ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल—अनार अंब सेव पक चिर्भटादि लीजिये। चढ़ाय हूं सरोज चर्न मोक्ष सौख्य दीजिये ॥

सुवासु पूज्य देव के पदार बिंद लाल हैं। नमें सुरेंद्र चन्द्र आय नाय के सुभाल हैं ॥

ओं ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ—जल फलादि द्रव्यसार अष्टजो मिलाय के। लाय हूं जिनेश अग्र अर्घ को बनाय के ॥

सुवासु पूज्य देव के पदार बिंद लाल हैं। नमें सुरेंद्र चंद्र आय नाय के सुभाल हैं ॥

ओं ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंचकल्याणक। चाल चून्दडी की।

गर्भ-साढ कृष्ण छठ पावनी, गर्भ विषे जिन आय हो। श्रीआदिक देवी सबै, सेवे माता पाय हो॥
गर्भ कल्याणक पूज हूं॥ ओं ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय आषाढ कृष्ण षष्ठी गर्भ कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म-फागुण चौदशि कृष्ण ही, जन्मे श्री जिन देव हो। इंद्र तबै गिरि मेरु पै, न्हवन करो कर सेव हो॥
जन्म कल्याणक पूज हूं॥ ओं ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय फाल्गुण कृष्ण चतुर्दशी जन्म कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तप-भव तन भोग असार है,कर विचार जिन राय हो। बाल पने दीक्षा लही, जन्म तने दिन आय हो॥
तप कल्याणक पूज हूं॥ ओं ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेंद्राय फाल्गुण कृष्ण चतुर्दशी तपः कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

ज्ञान-केवल ज्ञान प्रकाशियो, माघजु दोयज शुक्ल हो। भव्यातम वोधे घने, शुभ विहार जिन कीज हो।
ज्ञान कल्याणक पूज हूं॥ओं ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय माघ शुक्ल द्वितीया ज्ञान कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण-योग निरोध किये सबै, चंपापुर वन आय हो। भाद्रों श्वेत चतुर्दशी, मोक्ष जिनेश्वर पाय हो॥

मोक्ष कल्याणक पूज हूं ॥ ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी मोक्ष कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला। दोहा।

महाअर्घ-बाल ब्रह्मचारी प्रभु, अरुण बरण अविकार। सत्तर धनुष सुउच्च तन, वासु पूज्य भवतार॥१॥

भुजंग प्रयात छंद-अजी नाथजी, एक अर्जी हमारी, सुनों चित्त देके कहूं मैं प्रचारी। सबै आप के ज्ञान तेरे सुछाई, कहूं क्या भला मैंने जो दुःख पाई ॥ २ ॥ यही आठ कर्म दिये दुःख भारी, सुनें कौन मेरी करूं जो पुकारी। सबों में अगारी महा मोह राजा, भ्रमायो हमें बहुत कीनों अकाजा। ॥ ३ ॥ दुती ज्ञान वर्न हरी बुद्ध मेरी, न होने दई नाथ ज्ञानं उजेरी। तृती दर्शना बर्न देखन्न देवे, छुटे फंद याको तबै आप बेवे ॥४॥ बली अंतरायं करी जो नवीनी, छती बस्तु मोको जु भोगन्न दीनी। बडो नाम कर्मं सबै जेर कीने, गिने नहिं जावैं इते नाम दीने ॥ ५ ॥ जबै गोत कर्म कियो आन फेरो, कभी उच्च कीनो कभी नीच चेरो। कभी सागरों की धरी आय केती, कभी स्वासके भाग में आय एती ॥ ६ ॥ भली बेदनी स्वर्ग के सुक्ख धारे, असाता उदय नर्क में आन डारे। यही बंध मूलं कुभव में भ्रमायो, डरो मैं इन्हों से तेरी शर्णं आयो ॥ ७ ॥ बचावो इन्हों से अजी आप स्वामी, बडो वृद्ध तेरो सबै माहनामी। जिते शर्न आये तिते पार पाये, तिनोंके चरित्रं कथा बेद गाये ॥८॥ सबै देव

देखे नहीं तो समाना, जु कोई धरे तीय कोई कमाना । जबै काम ने आन के शरजु मारे, तबै भ्रष्ट ब्रह्मादि हूवे सुसारे ॥ ९ ॥ तजी आपने मांग बाला तुम्हारी, वरी नाहिं नारी भये ब्रह्मचारी। बहत्तर लख वर्ष की आय सारी, किये नाह राजं बने योग धारी ॥ १० ॥ सबै कर्म जारे गही मोक्षनारी, सुउद्यान चंपापुरी के मंझारी। प्रभु दास को आपनो बास दीजे, जोई आप भावे वही बेग कीजे ॥ ११ ॥

घत्ताछन्द–जैजै जग खंडन सब गुण मंडन बासुपूज्य जिन काम हना । बखता नित ध्यावे मंगल गावे आतम ज्ञान प्रकाश घना ॥ १२ ॥ ऊँ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय गर्भ जन्म तप ज्ञान निर्वाणपंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घपदप्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ आशीर्वादः । छप्पय सिंहावलोकन–जो पूजे मन लाय पूजपद ताको होवे, होवे काम स्वरूप सर्व दुःख दारिद खोवे । खोवे सकल अज्ञान करे अनुमोदन कोई, कोई बांचे पाठ तास घर संपति होई । हो इस लोक को छिनकमें, छिन में पावे शिव सिरी। श्रीवासुपूज्य जिन राज को, रतन भली पूजा करी ॥ ३ ॥ इत्याशीर्वादः ॥ इति श्रीवासुपूज्य जिन पूजा संपूर्णाः ॥ १२ ॥

१३ अथ श्री विमलनाथजिन पूजा लिख्यते।

(बखतावरसिंहकृत) छंद ।

स्थापना–श्री विमल जिनवर जन्मलीनो नगर कंपिल्या कही ।
कृत धर्म के सुत ऊपने जिस मात जय सेन्या सही ॥
शूकर चिह्न चरनन विराजे तिष्टये इत आय के ।
मैं हाथ जोड़ करूं सुविंती थाप हूं सिर नाथ के॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्र अत्रावतराऽवतर संवौषट् आह्वाननम् ।
ओं ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनम् ।
ओं ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भवभव वषट् संन्निधीकरणम् ॥

अथ अष्टक । बसंत तिलका छंद ।

जल–मुनि मन समसीरं बारि उज्वल सु लाऊं। भर कनक सुझारी धार तोको चढाऊं॥ तुम विमल जिनंदा मात जयसेन नंदा। जजहूं चर्न तेरे काटिये कर्म फंदा॥ ओंह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्ममृत्यु जरारोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।
चंदन–लेय शुभ हर गंध संग कुंकुम रलाऊं, धर रतन कटोरी पूज तेरी रचाऊं ॥

मात जयसेन नंदा। जजहूं चर्न तेरे काटिये कर्म फंदा॥ ओंह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म,
तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।
अक्षत-निशि कर सम श्वेतं सार तंदुल नवीने। निर्मल जल धोये पुंजताके करीने। तुम विमल जिनंदा
मात जयसेन नंदा। जजहूं चर्न तेरे काटिये कर्म फंदा॥ ओं ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ,
जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।
पुष्प-सुमन कलप केरे कुंद बेला चुनाये। उड़त तिस सुगंधा तास पै भौर छाये॥ तुम विमल जिनंदा
मात जयसेन नंदा। जजहूं चर्न तेरे काटिये कर्म फंदा॥ ओं ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ,
जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय काम वाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
नैवेद्य-घृत कर कीने चार मोदक जुताजे। भर सुवरण थारं पूजते भूख भाजे॥ तुम विमल जिनंदा
मात जयसेन नंदा। जज हूं चर्न तेरे काटिये कर्म फंदा॥ ओं ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ,
जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
दीप-मणि कनक जड़ाये तास दीवे बनाये। बहु जग मग जोतं थार भर के चढाये॥ तुम विमल जिनंदा
मात जयसेन नंदा। जजहूं चर्न तेरे काटिये कर्म फंदा॥ ओं ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ,
जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
धूप-अगर तगर गंधं खेय हूं धूप दानं। मम करम दहीजे दीजिये आप थानं॥ तुम विनल जिनंदा

मात जयसेन नंदा। जजहूं चर्न तेरे काटिये कर्म फंदा॥ ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल–फल मधुर रसीले सेव दाडिम सुलाये। लख ललित अनूपा सर्व इंद्री लुभाये॥ तुम विमल जिनंदा मात जयसेन नंदा। जजहूं चर्न तेरे काटिये कर्म फंदा। ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ–जल फल वसु लेके द्रव्य सारे समारे। कर रतन रकाबी पूज हूं अर्घ धारे॥ तुम विमल जिनंदा मात जयसेन नंदा। जजहूं चर्न तेरे काटिये कर्म फंदा॥ ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंचकल्याणक। चौपाई।

गर्भ–शुक्र सुरग तज आये एव। माता सेन्या गर्भ सुदेव। जेठ कृष्ण दशमी सुखकारि। सेव करें नित छपन कुमारि॥ ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय ज्येष्ठ कृष्ण दशमी गर्भ कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म–माघ श्वेत तिथि तुरी बखान। जन्मे तीन ज्ञान युत आन॥ कंपिल्ला नगरी शुभ सार। भए सु घर घर मंगल चार॥ ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय माघ शुक्ल चतुर्थी जन्म कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तप-कारण लख वैराग उपाय, रतन जडित शिविका हरि लाय॥ कानन में तप दुर्द्धर धार, जन्म तनो दिन है अविकार॥ ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय माघ शुक्ल चतुर्थी तपःकल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान-चार घातिया कर्म निवार, केवल जोत जगी सुख कार॥ माघ शुक्ल षष्ठी दिन जोय, हम पद पूजे हरषित होय॥ ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय माघ शुक्ल षष्ठी ज्ञान कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण-भ्रमर षाढ अष्टमके दिना। सम्मेदाचल तें शिव जिना॥ पायो विमल विमल पद श्वेत। हम पद पूजें हरष समेत। ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय आषाढकृष्ण अष्टमी मोक्ष कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला। दोहा।

महाअर्घ-धनुष साठ तन सोहनो, तप्त हेम सम जान। दीजे बुद्धि दयाल मम, वरणू पंचकल्याण॥

छन्द कामिनी मोहन-नाथ विमलेश पद विमल शोभा लहै। इंद्र नागेंद्र नर सेव तेरी गहै॥ जान शुभ जेठ की कृष्ण दशमी दिना। स्वर्ग सहस्रार को त्याग के हे जिना॥ २॥

आर्या छन्द-मति श्रुति अवधि सुलाये, आन विराजे सु कूष माता की। धनद रतन बरषाये, इंद्रादिक करें सेव त्राता की॥ ३॥

छंद कामिनी मोहन–सेव देवी करें सरस अंबा तनी। नगर कंपिल्लका अधिक शोभा बनी॥ मास नौ गर्भ के सार सुख में गये। तात को भूप सब शीस नावत भये॥ ४॥

आर्या छंद–जन्में त्रिभुवन स्वामी, शुकल चतुर्थी माघ की आई। सकल सुरासुर नामी, आसन कंपात शीस सब नाई॥ ५॥

छन्द कामिनी मोहन–शीसको नाय के चलन उमगो हरी। रचो ऐरावती मान के धन घरी॥ जासके रदन बहुतास पै सर बने। कमलिनी पत्र पै नृत्य देवी ठने॥

आर्याछंद–ताल मृदंग सुभेरी, बीना बंशी सु चंग सुर नाई। नाचें लेले फेरी, हाव भावसहित सप्त सुरगाई॥

छन्द कामिनी मोहन–गात बहु भांत पग झमक झमक झमकती। छमकछं छमकछं चमकचं चमकती॥ दमकदं दमकदं दामिनीसी भ्रमें। त्रिदश सब देखके शीस तुम को नमें॥

आर्याछंद–इत्यादि शोभ भारी, मघवा ले लार आय पुर मांही। माया मई शिशु धारी, शची लाय इंद्र देय हरषाई

छन्द कामिनी मोहन–लेय गीर्वाण गजराज चढके चले। जाय गिरि मेरु पै सकल ही सुर रले॥ सहस अर आठ तब वारि कलशे भरे। धार तुम शीस पै इंद्र कर ते ढरे॥ १०॥

आर्या छंद–न्हौंन तनी विध सारी। करके शृंगार तात घर लाये। नृत्य कियो अति भारी, पूजे पित मात धाम निज ध्याये॥ ११॥

छंदकामिनी मोहन–ध्याय बहु धनद नित सेव थारीकरी। कुमर वय तरुण लह राज पदवी धरी। राज को

छाड बन जांय दीक्षा गही। धार निज ध्यान को कर्म तैं जय लही ॥ १२ ॥

आर्याछंद–पायोकेवलज्ञान,दीनो उपदेश भव्यबहुतारे।शिखर समेद महानं,पाईशिवसिद्धअष्ट गुणधारे ॥

छन्द कामिनी मोहन–धार गुण सिद्ध के आप नामी भये। पूजता अवनि को शक्र निज थल गये ॥

हे दया सिंधु यह टेर सुन लीजिये। दास बखता रतन तास शिव दीजिये ॥ १४ ॥

घत्ता छन्द–जय विमल जिनेश्वर कर्म हनेश्वर दुःख दरिद्र नाशे पलमें। जे पूजा भारी करैं तुम्हारी

ते उपजे जा शिवथल में ॥ १५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय

अनर्घ पद प्राप्तये महाअर्घं नि र्पामीति स्वाहा ॥

अथ आशीर्वादः। सोरठा–पूज पढें यह पाठ, अथवा अनुमोदन करैं। अष्ट करम को काट, ते पावैं

शिव सुख महा ॥ १६ ॥ इत्याशीर्वादः। इति श्रीविमलनाथजिन पूजा संपूर्णा ॥ १३ ॥

१४ अथ श्री अनन्तनाथजिन पूजा प्रारभ्यते ॥

(बखतावरसिंह कृत) माधवी छंद ।

स्थापना—तज के पुष्पोत्तरसार बिमान, पिता हरसेन के पुत्र कहाये ।
जगमात सु सूर्य के नंदन आप, भवो दधितैं भव पार लगाये ॥
जिनऽनंत तुम्हें हम थापत हैं, मन शुद्ध किए अति ही उमगाये ।
जिन नाथ हमें अब कीजे सनाथ, सुदास के काज सबै बन आये ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेंद्र अत्रावतराऽवतर संवौषट् आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथ जिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ॥
ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेंद्र अत्र मम संनिहितो भव भव वषट् संन्निधी करणम् ।

(अथ अष्टक) गीता छंद ।

जल—जोहिमनगिरिपै पदम ह्रद शुभ, तास को जल लाइये । भरगंध मिश्रित धार दीजे, तृषा रोग नशाइये ॥ श्री नंत जिनवर छबि सुतेरी, देखते नाशैं अरी । इंद्र चंद्र धनेन्द्र चक्री, आनपद सेवाकरी ॥ ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेद्राय गर्भ जन्म तप ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्युजरारोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

चंदन–घनसार गंध घसाय चंदन, कनक थाली में धरो। तुम चरण चरचूं भाव सेती, दाह मेरी सब हरो॥ श्री नंतजिनवर छबि सुतेरी, देखतें नाशें अरी। इंद्र चंद्र धनेन्द्र चक्री, आन पद सेवा करी॥ ॐ ह्रीं श्री अनन्त नाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारताप रोग विनाशनाय चन्दनंनिर्वपामीति स्वाहा॥

अक्षत–सित फेन गंग तरंग जैसे, सार अक्षत कर लिये। पद अषैदाता के सुढिग मैं, पुंज नीके धर दिये॥ श्री नंतजिनवर छवि सुतेरी, देखते नाशें अरी॥ इंद्र चंद्र धनेन्द्र चक्री, आनपद सेवा करी॥ ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥

पुष्प–गेंदा गुलाब अरु सेवती जूही चमेली चुन लई। धारे चरण ढिग सुमन मैं पीडा मनोज तनी गई॥ श्री नंत जिनवर छबिसुतेरी देखतें नाशें अरी। सब इंद्र चंद्र धनेंद्र चक्री आनपद सेवा करी॥ ॐ ह्रीं अनन्तनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय काम वाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीतिस्वाहा॥

नैवेद्य–पकवान नीके सरस घीके, सितारस में पक रहे। यह क्षुधारोग बिनाश मेरी, चरण तेरे लग रहे॥ श्री नंत जिनवर छबि सुतेरी देखते नाशें अरी। सब इंद्र चन्द्र धनेन्द्र चक्री, आन पद

सवा करी ॥ ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

दीप–दीपक नवीने बार दीने, सरस होत उजासका । मम मोहध्वांत विनाश कीजे, सुपर ज्ञान प्रकाशका । श्री नंत जिनवर छबि सुतेरी, देखतें नाशें अरी । सब इंद्र ,चंद्र धनेन्द्र चक्री आन पद सेवा करी ॥ ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

धूप–करपूर कृष्णागर सुचंदन,लौंग आदि मिलायहूं । दश गंध खेऊं ढिग तुम्हारे, अष्ट कर्म जराय हूं ॥ श्री नंतजिनवर छबि सु तेरी , देखते नाशें अरी, सब इंद्र चंद्र धनेन्द्र चक्री आन पद सेवा करी ॥ ॐ श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्रायगर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

फल–बादाम पिस्ता दाख दाडिम, षारिकादि मंगाईये । धारूं सुपद ढिग थाल भरके, देत सब सुख पाइये ॥ श्री नंतजिनवर छबि सुतेरी, देखते नाशें अरी । सब इंद्र चंद्र धनेन्द्र चक्री, आन पद सेवा करी ॥ ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञाननिर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्षफल प्राप्तये फलंनिर्वपामीतिस्वाहा ॥

अर्घं–लेबारि गंधमयी सुअक्षत, मन नेव -

सब इंद्र चंद्र धनेन्द्र चक्री, आनपद ही ॥ श्री नंतजिनवर छबि सुतेरी, देखते नाशें अरी । सेवा करी ॥ ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घपदप्राप्तये अर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा ॥

अथ पंचकल्याणक। छंद चोटक।

गर्भ–कलि कातिक एकम को गिनियें, गरभागम के दिन को भनिये। तज बारम स्वर्ग जिनंद सही, जननी पद सेव शची जु गही ॥ ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेंद्राय, कार्तिक कृष्ण प्रतिपदा गर्भ कल्याण प्राप्ताय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥

जन्म–जन्में त्रय ज्ञान लिये जिनजी, अलि जेठ दुवादशि के दिनजी। तिहुंलोक विषे जयकार भयो, हरि सेन नरेन्द्र सुदान दियो ॥ ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेंद्राय ज्येष्ठ कृष्ण द्वादशी जन्म कल्याण प्राप्ताय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥

तप–जिन भावत द्वादश भावन कों, करमादिक रोग उडावन को। तम द्वादश जेठ सु कानन में, जिन जाय लगे निज ध्यानन में ॥ ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेंद्राय ज्येष्ठ कृष्ण द्वादशी तपः कल्याण प्राप्ताय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥

ज्ञान–बदि मावस चैतसु ज्ञानबली, जिन पाय जु कर्म समूह दली। शुभ तत्त्व प्रकाशक वायक हैं,

हम पूजत भक्ति बढायक हैं ॥ ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेंद्राय चैत्र कृष्ण अमावस्या ज्ञान कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

निवार्ण–सुसमेदथकी जिनमोक्ष गये,त्रयलोक शिरोमणि सिद्ध भये। गिन चैत अमावस्याके जो दिना, हम ध्यावत शीस नवाय घना ॥ ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेंद्राय चैत कृष्ण अमावस्या मोक्ष कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ जयमाला। दोहा।

महाअर्घ–व्योम अंगुलन नहिं नपे,उडुगण गिनेन जांय। त्यों तुम सुगुण अनंतहैं,हम से किम बरनांय ॥ पै तुम भक्ति सो हिये मम, प्रेरत हैं बहु आय। तातैं सुगुण सुमालिका, पहरूं कंठ बनाय ॥

छंद त्रोटक–जयअनंत जिनेश्वर चर्न नमूं, भव बारिधि तारन तर्न नमूं। जब गर्भ विषे थित आयधरी, धनदेव रची आयुध्या नगरी ॥ ३ ॥ अलि जेठ दुवादशि आय जये, भवजीवन के दुःख दूर गये। सब आयुष लाख जु तीस कही, कुमरापन साढे सात गई ॥ ४ ॥ पंदरै लख वर्ष सुराज किये, कछु कारण पाय सुत्याग दिये। तब ही बन जाय के योग धरो, निज आतम सार विचार करो, ॥ ५ ॥ चव घात तनी सब सैन दली,लहि केवल ज्ञान प्रकाश वली। दिव ध्वन्नि खिरे

गण ईश पचास प्रकाश करे ॥ ६ ॥ चरचा नव तत्त्वतनी सुकही, अणु व्रत महा व्रत सर्व सही । दश धर्म तनें सब भेद कहे, अनुयोग सुने भव शर्मलहे ॥ ७ ॥ इन आदिक भेद सुनो सब ही, कितने इक योग लियो तब ही । शुभ केतक श्रावक धर्म गहो, बहुतेयक सम्यकसार लहो ॥ ८ ॥ फिर आरज देश बिहार करो, भवि बोध भवोदधिपार धरो । एक मास तनी जद आयु रही, अवनी सम्मेद तनीजु गही ॥ ९ ॥ तहां योग निरोध के मोक्ष गये, सुख लीन महा प्रभु आप भये । तुम ही सब विघ्न बिनाशक हो, दुःख जन्म जरा मृत नाशक हो ॥ १० ॥ तुम नाम अधार हिये समरो, जिन पार करो मत देर धरो । बखता रतना इम अर्ज करी, न विलंब करो प्रभु एक घरी ॥ ११ ॥

घत्ताछन्द–यह मंगल माला दुःख सब टाला, सुख संपत छिन में बरनी । सब के मानन को गुण जानन को अष्टम छित में यह धरनी ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय गर्भ जन्म तप ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घपद प्राप्तये महाऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ आशीर्वादः । दोहा–श्री अनंत जिनदेव को, जो पूजे चितलाय । पुत्र मित्र धन धान्य यश, तिन घर सदा रहाय ॥ १३ ॥ इत्याशीर्वादः ॥ इति श्रीअनंतनाथ जिन पूजा संपूर्णा ॥ १४ ॥

१५ अथ श्रीधर्मनाथ जिनपूजा प्रारभ्यते ॥

(बखतावरसिंह कृत) कड़खा छन्द ।

स्थापना—छाड विमान सर्वार्थ सिद्धे महामात श्री सुव्रता कूष आये,
पिता नृपभान है भान सम तेज जिस नगर रतनापुरी इंद्र ध्याये ।
लेय गिरि मेरु पै न्हौन करते भये, एक हज्जार कलशे ढुराये,
धर्म जिन पूजिये पाप सब धूजिये थाप हूं चर्न में सीस नाये ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं श्री धर्म नाथ जिनेंद्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेंद्र अत्र मम सन्नहितो भव भव वषट् सन्निधी करणम् ॥

अथ अष्टक । छंद सुंदरी ।

जल—उदक श्वेत जु क्षीर समान ही, सुरन झारी भर कर आन ही । पूज हूं तुम चरन रिसाल जी, धर्म जिनवर धर्म दयाल जी ॥ ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेंद्राय गर्भ जन्म तप ज्ञान निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरारोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

चंदन-घसत कुंकुम चंदन लाइयो, सरस सौरभ पै अलि छाइयो । पूज हूं तुम चरण रिसालजी, धर्म जिनवर धर्म दयालजी ॥ ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय गर्भ जन्म तप ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अक्षत-अक्षत श्वेत महा छबि को धरें, कांति निशपति की देखत टरें । पूज हूं तुम चरण रिसालजी, धर्म जिनवर धर्म दयाल जी ॥ ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पचकल्याण प्राप्ताय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥

पुष्प-सुमन वर्न अनेक प्रकार के, जडत स्वर्ण मई कर धारके। पूज हूं तुम चरण रिसालजी, धर्म जिनवर धर्म दयाल जी ॥ ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाणपंच कल्याण प्राप्ताय कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥

नैवेद्य-लेय नेवज बिबिध प्रकार जी, सरकरा मिश्रित भरथार जी । पूजहूं तुम चरण रिसाल जी, धर्म जिनवर धर्म दयालजी । ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

दीप-घृत कपूर तनें दीपक भरे, जोय कर तुम मंदिर में धरे, पूज हूं तुम चरण रिसालजी, धर्म जिनवर धर्म दयालजी ॥ ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाणपंच कल्याण प्राप्ताय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

धूप–सर सुगंध धनंजय लहकती, खेय हूं दशगंध सु महकती। पूज हूं तुम चरण रिसालजी, धर्म जिनवर धर्म दयालजी ॥ ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

फल–जायफल लौंगादिक कर लिये, थाल भर तुम आगे धर दिये। पूज हूं तुम चरण रिसालजी, धर्म जिनवर धर्म दयालजी ॥ ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अर्घ–जल फलादिक मिष्ट मिलायके, करूं अर्घ सु तुम गुण गायके। पूज हूं तुम चरण रिसालजी, धर्म जिनवर धर्म दयालजी ॥ ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय अनर्घपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ पंच कल्याणक। दोहा।

गर्भ–अंधियारी वैशाख की, तेरस तिथी सु जान। मात सुव्रता गर्भ में, पुष्पोत्तर तज आन ॥
ॐह्रींश्रीधर्मनाथ जिनेंद्रायवैशाखकृष्ण त्रयोदशी गर्भकल्याणप्राप्ताय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा ॥

जन्म–माघ शुकल तेरस विषे, दश अतिशय धरमेश। जनमे हरि सुर गिरिजजे, हम पूजें हरषेश ॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथजिनेंद्रायमाघशुक्लात्रयोदशी जन्मकल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा ॥

तप–श्वेत माघ तेरस भली, योग धरो वन जाय। मन पर्ययलह ज्ञान जिन आतम

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेंद्राय माघ शुक्ल त्रयोदशी तपः कल्याण प्राप्ताय अर्घंनिर्वंपामीतिस्वाहा ॥
ज्ञान–चार घातिया नाशके, केवलज्ञान प्रकाश । समवसरन लक्ष्मी सहित, पूनम पौष उजास ॥
ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय पौष शुक्ल पूर्णिमा ज्ञान कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा ॥
निर्वाण–इंदु तनीतिथि जेठकी,संज्ञा ध्यान बखान । जगत पूज्य शिव पाइयो, सम्मेदाचल जान ॥
ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय ज्येष्ठशुक्लचतुर्थी मोक्षकल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा ॥

अथ जयमाला–दोहा ।

महाअर्घ–धर्मनाथ जिनकी छबी, कंचन बर्ण दिपंत । उन्नत पैतालिस धनुष बज्र चिह्न शोभंत ॥१॥

अडिल–धर्मजिनेश्वर देव नमूं शिरनायके, सर्वारथ सिध त्याग रतनपुर आयके । पिता भानु महाराज सुब्रता मातजी,तिनके सुत तुम भये जगत विख्यातजी॥२॥बरष लाख दश आयु भली तुमने लई,बरष अढाई लाख कुमरपन में गई। पांच लाख जिन वर्ष राज तुमनें कियो,सब परजा दुःख टालर यश जगमें लियो ॥ ३ ॥ कछु कारण लख राज त्याग बन में गये, पण मुष्टी कचलौंच परिग्रह तज दये । हुवे सहस अवनीश आपके संग तबै, भये दिगंबर रूप वरत धारे सबै ॥४॥ धर षष्ठम उपवास ध्यान में थिर भये, बर्द्धमानपुर माहिं असन हितको गये । धर्मसेन तहां राय सु भोजन पय दिये,नवधा भक्ति जुधार सप्त गुणको लिये॥५॥ पंचाश्चर्य महान तास घरमें भये,कर भोजन महाराज फेर कानन

गये। करत तपस्या घोर बर्ष इक यूं गयो,चारों कर्म नशाय ज्ञान केवल लयो ॥६॥ समवसरन के माहिं सकल रचना रची, आये सब सुर वृन्द सु जय जय धुन मचा। करें इंद्र तुम स्तुती पूज रचाय के, दोष अठारह रहित सु बरने गायके ॥ ७ ॥ गुण छालिस तुम माह बिराजे देवजी, तिंतालिस गण ईशकरें तुम सेवजी। भव्य जीव निस्तारन को तुमने सही, करो बिहार महान आर्य देशन कही ॥ ८ ॥ अंग बंग पंचाल मिसर गुतरातजी, काशी कौशल मगध देश विख्यात जी। देकर बहु उपदेश जीव तारे घने, गिरि सम्मेद पै आय अघाती सब हने ॥ ९ ॥ भये सिद्ध महाराज अष्टगुणमयसदा, फेर नहीं इस मांहि जिना आवन कदा। जो यह मंगल पाठ तुमारो चितधरे, सिंह चोर जल सर्प उपद्रव सब टरे ॥१०॥ करूं बीनती आपतनी निज काजजी,तुम ही बडे दयालु सुनो जिनराजजी। वखतावर अर रतन नमें शिर नायके, कीजे मम कल्याण टेर सुन आयके ॥ ११ ॥

घत्ता छन्द-यह वर गुण माला धर्म रसाला कंठ मांह जे धरें त्रिकाल। शुभज्ञान बढावें : नसावें शिवपुर को पावें दरहाल ॥ ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय गर्भ = पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पदप्राप्तये महार्घं निर्वपामीति

अथ आशीर्वादः। वसंत तिलका

रिद्धि भारी।

१६ अथ श्री शान्तनाथ जिन पूजा प्रारम्यते ॥

(वखतावरसिंहकृत) रोडक छंद।

स्थापना–सर्वारथ सु विमान त्याग गजपुर में आये। विश्वसेन भूपाल तास के नंद कहाये ॥
पंचम चक्री भये दर्प द्वादश में राजे। मैं सेवूं तुम चरण तिष्ठिये ज्यों दुःख भाजे ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भवभव वषट् सन्निधीकरणम्।

अथ अष्टक। कोशमालती छंद।

जल–पंचम उदधि तनो जल निरमल कंचन कलश भरे हरषाय। धार देत ही श्रीजिन सन्मुख जन्म जरामृत दूर भगाय ॥ शांतिनाथ पंचम चक्रेश्वर द्वादश मदन तनो पद पाय। तिन के चरण कमल के पूजे रोग शोक दुःख दारिद जाय ॥ ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरा रोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन–मलयागिर चंदन कदली नंदन कुंकुम जल के संग घसाय। भव आताप विनाशन कारण चर चूं

पूजे रोग शोक दुख दारिद जाय ॥ ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

(अथ पंच कल्याणक) छन्द उपगीत।

गर्भ—भाद्रव सप्तमि श्यामा, सर्वार्थ त्याग नागपुर आये। माता ऐरा नामा, मैं पूजूं ध्याऊं अर्घ शुभलाये॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ जिनेंद्राय भाद्रपदकृष्ण सप्तमी गर्भ कल्याणप्राप्ताय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा ॥

जन्म—जन्मे तीरथंकर जेठ असित चतुर्दशी सोहै। हरिगण नावें माथ, मैं पूजूं शांति चरण युग जोहे ॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेंद्राय ज्येष्ठकृष्ण चतुर्दशीजन्म कल्याणप्राप्ताय अर्घंनिर्वपामीति स्वाहा॥

तप—चौदस जेठ अंधारी, काननमें जाय योग प्रभु दीन्हा। नवनिधिरत्न सुछारी, मैं वंदूं आतमसार ...

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ जिनेंद्राय ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दशी तपः कल्याणप्राप्ताय ...

ज्ञान—पौष दसें उजियारा, अर घात ज्ञानभानजिन पाय ...

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेंद्राय ...

निर्वाण—सम्मेद ...

अथ जयमाला छप्पय छंद।

महाअर्घ-भये आप जिन देव जगत में सुख विस्तारे, तारे भव्य अनेक तिनोंके संकट टारे। टारे आठों कर्म मोक्ष सुख तिन को भारी, भारी बृद्ध निहार लही मैं शर्ण तिहारी ॥ चरणन को सिरनायहूं, दुःख दारिद्र संताप हर। हर सकल कर्म छिन एक में, शांति जिनेश्वर शांति कर ॥ १ ॥

दोहा-सारंग लक्षण चरण में, उन्नत धनु चालीस। हाटक वर्न शरीर दुति, नमूं शांति जगईश ॥ २॥

छंदभुजंग प्रयात-प्रभु आपने सर्व के फंद तोडे, गिनाऊं कछूमैं तिनो नाम थोडे। पडो अंबुधै बीच श्रीपाल आई। जपो नाम तेरो भए थे सहाई ॥ ३॥ धरो रायने सेठ को सूलिका पै, जपी आपके नाम की सार जापै। भये थे सहाई तबै देव आये, करी फूल वर्षा सु बिष्टर बनाये ॥४॥ तबै लाख के धामसबही प्रजारी, भयो पांडवों पै महा कष्ट भारी। जबै नाम तेरे तनी टेर कीनी, करी थी बिदुर ने वही राह दीनी ॥ ५ ॥ हरी द्रोपदी धातुकी खंड मांही, तुम्हीं हो सहाई भला और नांही। लियो नाम तेरो भलो शील पालो, बचाई तहां ते सबै दुःख टालो ॥ ६ ॥ जबै जानकी राम ने जो निकारी, धरे गर्भ को भार उद्यान डारी। रटो नाम तेरो सबै सौख्यदाई, करी दूर पीडा सु छिन्ना लगाई ॥७॥ विखल सात सेवें करें तस्कराई, सुअंजन्न त्यारो घडीं ना लगाई। सहे अंजना चंदना दुःख जेते, गये भाग सारे जरा नाम लेते ॥८॥ घडे बीच में सास ने नाग डारो, भलो नाम तेरोजु सोमा संभारो ॥

गई काढने को भई फूल माला, भई है विख्यातं सवै दुःख टाला ॥ ९ ॥ इन्हें आदि देके कहां लो बखानें, सुनो वृच्छ भारी तिहूं लोक जानें। अजी नाथ मेरी जरा ओर हेरो, वडी नाव तेरी रती बोझ मेरो ॥ १० ॥ गहो हाथ स्वामी करो वेग पारा, कहूं क्या अवै आपनी मैं पुकारा। सवै ज्ञान के बीच भासी तुम्हारे, करो देर नांही अहो संत प्यारे ॥ ११ ॥

घत्ता छंद–श्रीशांति तुम्हारी कीरति भारी सुन नर नारी गुण माला। बखतावर ध्यावे रतनसुगावे मम दुःख दारिद सब टाला ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घपद प्राप्तये महाऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ आशीर्वादः। शिखरिणी छंद–अजी ऐरानंदं छवि लखत है आय अरनं, धरें लज्जा भारी करत थुति सो लाग चरनं। करे सेवा कोई लहत सुख सोसार छिन में, घनें दीना त्यारे हम चहत हैं बास तिन में ॥ १३ ॥ इति आशीर्वादः। इति श्रीशांतिनाथजिन पूजा संपूर्णा ॥ १६ ॥

१७ अथ श्री कुन्थुनाथजिन पूजा लिख्यते।

बखतावर सिंह कृत। छन्द।

स्थापना–गजपुर नगर मझार भान प्रभु भूपजी, कुंथुनाथ जिन पुत्र भये सुख रूपजी।
लक्षण अजा अनूप मात लक्ष्मीमती, तुंग धनुष पैंतीस तिष्ठ करुणापती॥ १॥
ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेंद्र अत्रावतराऽवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधी करणम्॥

अथ अष्टक। त्रिभंगी छंद।

जल–पद्महृदनीरं गंधगहीरं अमल सहीरं भर लायो, कंचन मय झारी भर सुखकारी पूज तिहारी कर धायो। श्री कुंथुदयालं जगरिछपालं हन भव जालं गुण मालं। तेरम मक्रेश्वर षट्चक्रेश्वर विघन हनेश्वर दुख टालं॥ ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु ज रारोग विनाशनाय जलंनिर्वपामीति स्वाहा॥

चंदन–घस चंदन बावन दाह मिटावन निरमल पावन सुखकारी, तुम चरण चढाऊं दाह नसाऊं शवपुर पाऊं हित धारी। श्री कुंथु दयालं जग रिछपालं हन भव जालं गुण मालं, तेरम

मक्रेश्वर षटचक्रेश्वर विघन हनेश्वर दुख टालं। ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारातापरोग विनाशनायचन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अक्षत–अक्षत अनियारे प्राशुक धारे पुंज समारे तुम आगे, अक्षय पद दीजे बिलम न कीजे निज लख लीजे सुख जागे। श्री कुंथुदयालं जगरिछपालं हन भव जालं गुणमालं, तेरम मक्रेश्वर षट् चक्रेश्वर विघन हनेश्वर दुख टालं ॥ ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥

पुष्प–वर कुसम सुवासं अमल बिकाशं षट् पद रासं गुंजकरा, भर कंचन थारी तुम ढिग धारी काम निवारी सौख्य करा। श्रीकुंथुदयालं जग रिछपालं हन भव जालं गुणमालं, तेरम मक्रेश्वर षट् चक्रेश्वर विघन हनेश्वर दुख टालं ॥ ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेंद्राय गर्भ जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय कामवाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥

नैवेद्य–पकवान सुकीनें तुरत नवीनें सित रस भीने मिष्ट महा, तुम पद तल धारे नेवज सारे क्षुधा निवारे शर्म लहा। श्री कुंथुदयालं जग रिछपालं हन भव जालं गुण मालं। तेरम मक्रेश्वर षट् चक्रेश्वर विघन हनेश्वर दुख टालं। ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

दीप–दीपक उजियारे तम क्षय कारे जोय समारे स्वर्ण मई, मोह अंधविनाशी निज परकाशी हम घट

भासी ज्ञान लई। श्री कुंथुदयालं जगरिछपालं हन भव जालं गुण मालं, तेरम मक्रेश्वर षट् चक्रेश्वर विघन हनेश्वर दुख टालं ॥ ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

धूप-दशगंध मिलावें परिमल आवें अलिगण छावें कर शोरी, संग अगनि जराऊं कर्म नसाऊं पुण्य बढाऊं कर जोरी। श्री कुंथुदयालं जग रिछपालं हन भव जालं गुणमालं, तेरम मक्रेश्वर षट् चक्रेश्वर विघन हनेश्वर दुख टालं ॥ ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

फल-श्रीफल सहकारं लौंग अनारं अमल अपारं सब रुतके। तुम चरण चढाऊं गुण गण गाऊं शिव-फल पाऊं विधि हत के। श्री कुंथुदयालं जग रिछपालं हनभव जालं गुण मालं, तेरम मक्रेश्वर षट् चक्रेश्वर विघन हनेश्वर दुख टालं ॥ ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अर्घ-जलफल बसु लीजे अर्घ करीजे पूज रचीजे दुख हारी, संसार हनीजे शिवपद दीजे ढील न कीजे बलिहारी। श्रीकुंथुदयालं जगरिछपालं हनभव जालं गुण मालं, तेरम मक्रेश्वर षट् चक्रेश्वर विघन हनेश्वर दुख टालं ॥ ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय अनर्घपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ पंचकल्याणक।

गर्भ-श्रमर सावन दशमी गाइयो, कूष मात श्रीकांता आइयो। धनद देव आय बरषाकरो, हम जजें धन मान वही घरी ॥ ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेंद्राय श्रावण कृष्ण दशमी गर्भ कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

जन्म-कुंथु जिनवर जन्म लियो जबै, हरिन के विष्टर कांपेतबै, शुकल एकम जान बैशाखजी, हम जजे करके अभिलाष जी ॥ ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेंद्राय वैशाख शुक्ल प्रतिपदा जन्म कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

तप-जनम को दिन पावन आइयो, चित बिषे बैराग सुभाइयो। राज षट् खंड को तुम त्यागियो, ध्यान में प्रभु आप सुलागियो ॥ ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेंद्राय बैशाख शुक्लप्रतिपदा तपः कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

ज्ञान-चैत उजियारी तृतिया जु है, जिन सुपायो केवल ज्ञान है। सभा द्वादश में वृष भाषियो, भव्य जन सुन के रस चाखियो ॥ ॐह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेंद्राय चैत्र शुक्लतृतीया ज्ञान कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

निर्वाण-कर सुयोग निरोध महान है, गिरि समेदथकी निरवान है। प्रतिपदा बैशाख उजास में

शिवपुर दो निजबास में ॥ ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेंद्राय बैशाख शुक्ल प्रतिपदा मोक्ष कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ जयमाला। दोहा।

कीड़ीकुंजर कुंथवा, सब जीवन रछपाल। कुंथुनाथ पद नमन कर बरनूं तिन गुणमाल ॥१॥

छंद पद्धड़ी–जय जय श्रीकुंथु जिनंद चंद, जय जय श्रीभानु नरेन्द्र नंद। उपजे गजपुर नगरी मझार, लीजे स्वामी मो को उबार ॥ २ ॥ जय काम रूप शोभा अमान, जय भव्य कमल को रवि समान। जय अजर अमर पद देनहार, लीजे स्वामी मो को उबार ॥ ३ ॥ चय चक्रवर्ति पद को लहाय, जय नव निधि चौदह रतन पाय। सिर नावत नृप बत्तिस हजार, लीजे स्वामी मो को उबार। ॥ ४ ॥ जय नार छानवें सहस जोय, जय रूप लखे रवि थकित होय। इत्यादि सौज शोभे अपार, लीजे स्वामी मो को उबार ॥ ५ ॥ जय भोगन बर्ष गये महान, जय सवा इकत्तर सहसजान, कछु कारण लख संवेग धार, लीजे स्वामी मो को उबार ॥६॥ जय गजपुर नग्री तज दयाल, जय सिद्धन को कर नमन भाल। जय तज दीने सब ही सिंगार,लीजे स्वामी मोको उबार॥७॥ जय पंच महाव्रत धरण धीर, जय मन परजय पायो गहीर। जय षष्ठम को शुभ नेमधार, लीजे स्वामी मो को उबार जय मंदिरपुर में दत्तराय, जय तिन घर पारणा को कराय। जय पंचाश्चर्यभये अपार, लीजे स्वामी

चवघाति कर्म मो को उबार ॥ ९ ॥ जय मौन सहित बहुधरत ध्यान, जय षोडश बर्ष गये सुजान। कीने निवार, लीजे स्वामी मो को उबार ॥ १० ॥ जय केवल ज्ञान जगो रिसाल, जय तत्व प्रकाशे तुम दयाल। सब भव्य बोध भव सिंधुतार, लीजे स्वामी मो को उबार ॥ ११ ॥ जय आरज देशन कर विहार, जय आये गिरि संमेद सार। सब विधि हन पाई मोक्षनार, लीजे स्वामी मो को उबार ॥१२॥ जय जग जीवन के तुम दयाल,जय तुम ध्यावत हूए निहाल। जय दारिद गिरि नाशन कुठार, लीजे स्वामी मो को उबार ॥ ३ ॥ जय सिद्धथान के बसन हार, बखता रतना की यह पुकार। मो दीजे निज आवास सार, लीजे स्वामी मो को उबार ॥ १४ ॥

घत्ता छन्द–यह दुःख विनाशन सुख परकाशन जयमाला अघ की टरनी। मैं तुम पद ध्याऊं पूज रचाऊं शिवपद पाऊं भव हरनी ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेंद्राय गर्भ जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय अनर्घपद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ आशीर्वादः। दोहा–कुन्थु जिनेश्वर देव को, जो पूजे मन लाय। पुत्र मित्र सुख संपदा, तिन घर सदा रहाय ॥ १६ ॥ इत्याशीर्वादः॥ इति श्री कुन्थुनाथजिन पूजा संपूर्णा ॥ १७ ॥

१८ अथ श्रीअरनाथजिन पूजा प्रारभ्यते।

(बखतावरसिंहकृत) त्रिभंगी छंद।

स्थापना–हथनापुर आये भवि मन भाये पिता सुदर्शन राजा है।
मित्रादे माता सब सुख दाता तिन की कूष बिराजा है॥
धनु तीस विराजे अति छबि छाजे लक्षण मीन जु पाया है।
तिष्ठो जिनदेवा करहूं सेवा कर तें पुष्प चढाया है॥ १॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथ जिनेन्द्र अत्रावतराऽवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीअरनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीअरनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भवभव वषट् सन्निधीकरणम्॥

अथ अष्टक। चाल "सुगुण हमध्यावें" की।

जल–जय निर्मल जल सुन्दर सुख कारी। जय जजत सुप्रासुक भरके झारी। सो प्रभु हम ध्यावें। जय कामदेव अरजिन शिव गामी। जय तीर्थंकर चक्रेश्वर स्वामी। जय पूजत इंद्र धनेंद्र जु आवें। जय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण जी प्रभु हम ध्यावें॥ ॐ ह्रीं श्रीअरनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्ममृत्यु जरा रोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन–जय चंदन घस गोसीर सुलावें। जय पूजत ही भव दाघ मिटावें। सो प्रभु हम ध्यावें। जय पूजत इंद्र धनेंद्रजु आवें। जय तीर्थंकर चक्रेश्वर स्वामी। जय कामदेव अर जिन शिव गामी। जी प्रभु हम ध्यावें। ॐ ह्रीं श्रीअरनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत–जय चंद किरन सम अक्षत लीजे। जय ताके पुंज सुसन्मुख कीजे। सो प्रभु हम ध्यावें। जय पूजत इंद्र धनेन्द्र जुआवें। जयतीर्थंकर चक्रेश्वर स्वामी। जय कामदेव अर जिन शिव गामी। जी प्रभु हम ध्यावें॥ ओं ह्रीं श्रीअरनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प–जय पंच वरण सुमन सुताजे। जय भेट धरत मकरध्वज भाजे। सो प्रभु हम ध्यावें। जय पूजत इन्द्र धनेंद्र जु आवें, जय तीर्थंकर चक्रेश्वर स्वामी। जय कामदेव अर जिन शिव गामी॥ जी प्रभु हम ध्यावें॥ ॐ ह्रीं श्रीअरनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय काम वाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य–जयसुर घृत कर पकवाननवीने। जय भरसु रकावी पद चर चीने। सों प्रभुहम ध्यावें। जयतीर्थंकर चक्रेश्वर स्वामी। जय कामदेव अरजिन शिवगामी। जी प्रभु हम ध्यावें॥ओंह्रीं श्रीअरनाथ जिनेंद्राय गर्भ,जन्म,तप,ज्ञान निर्वाण पं

दीप-जय दीपक मणिमय जोति प्रकाशे। जय ध्यावत ही मोह अंध विनाशे॥ सो प्रभु हम ध्यावें। जय
पूजत इन्द्र धनेन्द्र जु आवें। जय तीर्थंकर चक्रेश्वर स्वामी। जय कामदेव अर जिन शिव
गामी॥ जी प्रभु हम ध्यावें॥ ओं ह्रीं श्रीअरनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण
पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप-जय संग धनंजय धूप दहीजे। जय खेवत अष्ट करम सब छीजे॥ सो प्रभु हम ध्यावें॥ जय
पूजत इन्द्र धनेंन्द्र जु आवें जय तीर्थंकर चक्रेश्वर स्वामी। जय कामदेव अर जिन शिव गामी
जी प्रभु हमध्यावें॥ ओं ह्रीं श्रीअरनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण
प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल-जय आंब कपित्थ लौंग भर थारी। जय पूजत शिव फल पाऊं भारी॥ सो प्रभु हम ध्यावें॥ जय
पूजत इन्द्र धनेंद्र जु आवें जय तीर्थंकर चक्रेश्वर स्वामी। जय कामदेव अर जिन शिव गामी॥
जी प्रभु हम ध्यावें॥ ओं ह्रीं श्रीअरनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण
प्राप्ताय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ-जय जलफलादि बसु द्रव्य समारे। जय अर्घ बनाय चरण तले धारे॥ सो प्रभु हम ध्यावें॥ जय
पूजत इंद्र धनेन्द्र जु आवे॥ जय तीर्थंकर चक्रेश्वर स्वामी। जय कामदेव अर जिन शिव गामी॥

जी प्रभु हम ध्यवें ॥ ॐ ह्रीं श्रीअरनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ पंचकल्याणक । छंद मोती दाम ।

गर्भ–जुफागण की तृतिया सितजान । वसे जिन मात सुगर्भ महान । तबै धनदेव करैं नित सेव । अनेक प्रकार उछाह भरेव ॥ ॐ ह्रीं श्रीअरनाथ जिनेन्द्राय फाल्गुण शुक्ल तृतीया गर्भ कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जन्म–जये अरनाथ जिनंद अनूप । भये हरि चक्रित देख स्वरूप ॥ सुदी तिथि चौदस जान अघन्न । जय होत भयो जग धन्न सुधन्न ॥ ॐ ह्रीं श्रीअरनाथ जिनेन्द्राय मार्गशिर शुक्ल चतुर्दशी जन्म कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

तप–तजी तुम नार सु छानु हजार । कियो निज आतम सार विचार ॥ दशैं शुभ मारग मास जु आय । चतुर्थम ज्ञान जिनंद उपाय ॥ ॐ ह्रीं श्रीअरनाथ जिनेन्द्राय मार्गशिर शुक्ल दशमी तपः प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

म ॥ भयो तब केवल भानु

निर्वाण–सुयोग निरोध किये अरि घात। मावस चैत जु मास सुहात॥ वरी शिव नारि भये जब सिद्ध। जजैं हम चर्न लहें सव ऋद्ध॥ ओं ह्रीं श्रीअरनाथ जिनेन्द्राय चैत्र कृष्ण अमावस्या मोक्ष कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला। दोहा।

महाअर्घ–अष्टादश तीर्थेश पद, सप्तम चक्रीदेव। लह मनोज पद चौदमो, करूं सुतुम पद सेव॥

चाल पंचकल्याणक की–अपराजित तज के भये, गजपुर नगर मझार। मित्रादेवी कूष में, आये जिन सुख कार॥ तार तार अर नाथ जी॥ २॥ जन्मे युत त्रय ज्ञान जी, दश अतिशय ले आप। कनक वरण तन सोहनो, उन्नत तीस सुचाप॥ तार तार अर नाथ जी॥ ३॥ वरष चौरासी सहस की, आयु लही जगदीश। पाव गई कुमरा पने, राज कियो फिर ईश॥ तार तार अर नाथ जी॥ ४॥ सहस बयालिस भोगियो, सहस छानवें नार। चक्रवर्ति पद की विभो, गिनत न पावें पार॥ तार तार अरनाथ जी॥ ५॥ कारण लख विरकत भये, जगत अनित्य विचार। लौकांतिक सुर आय के, नमत भये पद सार॥ तार तार अर नाथ जी॥ ६॥ जंबू तरु तल जाय के, सहस भूप ले संग। पण मुष्टी कच लौंचियो, षष्ठम धार अभंग॥ तार तार अर नाथ जी॥ ७॥ नाग पुरी नगरी गये अशन हेत महाराज। अपराजित कर पै दियो, बरखे रतन समाज॥ तार तार अरनाथ जी ॥८॥

षोडशवर्ष किये भले, उग्र उग्र तप घोर। घोर कर्म सब जारके, पायो केवल भोर ॥ तार तार अरनाथ जी ॥ योजन साढे तीन ही, समवशरण रच देव। सप्त भंग बाणी खिरे, सुन सुर नर शरधेव ॥ तार तार अर नाथ जी ॥ १० ॥ आरज देशन के जिते, बोधे भव्य अपार। चार संघ सोहत भले, मुनि आदिक व्रत धार ॥ तार तार अरनाथ जी ॥ ११ ॥ वरष इकीस हजार ही, कर उपदेश महान। सम्मेदागिरि आय के, योग निरोध सुठान ॥ तार तार अरनाथ जी ॥ चार अघाती हानके, जाय वरी शिव नार। लोकालोक निहारियो, पायो भव दधि पार॥ तार तार अरनाथ जी ॥ १३ ॥ बखतावर विनती करे, सुनियें दीन दयाल ॥ रतन तनें दुख मेटिये, आवागमन सुटाल॥ तार तार अरनाथ जी ॥

घत्ताछन्द–अरनाथ सुवाणी सुन भव प्राणी, आरति हानी सुख दानी। यह बिनती मेरी निज हित केरी, हर भव फेरी तुम ज्ञानी ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीअरनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महाऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ आशीर्वादः। चौबोला चाल–जो पूजें मन लाय पाय अर जिनवर स्वामी। पुत्र मित्र धन लहैं सार जग में है नामी। जो वाचे मन लाय त्रास जम के मिट जावें। ते पावें भव पार फेर जग में नहिं आवें ॥ इत्याशीर्वादः। इति श्रीअरनाथजिन पूजा संपूर्णा ॥ १८ ॥

१९ अथ मल्लिनाथजिन पूजा प्रारभ्यते।

बखतावरसिंह कृत (कवित्त)

स्थापना—अपराजित सु विमान त्यागकर आये मिथिला नगर मझार।
कुंभराय राजा तहां सोहे, प्रजावती तिन के पट नार॥
तिन के घर तुम जन्म लियो श्रीमल्लि जिनेश्वर करुणा धार।
सो प्रभु तिष्ठ आय यह थानक दास तनें सब कर्म निवार॥ १॥

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेंद्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधी करणम्।

अथ अष्टक। छंद गीता॥

जल-पंचम उदधि को नीर निर्मल भर सुझारी लीजिये, तुम चरण के ढिग धार देऊं तृषानाशन कीजिये। श्रीमल्लि जिनवर अतुल योधा कामतें प्रभु जय लही, तिहुं लोक में तुम सम न देखे शरण चरणान की गही। ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेंदाय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच-कल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरा रोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥

चंदन-चौपाई। चंदन मलयागिरि घसलाय, कनक कटोरी भर सुखदाय। मल्लि जिनेश्वर के पदसार, चरचूं मन बच तन हितधार। ऊँ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा॥

अक्षत-छन्द(योगीरासा) मुक्ता की सम उज्वल अक्षत पावन धोय सुलीनें। कनक रकाबी में शुभ कर के पुंज जो सन्मुख कीनें। मल्लि जिनेश्वर मदन हनेश्वर ध्यावत सुर नर सारे। रत्नत्रय निधि देऊ अनूपम भव दधितें भवितारे। ऊँ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥

पुष्प-(चाल अठाई पूजा की) चंपादिक फूल मंगाय तापै अलिछाये। यह काम बान नसजाय तुम पद को ध्याये। श्रीमल्लि जिनेश्वर देव छबि तेरी प्यारी। तुम बालपनें महाराज काम व्यथा टारी। ऊँ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय काम बाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य-(छन्द बसंत तिलका) खाजे जुघेवर अपार मंगाय ताजे, पूजूं जिनंद तुम पाद छुधादि भाजे। तोही समान तिहुं लोक विषें न हेरा, श्रीमल्लिनाथ भव वास निवार मेरा। ऊँ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप-(छंद त्रिभंगी) दीपक उजियारं अंध निवारं बहु सुख धारं जोति धरे। पद अंबुज धारे ता ढिग

धारे ज्ञान उजारे मोह हरे। श्रीमल्लिजिनेशं मदन हनेशं जगत महेशं तीर्थेशं। भवि कमल दिनेशं कुमुद निशेशं भव पोतेशं परमेशं। ओं ह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप-(सुंदरी छंद) गंध दश विध की अति लेय हूं, अमर जिह विषे धर खेय हूं। मल्लि जिनवर के पद ध्यावते, अष्ट कर्म सबी उड़ जावते। ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल-(कोशमालती छंद) एला केला दाख छुहारा, पिस्ता श्रीफल क्षारक लाय। मोक्ष महा फल चाखन कारण, पूजूं तुम को शीस निवाय। मल्लिनाथ जिन काम बिडारो, दीने आठों कर्म निवार। मोक्षपुरी में बासा कीना गाऊं तुम गुण वारं वार। ओं ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ,जन्म तप, ज्ञान निर्वाण, पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ-(विजयानी सेठ की चाल) जल फल वसुजी आठों द्रव्य समार के। कर अर्घ सुजी तुम सन्मुख ही धार के। श्रीमल्लि सुजी डूबत मोहिनिकारिये। शिव बास सो जी ता मधि वेग सु धारिये। ओं ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म. तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

अथ पंचकल्याणक । दोहा।

गर्भ--अपराजित सु विमान तज, परजावति उर आय । चैत शुकल एकैं भली, जजे चरण हरषाय ।
उों ह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेंद्राय चैत्रशुक्ल प्रतिपदा गर्भ कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
जन्म-जनमें मंगशिरशुक्ल ही, संख्या रुद्र जिनेश। न्हवन कियो गिरि मेरुपै,अमर वृंद अमरेश। उों ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेंद्राय मार्गशिर शुक्ल एकादशी जन्म कल्याणप्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा
तप-मगसिर ग्यारस शुक्ल ही, बालपनें मल्लिनाथ । छाड परिग्रह बन बसे, हम नावें निजमाथ । उों ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेंद्राय मार्गशिर शुक्ल एकादशी तपः कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥
ज्ञान-पौष श्याम दुतिया हने, चार कर्म दुःख दाय। केवल ज्ञान प्रकाशियो, चतुरानन दरशाय । उों ह्रीं श्री मलिनाथ जिनेंद्राय पौष कृष्ण द्वितीया ज्ञान कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।
निर्वाण-शुकला फागुण पंचमी लहो अचल पद देव। गिरि समेद पूजूं मही, अष्ट द्रव्य शुभलेव। उों ह्रीं श्री मलिनाथ जिनेंद्राय फाल्गुण शुक्ल पंचमी मोक्षकल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ जयमाला । दोहा ।

महा अर्घ-शिशु वय तें मलिनाथ जी,पालो शील अखंड । राज भोग छाडे सबै, जीतो काम प्रचंड ॥१॥
नभ में उडुगण हैं जिते, का पै गिने सुजांय। त्यों तुम गुणमाला विविध, हम से किम वरनाय ॥ २ ॥

पद्धडी छन्द–जय केवल ब्रह्म विराजमान, सब योगीश्वर ध्यावें महान । तुम छालिस गुण पूरण जिनेश, परमातम आतम श्रीमहेश ॥ ३ ॥ भव वारिधि तारन को तरंड, तुम हनो ब्रह्मसुत अति प्रचंड । शरणा गत पालन को दयाल, सुर आवत तुम पद नमत भाल ॥ ४॥ तुम अजर अमर पद देन हार, भव तारण को तुम बिरद सार। जय राग द्वेष मद मोह चूर, जयऽनंत चतुष्टय गुणन पूर॥५॥ जय चतुरानन दीखत जिनंद, जय चौंसठ चमर ढुरें अमंद। जय द्वादश सभा बिराजमान, गणईस अठाइस हैं निधान ॥ ६॥ ते झेलत हैं बाणी त्रिकाल, भवि सुन कर टारत मोह जाल। जय संघ सुचार प्रकार एव, तिन सहित सो विहरत आप देव ॥ ७॥ दो शतक घाट उनतिस हजार, मुनि राज महा गुण के भंडार। जे धरत श्वेत साडी प्रमान, अजया पचपन सुहजार जान ॥८॥ इक लक्ष शरावक धर्म लीन, धारैं सम्यक् सबही प्रबीन। लख तीन जुश्रावकनी उदार, मिथ्यात्व त्याग चित वरत धार ॥ ९॥ देवी अर देव समूह आय, तिनकी संख्या बरनी न जाय। संख्याते हैं तिर्यंचजौन, तज वैर भाव धारैं सु मौन ॥ १०॥ इन आदिक को भव पार लाय, सम्मेद शैलतें शिव लहाय । हम याचत हैं तुम पै सुदेव, भव भव में पाऊं चरण सेव ॥११॥ यह मोकों हे किरपा निधान, दीजेजु अनुग्रह चित्त ठान। बखता रतना को भृत्य जान, मेरी बिनती कीजे प्रमान ॥ १२ ॥

घत्ता छन्द–वरणात गुण थारे गण धर हारे मल्लि जिनेश्वर काम हरं। भव दधितें तारो सुख विस्तारो

राग द्वेष निरवार करं ॥ १२ ॥ ऊँ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घपद प्राप्तये महाऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ आशीर्वादः—सवैया ३१वां। वंश इक्ष्वाक माह प्रगट भये कुंभराय ताके शुभ नंदन श्रीमल्लिनाथ जानके। तिन के चरणारविंद सेवत सुरेंद्रचंद्र ध्यावत मुनिंद्रवृंद नाना थुतिठान के। कोई भव्य जीव अष्ट दरब शुद्ध लाय पूजा को रचाय बहु भक्ति उर आन के। ताके शुभ पुण्य की सुमहिमा न कही जाय सो लहैं मोक्षथान सर्व कर्म हानके॥१४॥ इत्याशीर्वादः ।

इति श्रीमल्लिनाथ जिन पूजा संपूर्णा१९॥

२० अथ श्रीमुनिव्रतनाथ जिन पूजा प्रारभ्यते ॥

बखतावर सिंह कृत । कड़षा छंद ॥

स्थापना-स्वर्ग प्रानत तजो सब इंद्रन जजो आय हरि बंश उद्योत कीना ।
मात पद्मावती पिता सुहमित जो धनु तन बीस छवि श्याम लीना ॥
अंक कच्छप सही अतुल शोभा लही नगर राजगृही सुर रचीना ।
थाप के नुति करूं चरण सिर पर धरूं कीजिये नाथ मम कर्म क्षीना ॥ १ ॥

ऊं ह्रीं श्री मुनि सुब्रतनाथ जिनेंद्र अत्रावतराऽतवर संवौषट् आह्वाननम् ।
ऊं ह्रीं श्री मुनि सुब्रतनाथ जिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ऊं ह्रीं श्री मुनि सुब्रतनाथ जिनेन्द्र अत्र मम संन्निहितो भव भव वषट् सन्निधी करणम् ॥

(अथ अष्टक) गीता छंद ।

जल-गिरि हिमन कुल को नीर निर्मल तथा सोमथकी करो, भरभृंग कर तुम चरण पूजूं जन्म मरण जरा हरो,तुम सम न तारण तरण कोई अहो मुनिसुब्र धनी । हरि बंश नभ में आप शशि सम कांति सोहे अतिघनी ॥ ऊं ह्रीं श्रीमुनिसुब्रतनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरारोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

चंदन–गोशीर्ष चंदन और कुंकुम वार संग घसाइयो, तुम चरण पूजूं धार देके मोह ताप मिटाइयो। तुम सम न तारण तरण कोई अहो मुनिसुव्रत धनी, हरि वंश नभ में आप शशि सम कांति सोहै अतिघनी॥ ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा ताप रोगविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत–मुक्ता समान अखंड अक्षत चंद की दुति को हरें, मम अखैपद दीजे जिनेश्वर पुंज तुम आगे धरें। तुम सम न तारण तरण कोई अहो मुनिसुव्रतधनी, हरि वंश नभ में आप शशि सम कांति सोहे अति घनी॥ ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥

पुष्प–मंदार तरुके कुसुम प्राशुक गंध पै अलि छाइये, सो लेय तुम ढिग चरण धारे मदन वान नसाइये। तुम सम न तारण तरण कोई अहो मुनिसुव्रत धनी। हरि वंश नभ में आप शशि सम कांति सोहे अति घनी॥ ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय काम वाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥

नैवेद्य–खगधीश सुरनर असुर सबको क्षुधा वेदन दुख करो। पकवान तैं तुम चरण पूजूं क्षुधा नागन को हरो, तुम सम न तारण तरण कोई अहो मुनिसुव्रत धनी, हरिवंश नभ में आप शशि सम कांति सोहे अति घनी॥ ॐ ह्रीं श्री मुनिसव्रतनाथ जिनें ाय

पंच कल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

दीप–यह मोह अंध सुज्ञान ढापो आप पर नहि भास ही। मणि दीप जोय सु चरण पूजूं करो ज्ञान प्रकाश ही ॥ तुम सम न तारण तरण कोई अहो मुनिसुव्रत धनी। हरिवंश नभ में आप शशि सम कांति सोहे अति घनी ॥ ॐ ह्रीं श्री मुनि सुव्रतनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार विनाशाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

धूप–यह आठ कर्म अनादि ही के बहुत दुख मोको करो, यातें सुगंधी धूप खेऊं अष्ट दुष्ट सबै हरो। तुम सम न तारण तरण कोई अहो मुनिसुव्रत धनी। हरिवंश नभ में आप शशि सम कांति सोहे अति घनी ॥ ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

फल–पुरषार्थ रोको अंतराय सु मोह दुर्बल जान के, शिवथान दो तुम चरण अरचूं फल अनूपम आन के। तुम सम न तारण तरण कोई अहो मुनिसुव्रत धनी, हरिवंश नभ में आप शशि सम कांति सोहे अति घनी ॥ ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म,तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलंनिर्वपामीति स्वाहा ॥

अर्घ–जल चंदनाऽक्षत सुमन, नेवज दीप गंध फलोघ ही। भरके रकाबी अरघ लीजे, जजूं हरत्रय रोग ही। तुम सम न तारण तरण कोई अहो मुनिसुव्रत धनी। हरि वंश नभ में आप शशि सम

कांति सोहे अति घनी ॥ ऊँ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ पंचकल्याणक। चाल त्रिभुवन गुरुस्वामी की।

गर्भ–दुतिया तिथी कारीजी, सावन शुभ वारी जी। गर्भागम धारी, प्राणत त्याग के जी। पद्मावत माईजी शची पूजन आई जी। सेऊं सुख दाई, चरणन लागके जी ॥ ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेंद्राय श्रावण कृष्ण द्वितीया गर्भ कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

जन्म–अतिशय दश गायेजी, त्रय ज्ञान सुहायेजी। निज साथ लाये, जन्म तने दिनाजी। बैशाख अंधारीजी, दशमी सुरसारीजी। गिरि शीस मझारी, न्हवन कीयो जिनाजी। ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेंद्राय बैशाख कृष्ण दशमी जन्म कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

तप–संसार असाराजी, सब अनित विचाराजी। दशमी तिथकारी, जान विशाख की जी। कानन तप धारेजी, सब वसन उतारे जी। जब आरतिटारे, शिव अभिलाख की जी। ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेंद्राय बैशाख कृष्ण दशमी तपः कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

ज्ञान–बैशाख महीनाजी, आतम चित दीना जी। कलि नौमी दिन लीना, पंचम ज्ञान को जी। वर धर्म बखानाजी, भवि जीवन जाना जी। जिन देवमहाना, सब सख दीजिये जी ॥ ॐ ह्रीं

श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेंद्राय वैशाख कृष्ण नवमी ज्ञान कल्याण प्राप्ताय अर्घ निर्वपामीतिस्वाहा ॥
निर्वाण–अलि फागुण आईजी, द्वादश सुख दाईजी। सब कर्म नसाई, गिरिसम्मेदतैं जी। तुम सिद्ध
कहायेजी, सब अलख लखाये जी। हम माथ नवाये, छुडावो खेदते जी ॥ ॐ ह्रीं श्री मुनि-
सुव्रतनाथ जिनेंद्राय फाल्गुण कृष्ण द्वादशी मोक्ष कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ जयमाला। दोहा।

महा अर्घ–इंद्रादिक नख मुकट में, देखत आनत आय। छवि सुंदर मनको हरे, कोटिक भानुलजाय ॥
चाल अहो जगतगुरु की–प्राणत स्वर्ग विहाय मात श्यामा उर आये। तात सुमंत महान नगर
कौशाग्र सुहाये ॥ सेवे माता पाय सुरतिय आय नवीनी। नभतैं रतन अपार धनद ने बरषा कीनी ॥२॥
तुम जन्मैं जग ईश सकल जग मंगल छाये, आसन कंपित जान सबै सुर हर्षित आये। लेय गये
गिरि शीस न्हवन कीनो अति भारी, कलस हजार भराय इंद्रने धारा ढारी ॥ ३ ॥ कर शृंगार महान
नाम मुनिसुव्रत दीना, सौंप मात हरषाय नृत्य तहां तांडव कीना। धनद करे नित सेव वस्त्र आभूषण
लावे, हय गय हंसम पूरदेव बहुरूप बनावे ॥ सहस तीस तुम आय धनुषवपुबीस उचाई, साढे सात
हजार कुमर पन मांह विहाई। फेर कियो तुम राज बर्ष पंदरह सु हजारा, कृष्ण दसैं बैशाष सबै जग
अथिर बिचारा ॥ ५ ॥ देव ऋषी सब आय चरण तल पुष्प चढाये, संबोधन कह बैन नमन निजथान
सिधाये। निर्ज्जर चार प्रकार सकल इंद्रादिक आये, रतन जडित सुखपाल तास मे तुम चढ धाये ॥६॥

पहुंचे विपिन मझार सहस राजा संग लीनी, दीक्षा निज हितकार दिगंबर मुद्रा चीनी। मन्न परजय लहज्ञान बिहरत इकल विहारी, ग्यारह बरष प्रमान प्रभू तुम मौन सुधारी ॥ ७ ॥ पायो केवल ज्ञान लोका लोक निहारे, दे उपदेश महान भवोऽदधितैं भवितारे। मास रही इक आय गिरी सम्मेद पधारे, योग निरोध सुठान चारों कर्म निवारे ॥ ८ ॥ सिद्ध भये तुम देव तबैं इंद्रादिक आये, कीनो मोक्ष कल्याण सबै मिल मंगल गाये। कीनो अंक सुरेन्द्र तास शिलशिव तुम पाई। पूजत हैं भवि जाय चरण तुमरे हरषाई ॥९॥

दोहा–यह गुण पूरन देव की गुणमाला अविकार, जो जन धारें कंठ में ते पावैं भव पार ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं श्री मुनिसुब्रतनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय अनर्घ्य पद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ अशीर्वादः–कुंडलिया छंद। पूजा मुनिसुब्रत तनी जो करहैं मन लाय, अथवा अनुमोदन करैं पढैं पाठ चित लाय। पढैं पाठ चितलाय तास घर संपति भारी, पुत्र मित्र सुख लहैं बहुत जन आज्ञा कारी ॥ कह बखतावर रतन तास सम नर नहिं दूजा, मन बच काय लगाय करें जो निशि दिन पूजा ॥ ११ ॥ इत्याशीर्बादः। इति श्रीमुनिसुब्रतनाथ जिन पूजा संपूर्णा ॥ २० ॥

२१ अथ श्री नमिनाथजिन पूजा प्रारभ्यते ॥

(वखतावरसिंहकृत) अडिल ।

स्थापना—अपराजित तज नाथ नगर मिथिला सही। विजियारथ के नंद मात बिप्रा लही।
पंदरे धनुष प्रमाण हेम तन पाय जी। हम पूजें मन लाय तिष्ठ इत आय जी ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्र अत्रावतराऽवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्र अत्र मम संन्निहितो भवभव वषट् संन्निधी करणम् ॥

अथ अष्टक। अडिल।

जल—हिमवन शैल उतंग थकी गंगापरी। ताको शीतल वारि कनक झारी भरी ॥ पूजा श्रीनमिनाथ चरणकी कीजियें। लखचौरासीयोन जलांजलि दीजिये ॥ ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्रायगर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरा रोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन—चंदन अर कर्पूर सु कुंकुम सानके। चरचूं चरण सरोज हरष उर आन के ॥ पूजा श्रीनमिनाथ चरण की कीजिये। लख चौरासी योन जलांजलि दीजिये ॥ ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्रायगर्भ, जन्म,

तप,ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा॥

अक्षत–दोनों अनी समान सुअक्षत लीजिये। भर के सुवरण थालसु पुंज धरीजिये॥ पूजा श्रीनमिनाथ चरण की कीजिये। लख चौरासी योन जलांजलि दीजिये॥ ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ,जन्म,तप,ज्ञान,निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीतिस्वाहा।

पुष्प–कुसुम अनेक प्रकार अनूपमसार है, अलि समूह गुंजार करत भर थार है॥ पूजा श्री नमिनाथ चरण की कीजिये। लख चौरासी योन जलांजलि दीजिये॥ ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेंद्राय गर्भ,जन्म तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य–नेवज बहुपरकारं सुमन ललचावनी। रसना रंजन लेय क्षुधादि भगावनी॥ पूजा श्रीनमिनाथ चरण की कीजिये। लख चौरासी योन जलांजलि दीजिये॥ ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेंद्राय गर्भ,जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप–जगमग जगमग जोत कपूर बलाइये। कंचन दीपक माहि सुध्वांत नसाइये॥ पूजा श्रीनमिनाथ चरण की कीजिये। लख चौरासी योन जलांजलि दीजिये॥ ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीतिस्वाहा

धूप–कालागर कशमीर सुचंदन लेयके। अमर जिह्वमें धार धनंजय खेय के॥ पूजा श्रीनमिनाथ चरण की कीजिये। लख चौरासी योन जलांजलि दीजिये॥ ॐ ह्रीं श्रीन [illegible]

तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल-दाख छुहारा एला केला लाइये। सरस मनोहर थार भरे सुचढाइये॥ पूजा श्रीनमिनाथ चरण की कीजिये। लख चौरासी योन जलांजलि दीजिये॥ ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ-जल फल आठों द्रव्य मिलाय हूं। स्वर्ण रकाबी मांहि सुअर्घ बनाय हूं। पूजा श्रीनमिनाथ चरण की कीजिये। लख चौरासी योन जलांजलि दीजिये॥ ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंचकल्याणक। दोहा।

गर्भ-अपराजित तजके प्रभु, विप्रा गर्भ मझार। आश्विन द्वितिया कृष्ण ही, लयो जजूं पद सार॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय आश्विनकृष्ण द्वितिया गर्भ कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

जन्म-दशमी असित आसढ ही, जन्मे श्रीनमि देव। मघवासुर गिरि पर जजे, हम पूजें वसुभेव॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय आषाढ कृष्णदशमी जन्म कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

तप-जन्म तनो दिन आइयो, तप कीनो बन जाय। पण मुष्टी कचलौंचियो, आतम ध्यान लगाय॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेंद्राय आषाढ कृष्णदशमी तपः कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान–सित मगसिर ग्यारस हने, घाति कर्म दुःख दाय। केवल ज्ञान उपाइयो, वृष भाषो दुःखदाय।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेंद्राय मार्गशिरशुक्ल एकादशीज्ञानकल्याणप्राप्ताय अर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा

निर्वाण–चतुर्दशी वैसाख तम, हन अघाति लह मोष, सम्मेदाचल तें गये, भये गुणन के कोष॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेंद्राय वैशाख कृष्ण चतुर्दशी मोक्ष कल्याणप्राप्तायअर्घं निर्वपामीतिस्वाहा

अथ जयमाला। दोहा।

महाअर्घ–इंद्र नरेन्द्र फणीन्द्र नर,स्तुती करें जु वनाय। गुण वारिधि नमिनाथ के, पार न पाये जाय॥१॥ पै तुम भक्ति सुहिय मम, प्रेरत आठों जाम। मति माफिक कछु कहत हूं, गुण माला गुण धाम॥ २॥

छन्द पद्धड़ी–जयजय जयजय नमिनाथ देव। सुर नर इंद्रादिक करत सेव॥ दश सहस वरष की आयु पाय। धनु पंद्रह कंचन वरण काय॥ ३॥ जय लक्षण पंकज खंड सार। उपमा वरनत पाऊं न पार। जय तपकर चारों अरि प्रजार। पायो तव केवल पद उदार॥ ४॥ तव समव सरन रचना समार। कीनी इक छिन में धनद त्यार॥ दो योजन की इक शिल सुधार,नीली अति सोहै गोल कार॥ ५॥ अवनी तैं ढाई कोश जान। उन्नत सिवान सोहै महान॥ तापै रचना बहु भांति कीन धूली शालादिक का प्रवीन॥ ६॥ तहां समवसरण में इंद्र आय। स्तुति कीनो मस्तक नवाय॥ जय तुम देवन के देव इष्ट। भव दधि तारन म... ६७

भव्य कंज को रवि विशाल ॥ इत्यादिक थुति कीनो सुरेश । फिर तुम विहरे आरज सुदेश ॥ ८ ॥ गण धर सतरै चव ज्ञान पूर । ऋषि गण तहां बीस हजार सूर ॥ अजया पैंतालिस सहस संग । इक लाख सरावक व्रत अभंग ॥ ९ ॥ श्रावकनी लख त्रय, शील वान । सम्यक्त्व सहित किरपा निधान ॥ चवसंग सहित भवि वृन्दतार । आये सम्मेदाचल पहार ॥ १० ॥ इक मास रही तब शेष आय । चव कर्म अघाती तब षिपाय ॥ इक समें माहि निरवान थान, पायो तुम आवा गमन हान ॥ ११ ॥ इक्ष्वाक वंश कीनो उजाल । सो नमि जिनवर मम दुःख टाल । बखता रतना पै हो दयाल । दीजे शिव संपति कर निहाल ॥ १२ ॥

घत्ताछन्द–जय जय नमि दाता सब जग त्राता कर्म जुघाता मोक्ष वरी । सोई गुण धारी टेर हमारी मति अनुसारी अर्ज करी ॥ १३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ आशीर्वादः । सोरठा–जो पूजे नमि देव, अष्ट द्रव्य शुभ लायके । इंद्रादिक तिन सेव, करें सुनिश दिन आय के ॥ १४ ॥ इत्याशीर्वादः । इति श्रीनमिनाथजिन पूजा संपूर्णा ॥ २१ ॥

२२ अथ श्रीनेमिनाथजिन पूजा प्रारभ्यते।

(बख्तावरसिंहकृत) कवित्त।

स्थापना–ध्यान रूप हय पर सवार ह्वै रतनत्रय सिर ढोय संभार।
दशधा धर्म कियो बक्तर शुभ संवर असिकी तीक्षण धार॥
अनुभवने जाकर गह लीनों कर्म अरी लीने ललकार।
शिव देव्या नंदन नेमीश्वर थापन करूं मंत्र उच्चार॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्र अत्रावतराऽवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्र अत्र मम संन्निहितो भव भव वषट् संन्निधीकरणम्।

अथ अष्टक। बसंत तिलका छंद।

जल–क्षीरोदधि परम नीर मंगाय लीनो। चामीर कुंभ भर, चरण सुधार दीनो॥ श्रीनेमिनाथ तुम बाल सुब्रह्मचारी। पूजूं पदार युग कंज प्रमाद टारी॥ ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म

चंदन–गोशीर चंदन कपूर घसाय लायो । चर्चा करी चरण पास अनंद पायो ॥ श्रीनेमिनाथ तुम बाल सुब्रह्मचारी । पूजूं पदार युग कंज प्रमाद टारी ॥ ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा तापरोग विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षत–श्रीचंद जोत सम अक्षत श्वेत जो हैं । धारे जु पुंज तुम अग्र अपार सो हैं ॥ श्रीनेमिनाथ तुम बाल सुब्रह्मचारी । पूजूं पदार युग कंज प्रमाद टारी ॥ ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पुष्प–बेलाजुही सुमन प्राशुक सार लीने । सोहैं सुरंग भर अंजलि भेद कीने ॥ श्रीनेमिनाथ तुम बाल सुब्रह्मचारी । पूजूं पदार युग कंज प्रमाद टारी ॥ ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

नैवेद्य–फेनी सुहाल वर मोदक सद्य ताजे । मोहैं सुनैन तिस देखत भूखभाजे ॥ श्रीनेमिनाथ तुमबाल सुब्रह्मचारी । पूजूं पदार युग कंज प्रमाद टारी ॥ ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्न, तप ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दीप–बाती कपूर कर कंचन दीप मांही । दीने प्रजार तुम मंदिर मांह साईं ॥ श्रीनेमिनाथ तुम बाल सुब्रह्मचारी । पूजूं पदार युग कंज प्रमाद टारी ॥ ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

धूप-श्रीखंड लौंग कर्पूर सुगंध भूरे। खेऊं हुताशन सुकर्म निवार कूरे॥ श्रीनेमिनाथ तुम बाल सुब्रह्मचारी। पूजूं पदार युग कंज प्रमाद टारी॥ ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल-एला अनार वरसेव सुआम लाऊं। सुवर्ण थार भर नाथ तुम्हें चढाऊं॥ श्रीनेमिनाथ तुम बाल सुब्रह्मचारी। पूजूं पदार युग कंज प्रमाद टारी॥ ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ-नीरादि अष्ट शुभ प्राशुक द्रव्य लाये। कीने महा अरघ सुंदर गान गाये॥ श्रीनेमिनाथ तुम बाल सुब्रह्मचारी। पूजूं पदार युग कंज प्रमाद टारी॥ ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंचकल्याणक। कडखाछंद।

गर्भ-त्यागियो आपने वैजयंते महा, मात शिव देवि की कूर आये। श्वेत कातिक कही छठ के दिन लही मात के चरण तब शची ध्याये॥ धनद तब गगन तें वृष्टि करतो भयो रतन की आदि पण वर्ज लाये। छपन देवी तहां सेव करती महा सुरन ने आय बाजे बजाये॥ ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेंद्राय

जन्म-शुक्ल छठ सावनी अमर मन भावनी तास दिन आपने जन्म लीना। सुरन आसन चले मौलि तब ही हले, सात पग चाल तब नमन कीना॥ आइयो सुर पति नगर द्वारावती शची कर लेय जिन रूप चीना। मेरु गिरि पै गये वारि कलसे लये, सहस अर आठ सिर धार दीना॥ ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेंद्राय श्रावण शुक्ल षष्ठी जन्म कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तप-व्याह हरिने ठयो यान सजतो भयो, चढे जब आप श्रीनेमि स्वामी। पशु धुनि जब सुनी करत चिंता गुणी, चतुर्गति मांह जिय दुक्ख पामी। छोड रजमति तिया नेह शिव तें किया, बास वन में लिया हनो कामी। जन्म की तिथि कहा व्रत महा जब गहा, कियो तब मौन जिन भये नामी॥ ओंह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेंद्राय श्रावण शुक्ल षष्ठी तप कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान-क्वार एकैं भली सेत पष में रली मोह सेन्या दली ज्ञान पायो। समवसर की ठनी धनद रचना तनी सभा द्वादश बनी इंद्र आयो॥ चरण अरचा करी हरष उर में धरी मान धन धन धरी शीस नायो। आप बानी भई सबै जग सरदही, मेट ममपीर मैं अर्घ लायो॥ ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय आश्विन शुक्ल प्रतिपदा ज्ञान कल्याण प्राप्ताय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण-शैल गिरिनार पै मास बाकी रही, आयु तब योग नीरोध कीना। खिरत बानी नहीं मौन सब ही लही सप्तमी साढ सित मोक्ष चीना। लोक अलोक के आप ज्ञायक भये अष्टमी धरा निज

वास लीना। दास बिनती करे चरण उरमें धरे, कीजिये नाथ संसार छीना ॥ ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय आषाढ शुक्ल सप्तमी मोक्ष कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला। दोहा।

महाअर्घ–हरि हरादि हारे सबै, दिये विरंचि डिगाय। सो मकरध्वज तुम हनो, अहो नेमि जिनराय॥

छंद भुजंग प्रयात–तजो वैजयंतं लयो जन्म स्वामी। शिवा देवि माता महा सौख्य पामी॥ भले द्वारिका नग्र में आप जाये। हरी आदि निर्जर सबै आन ध्याये॥ २॥ गये मेरु शीसं कियो न्हौन भारी। पिता मात को सौंप आनंद धारी॥ प्रभु बाल लीला कही नाहिं जावे। कभी रत्न भूपै कभी गोद आवे॥ ३॥ शची आदि देवी गहे कर चलावे। कभी चाल सीधी कभी अट पटावे॥ छवी श्याम सुंदर मनो मेघ कारे। भये वर्ष अष्टम अणु व्रत्त धारे॥४॥ छपन कोड यादों सभा जोड लीहै। चली बात ऐसे कहै को बली है॥ प्रभु अंगुरी बीच जंजीर डारी। सबै खैंच हारे झुलाये मुरारी॥ ५॥ हली आदि जेते सबै शीस नाये। भई फूल वर्षा सुरों गांन गाये॥ करै कृष्ण नारी खडी अर्ज भारी। सुनो आप स्वामी वरो एक नारी॥ ६॥ तबै आप मानी करी कृष्ण त्यारी। चढे व्याहने को सबै राज धारी॥ सुजूनागढी सोंव के बीच आये। पशु टेर कीनी वचन यों सुनाये॥ ७॥ घिरे फंद मांही न दीसै सहाई। पडे. काल के बीच दीजे छुडाई॥ सुने बैन ऐसे तबै ही छुडाये। गही सार दीक्षा

सुगिरिनार आये ॥ ८ ॥ नमें सिद्ध को लौंच कीनो प्रवीना। दिने छप्पने में महा ध्यान कीना। जबै घातिया जोर छिन में उडायो। लहों ज्ञान भानं तिहूं लोक छायो ॥ ९ ॥ समवसरण की इंद्र शोभा बनाई। शुची डेढ योजन आनंद दाई ॥ गणाधीश ग्यारह सु झेलैं हैं बाणी। लहैं राज मोक्षं सुनैं भव्य प्राणी ॥ १० ॥ घने सात सै वर्ष में भव्य तारे। गयो उर्जयंतं सबै योग टारे ॥ भये सिद्ध स्वामी तिहूं लोक जानं। सबै इंद्र कीने सुपंचम कल्याणं ॥११॥ नमूं चर्ण तेरे अजी संग लीजे। छुटे भवकी फेरी यही दान दीजे ॥ सुनो अर्ज मेरी जगन्नाथ नामी। करो देर छिन ना अहो नेमि स्वामी ॥

घत्ता छंद–रजमतिसी नारी ततक्षिन छारी वर शिव नारी ततकाला। तिन की थुति कीनी चित धर लीनी पातग हीनी गुण माला ॥१३॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ आशीर्वादः। अडिल–नेमीश्वर पद कमल तनी पूजा करें। अलिसम कर अनुराग भक्ति उर में धरें। ते पावें भव पार कहै बखता सही। रतन कहै मन लाय ऋद्धि पावैं वही ॥

इत्याशीर्वादः। इति श्रीनेमिनाथजिन पूजा संपूर्णा ॥ २२ ॥

२३ अथ श्री पार्श्वनाथजिनपूजा प्रारभ्यते । (बखतावरसिंह कृत) गीताछन्द

थापना–वरस्वर्ग प्राणतको विहाय सुमात वामासुत भये। अश्वसेनके पार्श्वजिनवर चरण तिनके सुरनये
ना हाथ उन्नत तन विराजे उरग लक्षण अतिलसै। थापूंतुम्हें जिन आय तिष्ठो कर्म मेरो सब नसै॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ॥
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्र अत्र मम संन्निहितो भव भव वषट् संन्निधी करणम् ।

अथ अष्टक । चामर छन्द ॥

जल–क्षीर सोम के समान अंबुसार लाइये, हेम पात्र धारके सु आप को चढाइये। पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूंसदा, दीजिये निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा॥ ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म,तप,ज्ञान निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरारोग विनाशनाय जलं निर्वपामीतिस्वाहा।

चंदन–चंदनादि केसरादि स्वच्छ गंधलीजिये, आप चर्न चर्च मोहतापको हनीजिये। पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूंसदा, दीजिये निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा॥ ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्राय गर्भ जन्म,तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारातापरोगविनाशनाय चंदनं निर्वपामीतिस्वाहा॥

अक्षत–फेन चंद की समान अक्षतं मंगायके, पाद के समीप सार पूजको रचायके। पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूंसदा, दीजिये निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा॥ ॐ

जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥

पुष्प–केवडा गुलाब और केतकी चुनाइये, धार चर्णके समीप काम को हनाइये । पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूंसदा, दीजिये निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा ॥ ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥

नैवेद्य–घेवरादि बावरादि मिष्ट सद्य में सनें, आप चर्ण अर्च तें क्षुधादि रोग को हनें । पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूंसदा, दीजिये निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा ॥ ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्राय गर्भ जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीतिस्वाहा ॥

दीप–लाय रत्न दीप को सनेह पूरके भरूं, बातिका कपूरबार मोह ध्वांत को हरूं । पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूंसदा, दीजिये निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा ॥ ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म,तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

धूप–धूप गंध लेयके सु अग्नि संग जारिये, तास धूप के सु संग कर्म अष्ट वारिये । पार्श्वनाथ देव सेव आप की करूं सदा, दीजिये निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा ॥ ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्तय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

फल–क्षारकादि चिर्भटादि रत्नथार में भरूं, हर्ष धार के जजूं सुमोक्ष सौख्यको वरूं । पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूं सदा, दीजिये निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा ॥ ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्राय

गर्भ, जन्म, तप, ज्ञाननिर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अर्घ–नीर गंध अक्षतं सुपुष्प चारु लीजिये, दीप धूप श्रीफलादि अर्घ तें जजीजिये। पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूं सदा, दीजिये निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा ॥ ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय अनर्घ्य पदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ पंचकल्याणक। छंद पायता।

गर्भ–शुभ प्राणत स्वर्ग विहाये, वामा माता उर आये। वैशाख तनीदुतकारी, हम पूजें विघ्न निवारी ॥ ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्राय वैशाख कृष्ण द्वितीया गर्भ कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म–जन्में त्रिभुवन सुखदाता, कलिकादशि पौष विख्याता। स्यामातन अद्भुतराजे, रवि कोटिकतेज सुलाजे ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्राय पौष कृष्ण एकादशी जन्म कल्याण प्राप्तायअर्घंनिर्वपामीति स्वाहा॥

तप–कलि पौष इकादशि आई, तब बारह भावना भाई। अपने कर लौंच सुकीना, हम पूजें चर्न जजीना ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्राय पौष कृष्ण एकादशी तपः कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

ज्ञान–वह कमठ जीव दुखकारी, उपसर्ग कियो अति भारी। प्रभु केवल ज्ञान उपाया, अलि चैत चौथ दिन गाया॥ ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्राय चैत्र कृष्ण चतुर्थी ज्ञान कल्याणप्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

निर्वाण–सित सावन सातैं आई शिवनार तबै जिनपाई। सम्मेदाचल हरि माना, हमपूजें मोक्ष कल्याना ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेंद्राय श्रावण शुक्लसप्तमी मो कर ० ०

अथ जयमाला।

महाअर्घ–पारसनाथ जिनंद तने बच पौनभषी जरते सुन पाये। करो सरधान लहो पद आन भये पद्मावति शेष कहाये। नाम प्रताप टरे संताप सुभव्यनको शिवशर्म दिखाये। हो विश्वसेनके नंदभये गुण गावत हैं तुमरे हरषाये॥ केकी कंठ समान छबि, बपु उतंग नव हाथ। लक्षण उरग निहार पग, बंदूं पारसनाथ॥

छंद मोती दाम–रची नगरी षट् मास अगार, बने बहुगोपुर शोभ अपार। सु कोटतनी रचना छबिदेत, कगूंरन पै लहकैं बहु केत॥ १॥ बनारस की रचना जु अपार, करी या भांत धनेश तयार। तहां बिश्वसेन नरेन्द्र उदार, करै सुख वाम सु दे पटनार॥ २॥ तजो तुम प्राणत नाम बिमान, भये तिन के घर नंदन आन। तबै पुर इंद्र नियोगनि आय, गिरींद्र करी विध न्हौन सु जाय॥ ३॥ पिता घर सौंप गये निज धाम, कुवेर करे बसु जाम जु काम। बधेजिन दूज मयंक समान, रमैं बहु बालक निर्जर आन॥४॥ भये जब अष्टम बर्ष कुमार, धरे अणु ब्रत्त महा सुखकार। पिता जद आन करी अरदास, करो तुम व्याह भरो मम आस॥ ५॥ करो तब नाह रहे जगचंद, किये तुम कामक सायक मंद। चढे गजराज कुमार न संग, सु देखत गंगतनी सुतरंग॥ ६॥ लख्यो यक रंक करे तप घोर, चहुंदिस अग्नि बले अति जोर। कहे जिननाथ अरे सुन भ्रात, करे बहुजीव तनी मतघात॥ ७॥ भयो तब कोप कहै कितजीव, जले तब नाग दिखाय सदीव। लख्यो यह कारण भावन भाय, नये दिव ब्रह्मऋषी सब आय॥ ८॥ तबै सुर चार प्रकार नियोग, धरी शिविका निजकंध मनोग। करो बन

माह निवास जिनंद, धरे व्रत चारित आनंद कंद ॥ ९ ॥ गहे तहां अष्टम के उपवास, गये धन दत्त तनें जु अवास। दियो पयदान महा सुखकार, भई पण वृष्टि तहां तिहवार ॥१०॥ गये फिर कानन माह दयाल, धरो तुम योग सबै अघटाल। तबै वह धूम सुकेत अयान, भयो कमठाचर को सुर आन॥११॥ करै नभ गौन लखे तुम धीर, जू पूरब बैर बिचार गहीर। करो उपसर्ग भयानक घोर, चली बहु तीक्ष्ण पवन झकोर ॥१२॥ रहो दशहू दिश में तम छाय, लगी बहु अग्नि लखी नहिं जाय। सुरुंडन के बिन मुण्ड दिखाय,पडे जल मूसल धार अथाय॥ १३॥तब पद्मावती कंत धनंद, नये युग आय तहांजिनचंद। भगो तब रंक सुदेखतहाल, लहो तब केवल ज्ञान विशाल ॥१४॥ दियो उपदेश महाहितकार सुभव्यन बोधि सम्मेद पधार।सु सुब्रण भद्र जू कूट प्रसिद्ध,वरी शिवनारि लही वसुऋद्ध॥१५॥ जजूं तुम चर्णदोऊ कर जोर। प्रभु लखिये अबही मम ओर। कहैं वखतावर रत्न बनाय,जिनेश हमें भव पार लगाय ॥१६॥

घत्ता छंद–जय पारस देवं सुर कृत सेवं बंदित चरण सुनागपती। करुणा के धारी पर उपकारी शिव सुख कारी कर्म हती ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महाऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ आशीर्वादः–छंद मद अवलिप्त। जो पूजै मन लाय भव्य पारस प्रभु नित ही। ताके दुख सब जांय भीतिव्यापै नहिं कितही। सुख संपति अधिकाय पुत्र मित्रादिक सारे। अनुक्रम सों शिव लहे रतन इम कहे पकारे ॥१८॥ त्या

२४ अथश्रीवर्द्धमानजिन पूजा लिख्यते।

बखतावरसिंहकृत। अडिल

स्थापना-सिद्धारथ है तात मात त्रिशिला सही, अच्युत तैं चय आय नगर कुंडिन कही।
हाथ सात परमान अंक है मृगपती, महावीर जिनदेव तिष्ठ करुणा पती॥ १॥

ॐ ह्रीं श्रीमहाबार जिनेंद्र अत्रावतराऽवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री महाबीर जिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीमहाबीर जिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधी करणम्॥

अथ अष्टक। छंद त्रिभंगी।

जल-क्षीरोदधिवारं निर्मल सारं गंध अपारं भर धारं। अति ही शुचिकारं तृषा निवारं तुम पद ढारं दुःख हारं। श्रीबीर कुमारं शिव दातारं पाप निवारं सुख कारं। सुंदर आकारं ज्ञान भंडारं जग हितकारं जित मारं॥ ओं ह्रीं श्री महाबीर जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरा रोग विनाशनोय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन–चंदन मन भावन ताप नसावन सौरभ पावन भरझारी । करपूज तिहारी आनंद कारी पाप निवारी गुण कारी । श्रीबीर कुमारं शिवदातारं पाप निवारं सुखकारं । सुंदर आकारं ज्ञान भंडारं जग हितकारं जितमारं । ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय गर्भ,जन्म,तप,ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षत–अक्षत शुभ सारं खेत सुधारं हेम सुथारं मांह भरे । तुम चरण चढाऊं पुंज रचाऊं शिव सुख पाऊं हर्ष वरे । श्री वीरकुमारं शिव दातारं पाप निवारं सुखकारं । सुंदर आकारं ज्ञान भंडारं जग हितकारं जितमारं ॥ ॐ ह्रीं श्रीमहाबीर जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच-कल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पुष्प–शुभ षट् ऋतु केरे सुमन उजेरे अलिगण नेरे गुंज करे । ले पूजूं ध्याऊं मन हरषाऊं सीस नवाऊं काम जरे । श्रीबीर कुमारं शिवदातारं पाप निवारं सुखकारं । सुंदर आकारं ज्ञान भंडारं जग हितकारं जितमारं । ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय काम वाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

नैवेद्य–चरु घृत में कीनी रसमें भीनी पुष्ट नवीनी भर थारी । चरणन ढिग लाउं
न ाऊं

भंडारं जग हितकारं जितमारं । ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण चकल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दीप-मणि दीप प्रकाशे ध्वांत विनाशे निज हित भाषे कांति लसे। तल चर्ण चढाऊं मोहनसाऊं ज्ञान सुपाऊं सुख बिलसे । श्रीवीर कुमारं शिवदातारं पाप निवारं सुखकारं । सुंदर आकारं ज्ञान भंडारं जग हितकारं जितमारं । ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

धूप-कृष्णागर चूरं लौंग कपूरं परिमल भूरं खेवत हूं । तिस धूम उडाये अलिगण आये कर्म नसाये सेवत हूं ॥ श्रीबीर कुमारं शिवदातारं पाप निवारं सुख कारं । सुंदर आकारं ज्ञान भंडारं जग हितकारं जितमारं । ओं ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

फल-बादाम छुहारी लौंग सुपारी फल सहकारी मैं लायो । भर हाटक थारी तुम ढिग धारी शिव सुख कारी गुण गायो । श्री बीरकुमारं शिव दातारं पाप निवारं सुखकारं । सुंदर आकारं ज्ञान भंडारं जग हितकारं जितमारं । ओं ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्घ-जल गंध अपारं अक्षत सारं सुमन सुधारं चरुजुबरा । ले दीपं धूपं फल बहु रूपं स्वर्ण रकाबी

अर्घ करा ॥ श्री वीर कुमारं शिवदातारं पाप निवारं सुखकारं । सुंदर आकारं ज्ञान भंडारं जग हितकारं जितमारं । ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

(अथ पंच कल्याणक) छन्दलक्ष्मीधरा।

गर्भ-षाढसित छट्ठ को गर्भ मातासही, आइयो त्याग के स्वर्ग सोलं कही । होत आकाशतें रत्न वरषाघनी, देव देवी सबै सेव माता ठनी । ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेंद्राय आषाढ शुक्ल षष्ठी गर्भ कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

जन्म-चैत सित त्रोदसी जन्म लीनो महा । नारकी दो घडी सर्व साता लहा । मेरु पै इंद्र नागेंद्र ने पूजियो, मैं जजूं अर्घ ले वेग त्यारीजियो । ॐ ह्रीं श्रीमहाबीर जिनेंद्राय चैत्र शुक्ल त्रयोदशी जन्म कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

तप-मार्गशीर्षा दसैं स्याम की आइयो, तादिना आप चिद्रूप को ध्याइयो । धार षष्ठं महा दान गोक्षीर को, लीजियो आपने मैं जजूं वीर को । ॐ ह्रीं श्रीमहाबीर जिनेन्द्राय मार्गशिर कृष्ण दशमी तपः कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञान-घात चौ कर्म को ज्ञान पायो म ।

धर्म ही, मैं जजूं अर्घ ले मेटिये कर्म ही। ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेंद्राय वैशाख शुक्ल दशमी ज्ञान कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

निर्वाण–नग्रपावापुरी सार उद्यान में, योग निरोधियो ठान के ध्यान में। मावसी कातकी भ्रमर की लीजिये, सिद्ध राजा भये बास मो दीजिये। ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेंद्राय कार्तिक कृष्ण अमावस्या मोक्ष कल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला। दोहा।

महा अर्घ–सकल सुरेश नरेश अर, किन्नरेश फनयेश। ते सब बंदित चरणयुग, बंदूं बीर जिनेश॥

छन्द पद्धडी–जयजय जयजय श्रीबीर राज, भवसागर में अद्भुत जहाज। जय पुष्पोत्तर तजके बिमान, त्रिशिला माता की कूष आन॥ २ सिद्धारथ तात बडे सुजान, जय कुंडिनपुर नगरी महान। तिनके घर आप भये जिनंद, हरिवंश व्योम ऊगे सुचंद॥ ३॥ तब अमरन के आसन चलाय, सिर मुकुट नयत अचरज लहाय। कल्पन घर घन घंटा बजाय, ज्योतिष घर के हरिनाद थाय॥ ४॥ भवनालय संग बजे अपार, व्यन्तर के मंदिर ढोल सार। इन चिह्न थकी तुम जन्म जान, इंद्रादिक आये हरषमान॥५॥ कुंडिन पुर तैं गिरिमेरु जाय, इक सहस वसु कलसे ढुराय। तब मघवा स्तुतिजु कर बनाय, तुम नाम धरो जिन बीर राय॥६॥ शचि पौंछ कियो शृंगार येम, सोहत भूषण को कलप

जेम। फिर लाय तात के सदन इंद्र, लख माता हरषी बाल चंद्र ॥ ७ ॥ तांडव नाटक कीनो सुरिंद, दिखलायो जिन दश भव अमंद। पहिले भवनांहर रूप धार, दूजे सौ धर्म सुरगं मझार।८। बिजयारध में षग धीश राय, कनक प्रज्वल नामा लहाय। चौथे भवलांतव नाक थान, पंचम हरिषेन नरिंद जान ॥ ९ ॥ षष्ठम महा शुक्र बिषै जुदेव, सप्तम चक्री प्रिय मित्र येव। सहस्रार माह अष्टम प्रजाय, तहां ते चय उपजे नंदराय ॥ १० ॥ तप कर अच्युत थानक सुरिंद, तहां ते चय आप भये जिनंद। यह भव दिखलाये नृत्य थान, सब जीव भये आनंद खान ॥ ११ ॥ पितमात पूज हरिकर पयान, जिन बालक बय धारे सुजान। यक देव परीक्षा काज आय, तिन नाग रूप लीनो बनाय ॥ १२ ॥ क्रीडा तरु खेलत संग कुमार, सब भाग गये तिस तन निहार। प्रभु ततक्षिन ताको मद उतार, क्रीडा कर संगम देव हार ॥ १३ ॥ तब नाम दियो महावीर शूर, तिनथानक पहुंचो हरष पूर। युग मुनिवर नभ में गमन ठान, तिन के संशय उपजो महान ॥ १४ ॥ तुम पीठ जबै देखी दयाल, चित को विभ्रम सबही सुटाल। तब नाम दियो सन्मति उदार, इम तीस वरषके भये कुमार।१५। लख पूरब भव वैराग्य भाय, सिद्धारथ बन दीक्षा लहाय। तप द्वादश कर बहुक्षीण काय, चव घाति हान केवल लहाय ॥१६॥ ग्यारह गणधर गोतम सु आद, मुनि सहस चतुर्दश तज प्रमाद। अजया व्रत चंदन आदि धार सोहे सब छत्तिस सहस धार ॥ १७ ॥ यक लक्ष श्रावक अतिपुनीत, त्रिगुनी श्रावकनी धर्म नीत। इम

पायो सब कर्महान। तहां सिद्ध भये निर्भय निरास, सो सोहत है अद्भुत निवास ॥ १९ ॥ तुमरो ही मारग भव्य पाय, सो उतरंगे भवपार जाय। अबलो तुमरो तीरथ जिनंद, सो बर्तंत है आनंद कंद ॥२०॥ हम याचत हैं तुम पै दयाल, दुख दारिदटार करो निहाल। बखतावर रतन कहै बनाय, शिव सुख दीजे महावीर राय ॥ २१ ॥

घत्ता छन्द—जय त्रिशिला प्यारे जग उजियारे भवि गण तारे मोक्ष दई। लख चरण तुम्हारे रविशशि हारे पूजन हारे शर्म लई ॥ २२ ॥ ॐ ह्रीं श्रीमहाबीर जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महाऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ आशीर्वादः दोहा—बीर महाअतिबीरजी, सन्मति वर्द्ध सुजान। पंचनाम पूजें सदा, पावें पद निर्वान ॥

इत्याशीर्वादः। इति श्रीमहाबीर जिन पूजा संपूर्णा ॥ २४ ॥

समाप्त—अर्घ—छंद सुंदरी—ऋषभ जिनको आदि मनाय कै, अंत में महाबीर सुध्याय कै।

चतुर्विंश जिनगुणगाय कै, जजत हूं मैं अर्घ चढायकै ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीऋषभ देवादि महावीर पर्यंत चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यः समाप्त्यर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ आशीर्वादः। छंद अडिल—जे चौबीस जिनेंद्रतनी पूजा करें, इंद्रादिक पदपाय चक्रि पद को धरें। कीरति है सुफराय मान जगमें सही, अनुक्रम तें शिव जाय सर्व बहु बिधि लही ॥ २ ॥ इत्याशीर्वादः

दोहा–संवत अष्टादश शतक, और वानवें जान। फागनकारी सप्तमी, भौमवार पहचान।
॥ १ ॥ मध्य देश मंडल विषै, दिल्ली शहर अनूप। बादशाह अकबर नसल नमन करें बहु भूप ॥ २ ॥
चार वर्ण जहां बसत हैं, कोइ न दुःख स्वरूप। शैली श्रावक धर्मकी, लसत महा सुख कूप॥ ३ ॥
नाना विधि रचना सहित, सोहत जिन आगार। चरचा अध्यातम तनी, करैं भव्य हित धार ॥ ४ ॥
शैली में सज्जन भले, सुगनचंद गुण खान। पुत्र सुगिरधर लाल तसु, ज्ञानवान जसवान ॥ ५ ॥

सवैया। तिसही शैली मंझार पंडित विवेक धार गिरधारी लाल सार स्नेही लालजानिये।
कानजीमल्ल आन जै जै मल शीलवान गुपालराय साहिबसिंह सज्जन पहचानिये। २। बाल बुद्धि
को विचार बखतावर नाम धार रतनलाल अग्रवाल न्यात जिस मानिये॥ ३ ॥ तानैं रचो पाठ जोग
वांचो सब सुधी लोग भूल चूक शोधकर क्षमा उर आनिये ॥ ४ ॥

दोहा–मित्र युगल मिलके कियो, मन में यही विचार। शुभ कारण पूजा रची, कछु पिंगल
अनुसार ॥ ५ ॥ अलंकार जानूं नहीं, नहिं लौकिक सुज्ञान। भक्ति एक उरधार के, रचो पाठ हितमान
॥ ६ ॥ बखतावरसिंह सीखियो, कछु भाषा की चाल। तातें पाठ बनाइयो, बुधि माफिक अघ टाल ॥७॥

कुंडालियां छंद–भ्राता रतन सु लाल को नाम रामपरसाद। तिन तें रतन जो सीखियो कछू
छंद मरजाद। कछू छन्द मरजाद आदि अक्षर सिखलाये। विद्या कछू पढाय बहुत उपकार कराये।
क[illegible]

Digambra Jain Religious Grantha Series No. 5.

इति४चौबीसीपूजा

संवत् १९६७ । सन् १९१० । वीर संवत् २४३६

मूल्य १०) रुपया
मूल्य १०) रुपया

बाबू ज्ञानचन्द्र जैनी लाहौर निवासी ने छपवाया।